॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

अङ्गुत्तरनिकायो

पञ्चकनिपातपाळि

१. पठमपण्णासकं

१. सेखबलवग्गो

१. संखित्तसुत्तं

१. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''भिक्खवो''ति। ''भदन्ते''ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –

''पञ्चिमानि, भिक्खवे, सेखबलानि [सेक्खबलानि (क॰)]। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, हिरीबलं [हिरिबलं (सी॰ पी॰)], ओत्तप्पबलं, वीरियबलं [विरियबलं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)], पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च सेखबलानि।

''तस्मातिह, भिक्खवे, एवं सिक्खितब्बं – 'सद्धाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, हिरीबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, ओत्तप्पबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, वीरियबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, पञ्ञाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेना'ति। एवञ्हि वो, भिक्खवे, सिक्खितब्ब''न्ति। इदमवोच भगवा। अत्तमना ते भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति। पठमं।

२. वित्थतसुत्तं

२. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, सेखबलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, हिरीबलं, ओत्तप्पबलं, वीरियबलं, पञ्ञाबलं। कतमञ्च, भिक्खवे, सद्धाबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको सद्धो होति, सद्दहति तथागतस्स बोधिं – 'इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सद्धाबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, हिरीबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको हिरिमा होति, हिरीयति कायदुच्चरितेन वचीदुच्चरितेन मनोदुच्चरितेन, हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया। इदं वुच्चति, भिक्खवे, हिरीबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, ओत्तप्पबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको ओत्तप्पी होति, ओत्तप्पति कायदुच्चरितेन वचीदुच्चरितेन मनोदुच्चरितेन, ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया। इदं वुच्चति, भिक्खवे, ओत्तप्पबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, वीरियबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय,

कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु। इदं वुच्चति, भिक्खवे, वीरियबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, पञ्ञाबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको पञ्ञवा होति उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। इदं वुच्चति, भिक्खवे, पञ्ञाबलं। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च सेखबलानि।

''तस्मातिह, भिक्खवे, एवं सिक्खितब्बं – 'सद्धाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, हिरीबलेन... ओत्तप्पबलेन ... वीरियबलेन... पञ्ञाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेना'ति। एवञ्हि खो, भिक्खवे, सिक्खितब्ब''न्ति। दुतियं।

३. दुक्खसुत्तं

३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठेव धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं सउपायासं सपरिळाहं, कायस्स च भेदा परं मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अस्सद्धो होति, अहिरिको होति, अनोत्तप्पी होति, कुसीतो होति, दुप्पञ्ञो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठेव धम्मे दुक्खं विहरति सविघातं सउपायासं सपरिळाहं, कायस्स च भेदा परं मरणा दुग्गति पाटिकङ्खा।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठेव धम्मे सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स च भेदा परं मरणा सुगति पाटिकङ्खा। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, हिरीमा होति, ओत्तप्पी होति, आरद्धवीरियो होति, पञ्ञवा होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु दिट्ठेव धम्मे सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं, कायस्स च भेदा परं मरणा सुगति पाटिकङ्खा''ति। ततियं।

४. यथाभतसुत्तं

४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अस्सद्धो होति, अहिरिको होति, अनोत्तप्पी होति, कुसीतो होति, दुप्पञ्ञो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, हिरीमा होति, ओत्तप्पी होति, आरद्धवीरियो होति, पञ्ञवा होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति। चतुत्थं।

५. सिक्खासुत्तं

५. ''यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति, तस्स दिट्ठेव [दिट्ठे चेव (सी॰)] धम्मे पञ्च सहधम्मिका वादानुपाता [वादानुवादा (अ॰ नि॰ ८.१२; अ॰ नि॰ ३.५८)] गारय्हा ठाना आगच्छन्ति। कतमे पञ्च? सद्धापि नाम ते नाहोसि कुसलेसु धम्मेसु, हिरीपि नाम ते नाहोसि कुसलेसु धम्मेसु, ओत्तप्पम्पि नाम ते नाहोसि कुसलेसु धम्मेसु, वीरियम्पि नाम ते नाहोसि कुसलेसु धम्मेसु, पञ्ञापि नाम ते नाहोसि कुसलेसु धम्मेसु। यो हि

कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति, तस्स दिट्ठेव धम्मे इमे पञ्च सहधम्मिका वादानुपाता गारय्हा ठाना आगच्छन्ति।

''यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा सहापि दुक्खेन सहापि दोमनस्सेन अस्सुमुखो [अस्सुमुखोपि (स्या०)] रुदमानो परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरति, तस्स दिट्ठेव धम्मे पञ्च सहधम्मिका पासंसा ठाना [पासंसं ठानं (स्या०)] आगच्छन्ति। कतमे पञ्च? सद्धापि नाम ते अहोसि कुसलेसु धम्मेसु, हिरीपि नाम ते अहोसि कुसलेसु धम्मेसु, ओत्तप्पम्पि नाम ते अहोसि कुसलेसु धम्मेसु, वीरियम्पि नाम ते अहोसि कुसलेसु धम्मेसु, पञ्ञापि नाम ते अहोसि कुसलेसु धम्मेसु। यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा सहापि दुक्खेन सहापि दोमनस्सेन अस्सुमुखो रुदमानो परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरति, तस्स दिट्ठेव धम्मे इमे पञ्च सहधम्मिका पासंसा ठाना आगच्छन्ती''ति। पञ्चमं।

६. समापत्तिसुत्तं

६. ''न ताव, भिक्खवे, अकुसलस्स समापत्ति होति याव सद्धा पच्चुपट्ठिता होति कुसलेसु धम्मेसु। यतो च खो, भिक्खवे, सद्धा अन्तरहिता होति, अस्सद्धियं परियुट्ठाय तिट्ठति; अथ अकुसलस्स समापत्ति होति।

''न ताव, भिक्खवे, अकुसलस्स समापत्ति होति याव हिरी पच्चुपट्ठिता होति कुसलेसु धम्मेसु। यतो च खो, भिक्खवे, हिरी अन्तरहिता होति, अहिरिकं परियुट्ठाय तिट्ठति; अथ अकुसलस्स समापत्ति होति।

''न ताव, भिक्खवे, अकुसलस्स समापत्ति होति याव ओत्तप्पं पच्चुपट्ठितं होति कुसलेसु धम्मेसु। यतो च खो, भिक्खवे, ओत्तप्पं अन्तरहितं होति, अनोत्तप्पं परियुट्ठाय तिट्ठति; अथ अकुसलस्स समापत्ति होति।

''न ताव, भिक्खवे, अकुसलस्स समापत्ति होति याव वीरियं पच्चुपट्ठितं होति कुसलेसु धम्मेसु। यतो च खो, भिक्खवे, वीरियं अन्तरहितं होति, कोसज्जं परियुट्ठाय तिट्ठति; अथ अकुसलस्स समापत्ति होति।

''न ताव, भिक्खवे, अकुसलस्स समापत्ति होति याव पञ्ञा पच्चुपट्ठिता होति कुसलेसु धम्मेसु। यतो च खो, भिक्खवे, पञ्ञा अन्तरहिता होति, दुप्पञ्ञा [दुप्पञ्ञं (क०)] परियुट्ठाय तिट्ठति; अथ अकुसलस्स समापत्ति होती''ति। छट्ठं।

७. कामसुत्तं

७. ''येभुय्येन, भिक्खवे, सत्ता कामेसु लळिता [पलाळिता (सी०)]। असितब्याभङ्गिं [असितब्याभङ्गि चेपि (?)], भिक्खवे, कुलपुत्तो ओहाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो होति, 'सद्धापब्बजितो कुलपुत्तो'ति अलं वचनाय। तं किस्स हेतु? लब्भा [लब्भा हि (स्या०)], भिक्खवे, योब्बनेन कामा ते च खो यादिसा वा तादिसा वा। ये च, भिक्खवे, हीना कामा ये च मज्झिमा कामा ये च पणीता कामा, सब्बे कामा 'कामा'त्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति। सेय्यथापि, भिक्खवे, दहरो कुमारो मन्दो उत्तानसेय्यको धातिया पमादमन्वाय कट्ठं वा कठलं [कथलं (क०)] वा मुखे आहरेय्य। तमेनं धाति सीघं सीघं [सीघसीघं (सी०)] मनसि करेय्य; सीघं सीघं मनसि करित्वा सीघं सीघं आहरेय्य। नो चे सक्कुणेय्य सीघं सीघं आहरितुं, वामेन हत्थेन सीसं परिग्गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन वङ्कङ्गुलिं करित्वा सलोहितम्पि आहरेय्य। तं किस्स हेतु? 'अत्थेसा, भिक्खवे, कुमारस्स विहेसा; नेसा नत्थी'ति वदामि। करणीयञ्च खो एतं [एवं (क०)], भिक्खवे, धातिया अत्थकामाय हितेसिनिया

अनुकम्पिकाय, अनुकम्पं उपादाय। यतो च खो, भिक्खवे, सो कुमारो वुद्धो होति अलंपञ्ञो, अनपेक्खा दानि [अनपेक्खा पन (सी॰ स्या॰ कं॰)], भिक्खवे, धाति तस्मिं कुमारे होति – 'अत्तगुत्तो दानि कुमारो नालं पमादाया'ति।

"एवमेवं खो, भिक्खवे, यावकीवञ्च भिक्खुनो सद्धाय अकतं होति कुसलेसु धम्मेसु, हिरिया अकतं होति कुसलेसु धम्मेसु, ओत्तप्पेन अकतं होति कुसलेसु धम्मेसु, वीरियेन अकतं होति कुसलेसु धम्मेसु, पञ्ञाय अकतं होति कुसलेसु धम्मेसु, अनुरक्खितब्बो ताव मे सो, भिक्खवे, भिक्खु होति। यतो च खो, भिक्खवे, भिक्खुनो सद्धाय कतं होति कुसलेसु धम्मेसु, हिरिया कतं होति कुसलेसु धम्मेसु, ओत्तप्पेन कतं होति कुसलेसु धम्मेसु, वीरियेन कतं होति कुसलेसु धम्मेसु, पञ्ञाय कतं होति कुसलेसु धम्मेसु, अनपेक्खो दानाहं, भिक्खवे [पनाहं (सी॰ स्या॰ कं॰)], तस्मिं भिक्खुस्मिं होमि – 'अत्तगुत्तो दानि भिक्खु नालं पमादाया'"ति। सत्तमं।

८. चवनसुत्तं

८. "पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। कतमेहि पञ्चहि? असद्धो, भिक्खवे, भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। अहिरिको, भिक्खवे, भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। अनोत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। कुसीतो, भिक्खवे, भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। दुप्पञ्ञो, भिक्खवे, भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे।

"पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो, भिक्खवे, भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। हिरीमा, भिक्खवे, भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। ओत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। आरद्धवीरियो, भिक्खवे, भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। पञ्ञवा, भिक्खवे, भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे"ति। अट्ठमं।

९. पठमअगारवसुत्तं

९. "पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। कतमेहि पञ्चहि? अस्सद्धो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। अहिरिको, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। अनोत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। कुसीतो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। दुप्पञ्ञो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति, नप्पतिट्ठाति सद्धम्मे।

"पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। हिरिमा, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। ओत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। आरद्धवीरियो, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। पञ्ञवा, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति, पतिट्ठाति सद्धम्मे। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो न चवति,

पतिट्ठाति सद्धम्मे''ति। नवमं।

१०. दुतियअगारवसुत्तं

१०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। कतमेहि पञ्चहि? अस्सद्धो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। अहिरिको, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। अनोत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। कुसीतो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। दुप्पञ्ञो, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो अभब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो भब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो भब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। हिरीमा, भिक्खवे, भिक्खु...पे०... ओत्तप्पी, भिक्खवे, भिक्खु...पे०... आरद्धवीरियो, भिक्खवे, भिक्खु...पे०... पञ्ञवा, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो भब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो भब्बो इमस्मिं धम्मविनये वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जितु''न्ति। दसमं।

सेखबलवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

संखित्तं वित्थतं दुक्खा, भतं सिक्खाय पञ्चमं।
समापत्ति च कामेसु, चवना द्वे अगारवाति॥

२. बलवग्गो

१. अननुस्सुतसुत्तं

११. ''पुब्बाहं, भिक्खवे, अननुस्सुतेसु धम्मेसु अभिञ्ञावोसानपारमिप्पत्तो पटिजानामि। पञ्चिमानि, भिक्खवे, तथागतस्स तथागतबलानि, येहि बलेहि समन्नागतो तथागतो आसभं ठानं पटिजानाति, परिसासु सीहनादं नदति, ब्रह्मचक्कं पवत्तेति। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, हिरीबलं, ओत्तप्पबलं, वीरियबलं, पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च तथागतस्स तथागतबलानि येहि बलेहि समन्नागतो तथागतो आसभं ठानं पटिजानाति, परिसासु सीहनादं नदति, ब्रह्मचक्कं पवत्तेती''ति। पठमं।

२. कूटसुत्तं

१२. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, सेखबलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, हिरीबलं, ओत्तप्पबलं, वीरियबलं, पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च सेखबलानि। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं सेखबलानं एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं पञ्ञाबलं।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, कूटागारस्स एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं कूटं। एवमेवं खो, भिक्खवे, इमेसं पञ्चन्नं सेखबलानं एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं पञ्ञाबलं।

''तस्मातिह, भिक्खवे, एवं सिक्खितब्बं – 'सद्धाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेन, हिरीबलेन... ओत्तप्पबलेन... वीरियबलेन... पञ्ञाबलेन समन्नागता भविस्साम सेखबलेना'ति। एवञ्हि वो, भिक्खवे, सिक्खितब्ब''न्ति। दुतियं।

३. संखित्तसुत्तं

१३. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, बलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च बलानी''ति। ततियं।

४. वित्थतसुत्तं

१४. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, बलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, सद्धाबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको सद्धो होति, सद्दहति तथागतस्स बोधिं – 'इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सद्धाबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, वीरियबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय, कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु। इदं वुच्चति, भिक्खवे, वीरियबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, सतिबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको सतिमा होति परमेन सतिनेपक्केन समन्नागतो, चिरकतम्पि चिरभासितम्पि सरिता अनुस्सरिता। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सतिबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, समाधिबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति; वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति; पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति यं तं अरिया आचिक्खन्ति – 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी'ति ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति; सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति। इदं वुच्चति, भिक्खवे, समाधिबलं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, पञ्ञाबलं? इध, भिक्खवे, अरियसावको पञ्ञवा होति उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो

अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। इदं वुच्चति, भिक्खवे, पञ्ञाबलं। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च बलानी''ति। चतुत्थं।

५. दट्ठब्बसुत्तं

१५. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, बलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं। कत्थ च, भिक्खवे, सद्धाबलं दट्ठब्बं? चतूसु सोतापत्तियङ्गेसु। एत्थ सद्धाबलं दट्ठब्बं। कत्थ च, भिक्खवे, वीरियबलं दट्ठब्बं? चतूसु सम्मप्पधानेसु। एत्थ वीरियबलं दट्ठब्बं। कत्थ च, भिक्खवे, सतिबलं दट्ठब्बं? चतूसु सतिपट्ठानेसु। एत्थ सतिबलं दट्ठब्बं। कत्थ च, भिक्खवे, समाधिबलं दट्ठब्बं? चतूसु झानेसु। एत्थ समाधिबलं दट्ठब्बं। कत्थ च, भिक्खवे, पञ्ञाबलं दट्ठब्बं? चतूसु अरियसच्चेसु। एत्थ पञ्ञाबलं दट्ठब्बं। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च बलानी''ति। पञ्चमं।

६. पुनकूटसुत्तं

१६. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, बलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च बलानि। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं बलानं एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं पञ्ञाबलं। सेय्यथापि, भिक्खवे, कूटागारस्स एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं कूटं। एवमेवं खो, भिक्खवे, इमेसं पञ्चन्नं बलानं एतं अग्गं एतं सङ्गाहिकं एतं सङ्घातनियं, यदिदं पञ्ञाबल''न्ति। छट्ठं।

७. पठमहितसुत्तं

१७. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अत्तहिताय पटिपन्नो होति, नो परहिताय। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना सीलसम्पन्नो होति, नो परं सीलसम्पदाय समादपेति; अत्तना समाधिसम्पन्नो होति, नो परं समाधिसम्पदाय समादपेति; अत्तना पञ्ञासम्पन्नो होति, नो परं पञ्ञासम्पदाय समादपेति; अत्तना विमुत्तिसम्पन्नो होति, नो परं विमुत्तिसम्पदाय समादपेति; अत्तना विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, नो परं विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय समादपेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु अत्तहिताय पटिपन्नो होति, नो परहिताया''ति। सत्तमं।

८. दुतियहितसुत्तं

१८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु परहिताय पटिपन्नो होति, नो अत्तहिताय। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना न सीलसम्पन्नो होति, परं सीलसम्पदाय समादपेति; अत्तना न समाधिसम्पन्नो होति, परं समाधिसम्पदाय समादपेति; अत्तना न पञ्ञासम्पन्नो होति, परं पञ्ञासम्पदाय समादपेति; अत्तना न विमुत्तिसम्पन्नो होति, परं विमुत्तिसम्पदाय समादपेति; अत्तना न विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, परं विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय समादपेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु परहिताय पटिपन्नो होति, नो अत्तहिताया''ति। अट्ठमं।

९. ततियहितसुत्तं

१९. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नेव अत्तहिताय पटिपन्नो होति, नो परहिताय। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना न सीलसम्पन्नो होति, नो परं सीलसम्पदाय समादपेति; अत्तना न समाधिसम्पन्नो होति, नो

परं समाधिसम्पदाय समादपेति; अत्तना न पञ्ञासम्पन्नो होति, नो परं पञ्ञासम्पदाय समादपेति; अत्तना न विमुत्तिसम्पन्नो होति, नो परं विमुत्तिसम्पदाय समादपेति; अत्तना न विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, नो परं विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय समादपेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नेव अत्तहिताय पटिपन्नो होति, नो परहिताया''ति। नवमं।

१०. चतुत्थहितसुत्तं

२०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अत्तहिताय च पटिपन्नो होति परहिताय च। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना च सीलसम्पन्नो होति, परञ्च सीलसम्पदाय समादपेति; अत्तना च समाधिसम्पन्नो होति, परञ्च समाधिसम्पदाय समादपेति, अत्तना च पञ्ञासम्पन्नो होति, परञ्च पञ्ञासम्पदाय समादपेति; अत्तना च विमुत्तिसम्पन्नो होति, परञ्च विमुत्तिसम्पदाय समादपेति; अत्तना च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, परञ्च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय समादपेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अत्तहिताय च पटिपन्नो होति परहिताय चा''ति। दसमं।

बलवग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

अननुस्सुतकूटञ्च, संखित्तं वित्थतेन च।
दट्ठब्बञ्च पुन कूटं, चत्तारोपि हितेन चाति॥

३. पञ्चङ्गिकवग्गो

१. पठमअगारवसुत्तं

२१. ''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो असभागवुत्तिको 'सब्रह्मचारीसु आभिसमाचारिकं धम्मं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'आभिसमाचारिकं धम्मं अपरिपूरेत्वा सेखं [सेक्खं (क॰)] धम्मं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'सेखं धम्मं अपरिपूरेत्वा सीलानि परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'सीलानि अपरिपूरेत्वा सम्मादिट्ठिं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'सम्मादिट्ठिं अपरिपूरेत्वा सम्मासमाधिं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति।

''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो सभागवुत्तिको 'सब्रह्मचारीसु आभिसमाचारिकं धम्मं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'आभिसमाचारिकं धम्मं परिपूरेत्वा सेखं धम्मं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'सेखं धम्मं परिपूरेत्वा सीलानि परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'सीलानि परिपूरेत्वा सम्मादिट्ठिं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'सम्मादिट्ठिं परिपूरेत्वा सम्मासमाधिं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जती''ति। पठमं।

२. दुतियअगारवसुत्तं

२२. ''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो असभागवुत्तिको 'सब्रह्मचारीसु आभिसमाचारिकं धम्मं

परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'आभिसमाचारिकं धम्मं अपरिपूरेत्वा सेखं धम्मं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'सेखं धम्मं अपरिपूरेत्वा सीलक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'सीलक्खन्धं अपरिपूरेत्वा समाधिक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति। 'समाधिक्खन्धं अपरिपूरेत्वा पञ्ञाक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति।

''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु सगारवो सप्पतिस्सो सभागवुत्तिको 'सब्रह्मचारीसु आभिसमाचारिकं धम्मं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'आभिसमाचारिकं धम्मं परिपूरेत्वा सेखं धम्मं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। सेखं धम्मं परिपूरेत्वा सीलक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'सीलक्खन्धं परिपूरेत्वा समाधिक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जति। 'समाधिक्खन्धं परिपूरेत्वा पञ्ञाक्खन्धं परिपूरेस्सती'ति ठानमेतं विज्जती''ति। दुतियं।

३. उपक्किलेससुत्तं

२३. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, जातरूपस्स उपक्किलेसा, येहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं जातरूपं न चेव मुदु होति न च कम्मनियं न च पभस्सरं पभङ्गु च न च सम्मा उपेति कम्माय। कतमे पञ्च? अयो, लोहं, तिपु, सीसं, सज्झं [सज्झु (सी॰)] – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च जातरूपस्स उपक्किलेसा, येहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं जातरूपं न चेव मुदु होति न च कम्मनियं न च पभस्सरं पभङ्गु च न च सम्मा उपेति कम्माय। यतो च खो, भिक्खवे, जातरूपं इमेहि पञ्चहि उपक्किलेसेहि विमुत्तं [विप्पमुत्तं (सी॰)] होति, तं होति जातरूपं मुदु च कम्मनियञ्च पभस्सरञ्च न च पभङ्गु सम्मा उपेति कम्माय। यस्सा यस्सा च [यस्स कस्सचि (स्या॰ पी॰)] पिळन्धनविकतिया आकङ्खति – यदि मुद्दिकाय यदि कुण्डलाय यदि गीवेय्यकाय [गीवेय्यकेन (स्या॰ कं॰ क॰, अ॰ नि॰ ३.१०२)] यदि सुवण्णमालाय – तञ्चस्स अत्थं अनुभोति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे चित्तस्स उपक्किलेसा, येहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं चित्तं न चेव मुदु होति न च कम्मनियं न च पभस्सरं पभङ्गु च न च सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। कतमे पञ्च? कामच्छन्दो, ब्यापादो, थिनमिद्धं [थीनमिद्धं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)], उद्धच्चकुक्कुच्चं, विचिकिच्छा – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च चित्तस्स उपक्किलेसा येहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं चित्तं न चेव मुदु होति न च कम्मनियं न च पभस्सरं पभङ्गु च न च सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। यतो च खो, भिक्खवे, चित्तं इमेहि पञ्चहि उपक्किलेसेहि विमुत्तं होति, तं होति चित्तं मुदु च कम्मनियञ्च पभस्सरञ्च न च पभङ्गु सम्मा समाधियति आसवानं खयाय। यस्स यस्स च अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेति अभिञ्ञासच्छिकिरियाय तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभवेय्यं – एकोपि हुत्वा बहुधा अस्सं, बहुधापि हुत्वा एको अस्सं; आविभावं, तिरोभावं; तिरोकुट्टं तिरोपाकारं तिरोपब्बतं असज्जमानो गच्छेय्यं, सेय्यथापि आकासे; पथवियापि उम्मुज्जनिमुज्जं करेय्यं, सेय्यथापि उदके; उदकेपि अभिज्जमानो गच्छेय्यं, सेय्यथापि पथवियं; आकासेपि पल्लङ्केन कमेय्यं, सेय्यथापि पक्खी सकुणो; इमेपि चन्दिमसूरिये [चन्दिमसुरिये (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] एवंमहिद्धिके एवंमहानुभावे पाणिना परिमसेय्यं [परामसेय्यं (क॰)] परिमज्जेय्यं याव ब्रह्मलोकापि कायेन वसं वत्तेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'दिब्बाय सोतधातुया विसुद्धाय अतिक्कन्तमानुसिकाय उभो सद्दे सुणेय्यं – दिब्बे च मानुसे च ये दूरे सन्तिके चा'ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च पजानेय्यं – सरागं वा चित्तं सरागं चित्तन्ति पजानेय्यं, वीतरागं वा चित्तं वीतरागं चित्तन्ति पजानेय्यं, सदोसं वा चित्तं सदोसं चित्तन्ति पजानेय्यं, वीतदोसं वा चित्तं वीतदोसं चित्तन्ति पजानेय्यं, समोहं वा चित्तं समोहं चित्तन्ति पजानेय्यं, वीतमोहं वा चित्तं वीतमोहं चित्तन्ति पजानेय्यं, संखित्तं वा चित्तं संखित्तं चित्तन्ति पजानेय्यं, विक्खित्तं वा चित्तं विक्खित्तं चित्तन्ति पजानेय्यं, महग्गतं वा चित्तं महग्गतं चित्तन्ति पजानेय्यं, अमहग्गतं वा चित्तं अमहग्गतं चित्तन्ति पजानेय्यं, सउत्तरं वा चित्तं सउत्तरं चित्तन्ति पजानेय्यं, अनुत्तरं वा चित्तं अनुत्तरं चित्तन्ति पजानेय्यं, समाहितं वा चित्तं समाहितं चित्तन्ति पजानेय्यं, असमाहितं वा चित्तं असमाहितं चित्तन्ति पजानेय्यं, विमुत्तं वा चित्तं विमुत्तं चित्तन्ति पजानेय्यं, अविमुत्तं वा चित्तं अविमुत्तं चित्तन्ति पजानेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरेय्यं, सेय्यथिदं [सेय्यथीदं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] – एकम्पि जातिं द्वेपि जातियो तिस्सोपि जातियो चतस्सोपि जातियो पञ्चपि जातियो दसपि जातियो वीसम्पि जातियो तिंसम्पि जातियो चत्तारीसम्पि जातियो पञ्ञासम्पि जातियो जातिसतम्पि जातिसहस्सम्पि जातिसतसहस्सम्पि अनेकेपि संवट्टकप्पे अनेकेपि विवट्टकप्पे अनेकेपि संवट्टविवट्टकप्पे – अमुत्रासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो अमुत्र उदपादिं; तत्रापासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो, सो ततो चुतो इधूपपन्नोति, इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सेय्यं चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे, सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानेय्यं – इमे वत भोन्तो सत्ता कायदुच्चरितेन समन्नागता वचीदुच्चरितेन समन्नागता मनोदुच्चरितेन समन्नागता अरियानं उपवादका मिच्छादिट्ठिका मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना; इमे वा पन भोन्तो सत्ता कायसुचरितेन समन्नागता वचीसुचरितेन समन्नागता मनोसुचरितेन समन्नागता अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका सम्मादिट्ठिकम्मसमादाना, ते कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्नाति, इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सेय्यं चवमाने उपपज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे, सुगते दुग्गते यथाकम्मूपगे सत्ते पजानेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने''ति। ततियं।

४. दुस्सीलसुत्तं

२४. [अ॰ नि॰ ५.१६८; ६.५०; ७.६५] ''दुस्सीलस्स, भिक्खवे, सीलविपन्नस्स हतूपनिसो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि असति सम्मासमाधिविपन्नस्स हतूपनिसं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने असति यथाभूतञाणदस्सनविपन्नस्स हतूपनिसो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे असति निब्बिदाविरागविपन्नस्स हतूपनिसं होति विमुत्तिञाणदस्सनं। सेय्यथापि, भिक्खवे, रुक्खो साखापलासविपन्नो। तस्स पपटिकापि न पारिपूरिं गच्छति, तचोपि न पारिपूरिं गच्छति, फेग्गुपि न पारिपूरिं गच्छति, सारोपि न पारिपूरिं गच्छति; एवमेवं खो, भिक्खवे, दुस्सीलस्स सीलविपन्नस्स हतूपनिसो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि असति सम्मासमाधिविपन्नस्स हतूपनिसं होति

यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने असति यथाभूतञाणदस्सनविपन्नस्स हतूपनिसो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे असति निब्बिदाविरागविपन्नस्स हतूपनिसं होति विमुत्तिञाणदस्सनं।

''सीलवतो, भिक्खवे, सीलसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि सति सम्मासमाधिसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने सति यथाभूतञाणदस्सनसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे सति निब्बिदाविरागसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति विमुत्तिञाणदस्सनं। सेय्यथापि, भिक्खवे, रुक्खो साखापलाससम्पन्नो। तस्स पपटिकापि पारिपूरिं गच्छति, तचोपि पारिपूरिं गच्छति, फेग्गुपि पारिपूरिं गच्छति, सारोपि पारिपूरिं गच्छति; एवमेवं खो, भिक्खवे, सीलवतो सीलसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि सति सम्मासमाधिसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने सति यथाभूतञाणदस्सनसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे सति निब्बिदाविरागसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति विमुत्तिञाणदस्सन''न्ति। चतुत्थं।

५. अनुग्गहितसुत्तं

२५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि अनुग्गहिता सम्मादिट्ठि चेतोविमुत्तिफला च होति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा च।

''कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, सम्मादिट्ठि सीलानुग्गहिता च होति, सुतानुग्गहिता च होति, साकच्छानुग्गहिता च होति, समथानुग्गहिता च होति, विपस्सनानुग्गहिता च होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि अनुग्गहिता सम्मादिट्ठि चेतोविमुत्तिफला च होति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा चा''ति। पञ्चमं।

६. विमुत्तायतनसुत्तं

२६. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, विमुत्तायतनानि यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो सत्था धम्मं देसेति अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी। यथा यथा, भिक्खवे, तस्स भिक्खुनो सत्था धम्मं देसेति, अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी, तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी च। तस्स अत्थपटिसंवेदिनो धम्मपटिसंवेदिनो पामोज्जं [पामुज्जं (सी॰ स्या॰ कं॰) दी॰ नि॰ ३.३२२] जायति। पमुदितस्स पीति जायति। पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति। पस्सद्धकायो सुखं वेदेति [वेदियति (सी॰)]। सुखिनो चित्तं समाधियति। इदं, भिक्खवे, पठमं विमुत्तायतनं यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो न हेव खो सत्था धम्मं देसेति, अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी, अपि च खो यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति। यथा यथा, भिक्खवे, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी च। तस्स अत्थपटिसंवेदिनो धम्मपटिसंवेदिनो

पामोज्जं जायति। पमुदितस्स पीति जायति। पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति। पस्सद्धकायो सुखं वेदेति। सुखिनो चित्तं समाधियति। इदं, भिक्खवे, दुतियं विमुत्तायतनं यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो न हेव खो सत्था धम्मं देसेति, अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति, अपि च खो यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति। यथा यथा, भिक्खवे, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी च। तस्स अत्थपटिसंवेदिनो धम्मपटिसंवेदिनो पामोज्जं जायति। पमुदितस्स पीति जायति। पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति। पस्सद्धकायो सुखं वेदेति। सुखिनो चित्तं समाधियति। इदं, भिक्खवे, ततियं विमुत्तायतनं यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो...पे०... योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो न हेव खो सत्था धम्मं देसेति, अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति; अपि च खो यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति। यथा यथा, भिक्खवे, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी च। तस्स अत्थपटिसंवेदिनो धम्मपटिसंवेदिनो पामोज्जं जायति। पमुदितस्स पीति जायति। पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति। पस्सद्धकायो सुखं वेदेति। सुखिनो चित्तं समाधियति। इदं, भिक्खवे, चतुत्थं विमुत्तायतनं यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो न हेव खो सत्था धम्मं देसेति अञ्ञतरो वा गरुट्ठानियो सब्रह्मचारी, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति, नापि यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति; अपि च ख्वस्स अञ्ञतरं समाधिनिमित्तं सुग्गहितं होति सुमनसिकतं सूपधारितं सुप्पटिविद्धं पञ्ञाय। यथा यथा, भिक्खवे, भिक्खुनो अञ्ञतरं समाधिनिमित्तं सुग्गहितं होति सुमनसिकतं सूपधारितं सुप्पटिविद्धं पञ्ञाय तथा तथा सो तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी च। तस्स अत्थपटिसंवेदिनो धम्मपटिसंवेदिनो पामोज्जं जायति। पमुदितस्स पीति जायति। पीतिमनस्स कायो पस्सम्भति। पस्सद्धकायो सुखं वेदेति। सुखिनो चित्तं समाधियति। इदं, भिक्खवे, पञ्चमं विमुत्तायतनं यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाति।

''इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च विमुत्तायतनानि यत्थ भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो अविमुत्तं वा चित्तं विमुच्चति, अपरिक्खीणा वा आसवा परिक्खयं गच्छन्ति, अननुप्पत्तं वा अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाती''ति। छट्ठं।

७. समाधिसुत्तं

२७. ''समाधिं, भिक्खवे, भावेथ अप्पमाणं निपका पतिस्सता। समाधिं, भिक्खवे, भावयतं अप्पमाणं निपकानं

पतिस्सतानं पञ्च ञाणानि पच्चत्तञ्ञेव उप्पज्जन्ति। कतमानि पञ्च? 'अयं समाधि पच्चुप्पन्नसुखो चेव आयतिञ्च सुखविपाको'ति पच्चत्तञ्ञेव ञाणं उप्पज्जति, 'अयं समाधि अरियो निरामिसो'ति पच्चत्तञ्ञेव ञाणं उप्पज्जति, 'अयं समाधि अकापुरिससेवितो'ति [महापुरिससेवितोति (क०)] पच्चत्तञ्ञेव ञाणं उप्पज्जति, 'अयं समाधि सन्तो पणीतो पटिप्पस्सद्धलद्धो एकोदिभावाधिगतो, न सङ्खारनिग्गय्हवारितगतो'ति [न च ससङ्खारनिग्गय्हवारितप्पतितोति (सी०), न च ससङ्खारनिग्गय्हवारितपत्तोति (स्या०), न च ससङ्खारनिग्गय्हवारिवावटोति (क०), न ससङ्खारनिग्गय्हवारियाधिगतोति (?) दी० नि० ३.३५५; अ० नि० ३.१०२; ९.२७] पच्चत्तञ्ञेव ञाणं उप्पज्जति, 'सतो खो पनाहं इमं समापज्जामि सतो वुट्ठहामी'ति [सो खो पनाहं इमं समाधिं सतोव समापज्जामि, सतो उट्ठहामीति (सी० स्या० कं०)] पच्चत्तञ्ञेव ञाणं उप्पज्जति।

''समाधिं, भिक्खवे, भावेथ अप्पमाणं निपका पतिस्सता। समाधिं, भिक्खवे, भावयतं अप्पमाणं निपकानं पतिस्सतानं इमानि पञ्च ञाणानि पच्चत्तञ्ञेव उप्पज्जन्ती''ति। सत्तमं।

८. पञ्चङ्गिकसुत्तं

२८. ''अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स भावनं देसेस्सामि। तं सुणाथ, साधुकं मनसि करोथ; भासिस्सामी''ति। ''एवं, भन्ते''ति खो ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –

''कतमा च, भिक्खवे, अरियस्स पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स भावना? इध, भिक्खवे, भिक्खु विविच्चेव कामेहि... पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो इममेव कायं विवेकजेन पीतिसुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स विवेकजेन पीतिसुखेन अप्फुटं होति। सेय्यथापि, भिक्खवे, दक्खो न्हापको [नहापको (सी० पी०)] वा न्हापकन्तेवासी वा कंसथाले न्हानीयचुण्णानि [नहानीयचुण्णानि (सी० पी०)] आकिरित्वा उदकेन परिप्फोसकं परिप्फोसकं सन्नेय्य। सायं न्हानीयपिण्डि [सास्स नहानीयपिण्डी (सी० स्या० कं०)] स्नेहानुगता स्नेहपरेता सन्तरबाहिरा फुटा स्नेहेन, न च पग्घरिनी। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु इममेव कायं विवेकजेन पीतिसुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स विवेकजेन पीतिसुखेन अप्फुटं होति। अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स अयं पठमा भावना।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो इममेव कायं समाधिजेन पीतिसुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स समाधिजेन पीतिसुखेन अप्फुटं होति। सेय्यथापि, भिक्खवे, उदकरहदो गम्भीरो उब्भिदोदको [उब्भितोदको (स्या० कं० क०)]। तस्स नेवस्स पुरत्थिमाय दिसाय उदकस्स आयमुखं, न पच्छिमाय दिसाय उदकस्स आयमुखं, न उत्तराय दिसाय उदकस्स आयमुखं, न दक्खिणाय दिसाय उदकस्स आयमुखं, देवो च कालेन कालं सम्मा धारं नानुप्पवेच्छेय्य [देवो च न कालेन... अनुपवेच्छेय्य (दी० नि० १.२२७ आदयो; म० नि० २.२५१ आदयो)]। अथ खो तम्हाव उदकरहदा सीता वारिधारा उब्भिज्जित्वा तमेव उदकरहदं सीतेन वारिना अभिसन्देय्य परिसन्देय्य परिपूरेय्य परिप्फरेय्य; नास्स किञ्चि सब्बावतो उदकरहदस्स सीतेन वारिना अप्फुटं अस्स। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु इममेव कायं समाधिजेन पीतिसुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स समाधिजेन पीतिसुखेन अप्फुटं होति। अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स अयं दुतिया भावना।

"पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु पीतिया च विरागा...पे०... ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो इममेव कायं निप्पीतिकेन सुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स निप्पीतिकेन सुखेन अप्फुटं होति। सेय्यथापि, भिक्खवे, उप्पलिनियं वा पदुमिनियं वा पुण्डरीकिनियं वा अप्पेकच्चानि उप्पलानि वा पदुमानि वा पुण्डरीकानि वा उदके जातानि उदके संवड्ढानि उदकानुग्गतानि अन्तो निमुग्गपोसीनि। तानि याव चग्गा याव च मूला सीतेन वारिना अभिसन्नानि परिसन्नानि परिपूरानि परिप्फुटानि; नास्स किञ्चि सब्बावतं उप्पलानं वा पदुमानं वा पुण्डरीकानं वा सीतेन वारिना अप्फुटं अस्स। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु इममेव कायं निप्पीतिकेन सुखेन अभिसन्देति परिसन्देति परिपूरेति परिप्फरति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स निप्पीतिकेन सुखेन अप्फुटं होति। अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स अयं ततिया भावना।

"पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सुखस्स च पहाना ...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो इममेव कायं परिसुद्धेन चेतसा परियोदातेन फरित्वा निसिन्नो होति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स परिसुद्धेन चेतसा परियोदातेन अप्फुटं होति। सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो ओदातेन वत्थेन ससीसं पारुपित्वा निसिन्नो अस्स; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स ओदातेन वत्थेन अप्फुटं अस्स। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु इममेव कायं परिसुद्धेन चेतसा परियोदातेन फरित्वा निसिन्नो होति; नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स परिसुद्धेन चेतसा परियोदातेन अप्फुटं होति। अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स अयं चतुत्था भावना।

"पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो पच्चवेक्खणानिमित्तं सुग्गहितं होति सुमनसिकतं सूपधारितं सुप्पटिविद्धं पञ्ञाय। सेय्यथापि, भिक्खवे, अञ्ञोव अञ्ञं [अञ्ञो वा अञ्ञं वा (सी०), अञ्ञो वा अञ्ञं (स्या० कं०), अञ्ञो अञ्ञं (?)] पच्चवेक्खेय्य, ठितो वा निसिन्नं पच्चवेक्खेय्य, निसिन्नो वा निपन्नं पच्चवेक्खेय्य। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खुनो पच्चवेक्खणानिमित्तं सुग्गहितं होति सुमनसिकतं सूपधारितं सुप्पटिविद्धं पञ्ञाय। अरियस्स, भिक्खवे, पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स अयं पञ्चमा [पञ्चमी (सी०)] भावना। एवं भाविते खो, भिक्खवे, भिक्खु [एवं भाविते खो भिक्खवे (सी०)] अरिये पञ्चङ्गिके सम्मासमाधिम्हि एवं बहुलीकते यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेति अभिञ्ञासच्छिकिरियाय, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

"सेय्यथापि, भिक्खवे, उदकमणिको आधारे ठपितो पूरो उदकस्स समतित्तिको काकपेय्यो। तमेनं बलवा पुरिसो यतो यतो आवज्जेय्य [आवट्टेय्य (स्या० कं०)], आगच्छेय्य उदक"न्ति? "एवं, भन्ते"। "एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु एवं भाविते अरिये पञ्चङ्गिके सम्मासमाधिम्हि एवं बहुलीकते यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेति अभिञ्ञासच्छिकिरियाय, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

"सेय्यथापि, भिक्खवे, समे भूमिभागे पोक्खरणी चतुरंसा आलिबद्धा पूरा उदकस्स समतित्तिका काकपेय्या। तमेनं बलवा पुरिसो यतो यतो आलिं मुञ्चेय्य, आगच्छेय्य उदक"न्ति? "एवं, भन्ते"। "एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु एवं भाविते अरिये पञ्चङ्गिके सम्मासमाधिम्हि एवं बहुलीकते यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स...पे०... सति सति आयतने।

"सेय्यथापि, भिक्खवे, सुभूमियं चतुमहापथे [चातुम्महापथे (सी० पी०), चतुम्महापथे (स्या० कं०)] आजञ्ञरथो युत्तो अस्स ठितो ओधस्तपतोदो। तमेनं दक्खो योग्गाचरियो अस्सदम्मसारथि अभिरुहित्वा वामेन हत्थेन रस्मियो गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन पतोदं गहेत्वा येनिच्छकं यदिच्छकं सारेय्यपि पच्चासारेय्यपि। एवमेवं खो, भिक्खवे, भिक्खु एवं भाविते

अरिये पञ्चङ्गिके सम्मासमाधिम्हि एवं बहुलीकते यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेति अभिञ्ञासच्छिकिरियाय, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभवेय्यं – एकोपि हुत्वा बहुधा अस्सं...पे॰... याव ब्रह्मलोकापि कायेन वसं वत्तेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'दिब्बाय सोतधातुया विसुद्धाय अतिक्कन्तमानुसिकाय उभो सद्दे सुणेय्यं – दिब्बे च मानुसे च ये दूरे सन्तिके चा'ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे अकङ्खति – 'परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च पजानेय्यं – सरागं वा चित्तं सरागं चित्तन्ति पजानेय्यं, वीतरागं वा चित्तं वीतरागं चित्तन्ति पजानेय्यं, सदोसं वा चित्तं... वीतदोसं वा चित्तं... समोहं वा चित्तं... वीतमोहं वा चित्तं... संखित्तं वा चित्तं... विक्खित्तं वा चित्तं... महग्गतं वा चित्तं... अमहग्गतं वा चित्तं... सउत्तरं वा चित्तं... अनुत्तरं वा चित्तं... समाहितं वा चित्तं... असमाहितं वा चित्तं... विमुत्तं वा चित्तं... अविमुत्तं वा चित्तं अविमुत्तं चित्तन्ति पजानेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरेय्यं, सेय्यथिदं – एकम्पि जातिं, द्वेपि जातियो...पे॰... इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन...पे॰... यथाकम्मूपगे सत्ते पजानेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खति – 'आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणाति सति सति आयतने''ति। अट्ठमं।

९. चङ्कमसुत्तं

२९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, चङ्कमे आनिसंसा। कतमे पञ्च? अद्धानक्खमो होति, पधानक्खमो होति, अप्पाबाधो होति, असितं पीतं खायितं सायितं सम्मा परिणामं गच्छति, चङ्कमाधिगतो समाधि चिरट्ठितिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च चङ्कमे आनिसंसा''ति। नवमं।

१०. नागितसुत्तं

३०. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा कोसलेसु चारिकं चरमानो महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं येन इच्छानङ्गलं नाम कोसलानं ब्राह्मणगामो तदवसरि। तत्र सुदं भगवा इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे। अस्सोसुं खो इच्छानङ्गलका [इच्छानङ्गलिका (सी॰) अ॰ नि॰ ६.४२; अ॰ नि॰ ८.८६] ब्राह्मणगहपतिका – ''समणो खलु भो गोतमो सक्यपुत्तो सक्यकुला पब्बजितो इच्छानङ्गलं अनुप्पत्तो; इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे। तं खो पन भवन्तं गोतमं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि, सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवाति। सो इमं लोकं सदेवकं समारकं सब्रह्मकं सस्समणब्राह्मणिं पजं

सदेवमनुस्सं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेति। सो धम्मं देसेति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं सात्थं सब्यञ्जनं, केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। साधु खो पन तथारूपानं अरहतं दस्सनं होती''ति। अथ खो इच्छानङ्गलका ब्राह्मणगहपतिका तस्सा रत्तिया अच्चयेन पहूतं खादनीयं भोजनीयं आदाय येन इच्छानङ्गलवनसण्डो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा बहिद्वारकोट्ठके अट्ठंसु उच्चासद्दमहासद्दा।

तेन खो पन समयेन आयस्मा नागितो भगवतो उपट्ठाको होति। अथ खो भगवा आयस्मन्तं नागितं आमन्तेसि – ''के पन खो, नागित, उच्चासद्दमहासद्दा, केवट्टा मञ्ञे मच्छविलोपे''ति? ''एते, भन्ते, इच्छानङ्गलका ब्राह्मणगहपतिका पहूतं खादनीयं भोजनीयं आदाय बहिद्वारकोट्ठके ठिता भगवन्तञ्ञेव उद्दिस्स भिक्खुसङ्घञ्चा''ति। ''माहं, नागित, यसेन समागमं, मा च मया यसो। यो खो, नागित, नयिमस्स नेक्खम्मसुखस्स पविवेकसुखस्स उपसमसुखस्स सम्बोधसुखस्स निकामलाभी अस्स अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, यस्साहं नेक्खम्मसुखस्स पविवेकसुखस्स उपसमसुखस्स सम्बोधसुखस्स निकामलाभी अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। सो तं [सोहं (क०), सो (स्या० कं०)] मीळ्हसुखं मिद्धसुखं लाभसक्कारसिलोकसुखं सादियेय्या''ति।

''अधिवासेतु दानि, भन्ते, भगवा, अधिवासेतु सुगतो; अधिवासनकालो दानि, भन्ते, भगवतो। येन येनेव दानि भगवा गमिस्सति तंनिन्नाव गमिस्सन्ति ब्राह्मणगहपतिका नेगमा चेव जानपदा च। सेय्यथापि, भन्ते, थुल्लफुसितके देवे वस्सन्ते यथानिन्नं उदकानि पवत्तन्ति; एवमेवं खो, भन्ते, येन येनेव दानि भगवा गमिस्सति, तंनिन्नाव गमिस्सन्ति ब्राह्मणगहपतिका नेगमा चेव जानपदा च। तं किस्स हेतु? तथा हि, भन्ते, भगवतो सीलपञ्ञाण''न्ति।

''माहं, नागित, यसेन समागमं, मा च मया यसो। यो खो, नागित, नयिमस्स नेक्खम्मसुखस्स पविवेकसुखस्स उपसमसुखस्स सम्बोधसुखस्स निकामलाभी अस्स अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, यस्साहं नेक्खम्मसुखस्स पविवेकसुखस्स उपसमसुखस्स सम्बोधसुखस्स निकामलाभी अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। सो तं मीळ्हसुखं मिद्धसुखं लाभसक्कारसिलोकसुखं सादियेय्य। असितपीतखायितसायितस्स खो, नागित, उच्चारपस्सावो – एसो तस्स निस्सन्दो। पियानं खो, नागित, विपरिणामञ्ञथाभावा उप्पज्जन्ति सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा – एसो तस्स निस्सन्दो। असुभनिमित्तानुयोगं अनुयुत्तस्स खो, नागित, सुभनिमित्ते पाटिकुल्यता [पटिक्कूलता (सी०), पटिक्कूल्यता (स्या० कं०)] सण्ठाति – एसो तस्स निस्सन्दो। छसु खो, नागित, फस्सायतनेसु अनिच्चानुपस्सिनो विहरतो फस्से पाटिकुल्यता सण्ठाति – एसो तस्स निस्सन्दो। पञ्चसु खो, नागित, उपादानक्खन्धेसु उदयब्बयानुपस्सिनो विहरतो उपादाने पाटिकुल्यता सण्ठाति – एसो तस्स निस्सन्दो''ति। दसमं।

पञ्चङ्गिकवग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

द्वे अगारवुपक्किलेसा, दुस्सीलानुग्गहितेन च।
विमुत्तिसमाधिपञ्चङ्गिका, चङ्कमं नागितेन चाति॥

४. सुमनवग्गो

१. सुमनसुत्तं

३१. एकं समयं...पे०... अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो सुमना राजकुमारी पञ्चहि रथसतेहि पञ्चहि राजकुमारिसतेहि परिवुता येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्ना खो सुमना राजकुमारी भगवन्तं एतदवोच –

''इधस्सु, भन्ते, भगवतो द्वे सावका समसद्धा समसीला समपञ्ञा – एको दायको, एको अदायको। ते कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जेय्युं। देवभूतानं पन नेसं [तेसं (सी०)], भन्ते, सिया विसेसो, सिया नानाकरण''न्ति?

''सिया, सुमने''ति भगवा अवोच – ''यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं देवभूतो समानो पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति – दिब्बेन आयुना, दिब्बेन वण्णेन, दिब्बेन सुखेन, दिब्बेन यसेन, दिब्बेन आधिपतेय्येन। यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं देवभूतो समानो इमेहि पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति''।

''सचे पन ते, भन्ते, ततो चुता इत्थत्तं आगच्छन्ति, मनुस्सभूतानं पन नेसं, भन्ते, सिया विसेसो, सिया नानाकरण''न्ति? ''सिया, सुमने''ति भगवा अवोच – ''यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं मनुस्सभूतो समानो पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति – मानुसकेन आयुना, मानुसकेन वण्णेन, मानुसकेन सुखेन, मानुसकेन यसेन, मानुसकेन आधिपतेय्येन। यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं मनुस्सभूतो समानो इमेहि पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति''।

''सचे पन ते, भन्ते, उभो अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति, पब्बजितानं पन नेसं, भन्ते, सिया विसेसो, सिया नानाकरण''न्ति? ''सिया, सुमने''ति भगवा अवोच – ''यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं पब्बजितो समानो पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति – याचितोव बहुलं चीवरं परिभुञ्जति अप्पं अयाचितो, याचितोव बहुलं पिण्डपातं परिभुञ्जति अप्पं अयाचितो, याचितोव बहुलं सेनासनं परिभुञ्जति अप्पं अयाचितो, याचितोव बहुलं गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं परिभुञ्जति अप्पं अयाचितो। येहि खो पन सब्रह्मचारीहि सद्धिं विहरति त्यस्स मनापेनेव बहुलं कायकम्मेन समुदाचरन्ति अप्पं अमनापेन, मनापेनेव बहुलं वचीकम्मेन समुदाचरन्ति अप्पं अमनापेन, मनापेनेव बहुलं मनोकम्मेन समुदाचरन्ति अप्पं अमनापेन, मनापंयेव बहुलं उपहारं उपहरन्ति अप्पं अमनापं। यो सो, सुमने, दायको सो अमुं अदायकं पब्बजितो समानो इमेहि पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाती''ति।

''सचे पन ते, भन्ते, उभो अरहत्तं पापुणन्ति, अरहत्तप्पत्तानं पन नेसं, भन्ते, सिया विसेसो, सिया नानाकरण''न्ति? ''एत्थ खो पनेसाहं, सुमने, न किञ्चि नानाकरणं वदामि, यदिदं विमुत्तिया विमुत्ति''न्ति [विमुत्तन्ति (स्या० कं०)]।

''अच्छरियं, भन्ते, अब्भुतं, भन्ते! यावञ्चिदं, भन्ते, अलमेव दानानि दातुं अलं पुञ्ञानि कातुं; यत्र हि नाम देवभूतस्सापि उपकारानि पुञ्ञानि, मनुस्सभूतस्सापि उपकारानि पुञ्ञानि, पब्बजितस्सापि उपकारानि पुञ्ञानी''ति। ''एवमेतं, सुमने! अलञ्हि, सुमने, दानानि दातुं अलं पुञ्ञानि कातुं! देवभूतस्सापि उपकारानि पुञ्ञानि, मनुस्सभूतस्सापि उपकारानि पुञ्ञानि, पब्बजितस्सापि उपकारानि पुञ्ञानी''ति।

इदमवोच भगवा। इदं वत्वान [इदं वत्वा (सी० पी०) एवमुपरिपि] सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था –

''यथापि चन्दो विमलो, गच्छं आकासधातुया।

सब्बे तारागणे लोके, आभाय अतिरोचति॥

“तथेव सीलसम्पन्नो, सद्धो पुरिसपुग्गलो।
सब्बे मच्छरिनो लोके, चागेन अतिरोचति॥

“यथापि मेघो थनयं, विज्जुमाली सतक्ककु।
थलं निन्नञ्च पूरेति, अभिवस्सं वसुन्धरं॥

“एवं दस्सनसम्पन्नो, सम्मासम्बुद्धसावको।
मच्छरिं अधिगण्हाति, पञ्चठानेहि पण्डितो॥

“आयुना यससा चेव [आयुना च यसेन च (क॰)], वण्णेन च सुखेन च।
स वे भोगपरिब्यूळ्हो [भोगपरिब्बूळ्हो (सी॰)], पेच्च सग्गे पमोदती”ति॥ पठमं।

२. चुन्दीसुत्तं

३२. एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। अथ खो चुन्दी राजकुमारी पञ्चहि रथसतेहि पञ्चहि च कुमारिसतेहि परिवुता येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्ना खो चुन्दी राजकुमारी भगवन्तं एतदवोच –

“अम्हाकं, भन्ते, भाता चुन्दो नाम राजकुमारो, सो एवमाह – ‘यदेव सो होति इत्थी वा पुरिसो वा बुद्धं सरणं गतो, धम्मं सरणं गतो, सङ्घं सरणं गतो, पाणातिपाता पटिविरतो, अदिन्नादाना पटिविरतो, कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतो, मुसावादा पटिविरतो, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो, सो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिंयेव उपपज्जति, नो दुग्गति’न्ति। साहं, भन्ते, भगवन्तं पुच्छामि – ‘कथंरूपे खो, भन्ते, सत्थरि पसन्नो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिंयेव उपपज्जति, नो दुग्गतिं? कथंरूपे धम्मे पसन्नो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिंयेव उपपज्जति, नो दुग्गतिं? कथंरूपे सङ्घे पसन्नो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिंयेव उपपज्जति, नो दुग्गतिं? कथंरूपेसु सीलेसु परिपूरकारी कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिंयेव उपपज्जति, नो दुग्गति’”न्ति?

“यावता, चुन्दि, सत्ता अपदा वा द्विपदा वा चतुप्पदा वा बहुप्पदा वा [अपादा वा द्वीपादा वाचतुप्पादा वा बहुप्पादा वा (सी॰) अ॰ नि॰ ४.३४; इतिवु॰ ९०] रूपिनो वा अरूपिनो वा सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो वा नेवसञ्ञिनासञ्ञिनो वा, तथागतो तेसं अग्गमक्खायति अरहं सम्मासम्बुद्धो। ये खो, चुन्दि, बुद्धे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना। अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होति।

“यावता, चुन्दि, धम्मा सङ्खता, अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो तेसं अग्गमक्खायति। ये, चुन्दि, अरिये अट्ठङ्गिके मग्गे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना, अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होति।

“यावता, चुन्दि, धम्मा सङ्खता वा असङ्खता वा, विरागो तेसं [तेसं धम्मानं (सी॰ पी॰ क॰)] अग्गमक्खायति, यदिदं – मदनिम्मदनो पिपासविनयो आलयसमुग्घातो वट्टुपच्छेदो तण्हाक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं। ये खो, चुन्दि, विरागे

धम्मे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना। अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होति।

''यावता, चुन्दि, सङ्घा वा गणा वा, तथागतसावकसङ्घो तेसं अग्गमक्खायति, यदिदं – चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठ पुरिसपुग्गला, एस भगवतो सावकसङ्घो आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स। ये खो, चुन्दि, सङ्घे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना। अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होति।

''यावता, चुन्दि, सीलानि, अरियकन्तानि सीलानि तेसं [अरियकन्तानितेसं (सी॰ स्या॰ कं॰)] अग्गमक्खायति, यदिदं – अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि। ये खो, चुन्दि, अरियकन्तेसु सीलेसु परिपूरकारिनो, अग्गे ते परिपूरकारिनो। अग्गे खो पन परिपूरकारीनं अग्गो विपाको होती''ति।

''अग्गतो वे पसन्नानं, अग्गं धम्मं विजानतं।
अग्गे बुद्धे पसन्नानं, दक्खिणेय्ये अनुत्तरे॥

''अग्गे धम्मे पसन्नानं, विरागूपसमे सुखे।
अग्गे सङ्घे पसन्नानं, पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे॥

''अग्गस्मिं दानं ददतं, अग्गं पुञ्ञं पवड्ढति।
अग्गं आयु च वण्णो च, यसो कित्ति सुखं बलं॥

''अग्गस्स दाता मेधावी, अग्गधम्मसमाहितो।
देवभूतो मनुस्सो वा, अग्गप्पत्तो पमोदती''ति॥ दुतियं।

३. उग्गहसुत्तं

३३. एकं समयं भगवा भद्दिये विहरति जातिया वने। अथ खो उग्गहो मेण्डकनत्ता येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो उग्गहो मेण्डकनत्ता भगवन्तं एतदवोच –

''अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा स्वातनाय अत्तचतुत्थो भत्त''न्ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन। अथ खो उग्गहो मेण्डकनत्ता भगवतो अधिवासनं विदित्वा उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि।

अथ खो भगवा तस्सा रत्तिया अच्चयेन पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन उग्गहस्स मेण्डकनत्तुनो निवेसनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो उग्गहो मेण्डकनत्ता भगवन्तं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेसि सम्पवारेसि। अथ खो उग्गहो मेण्डकनत्ता भगवन्तं भुत्tाविं ओनीतपत्तपाणिं एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो उग्गहो मेण्डकनत्ता भगवन्तं एतदवोच – ''इमा मे, भन्ते, कुमारियो पतिकुलानि गमिस्सन्ति। ओवदतु तासं, भन्ते, भगवा; अनुसासतु तासं, भन्ते, भगवा, यं तासं अस्स दीघरत्तं हिताय सुखाया''ति।

अथ खो भगवा ता कुमारियो एतदवोच – ''तस्मातिह, कुमारियो, एवं सिक्खितब्बं – 'यस्स वो [यस्स खो (सी॰

स्या॰ कं॰)] मातापितरो भत्तुनो दस्सन्ति अत्थकामा हितेसिनो अनुकम्पका अनुकम्पं उपादाय, तस्स भविस्साम पुब्बुट्ठायिनियो पच्छानिपातिनियो किंकारपटिस्साविनियो मनापचारिनियो पियवादिनियो'ति। एवञ्हि वो, कुमारियो, सिक्खितब्बं।

''तस्मातिह, कुमारियो, एवं सिक्खितब्बं – 'ये ते भत्तु गरुनो [गुरुनो (क॰)] भविस्सन्ति माताति वा पिताति वा समणब्राह्मणाति वा, ते सक्करिस्साम गरुं करिस्साम [गरुकरिस्साम (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] मानेस्साम पूजेस्साम अब्भागते च आसनोदकेन पटिपूजेस्सामा'ति [पूजेस्सामाति (सी॰)]। एवञ्हि वो, कुमारियो, सिक्खितब्बं।

''तस्मातिह, कुमारियो, एवं सिक्खितब्बं – 'ये ते भत्तु अब्भन्तरा कम्मन्ता उण्णाति वा कप्पासाति वा, तत्थ दक्खा भविस्साम अनलसा, तत्रुपायाय वीमंसाय समन्नागता, अलं कातुं अलं संविधातु'न्ति। एवञ्हि वो, कुमारियो, सिक्खितब्बं।

''तस्मातिह, कुमारियो, एवं सिक्खितब्बं – 'यो सो भत्तु अब्भन्तरो [अब्भन्तरे (क॰)] अन्तोजनो दासाति वा पेस्साति वा कम्मकराति वा, तेसं कतञ्च कततो जानिस्साम अकतञ्च अकततो जानिस्साम, गिलानकानञ्च बलाबलं जानिस्साम, खादनीयं भोजनीयञ्चस्स पच्चंसेन [पच्चयं तेन (क॰ सी॰), पच्चयंसेन (स्या॰ कं॰), पच्चयं सेनासनं पच्चत्तंसेन (क॰) अ॰ नि॰ ८.४६] संविभजिस्सामा'ति [विभजिस्सामाति (सी॰ स्या॰ कं॰)]। एवञ्हि वो, कुमारियो, सिक्खितब्बं।

''तस्मातिह, कुमारियो, एवं सिक्खितब्बं – 'यं भत्ता आहरिस्सति धनं वा धञ्ञं वा रजतं वा जातरूपं वा, तं आरक्खेन [तं आरक्खाय (सी॰)] गुत्तिया सम्पादेस्साम, तत्थ च भविस्साम अधुत्ती अथेनी असोण्डी अविनासिकायो'ति। एवञ्हि वो, कुमारियो, सिक्खितब्बं। इमेहि खो, कुमारियो, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो मातुगामो कायस्स भेदा परं मरणा मनापकायिकानं देवानं सहब्यतं उपपज्जती''ति।

''यो नं भरति सब्बदा, निच्चं आतापि उस्सुको।
सब्बकामहरं पोसं, भत्तारं नातिमञ्ञति॥

''न चापि सोत्थि भत्तारं, इस्साचारेन [इच्छाचारेन (सी॰), इस्सावादेन (पी॰)] रोसये।
भत्तु च गरुनो सब्बे, पटिपूजेति पण्डिता॥

''उट्ठाहिका [उट्ठायिका (स्या॰ कं॰ क॰)] अनलसा, सङ्गहितपरिज्जना।
भत्तु मनापं [मनापा (सी॰)] चरति, सम्भतं अनुरक्खति॥

''या एवं वत्तती नारी, भत्तुछन्दवसानुगा।
मनापा नाम ते देवा, यत्थ सा उपपज्जती''ति॥ ततियं।

४. सीहसेनापतिसुत्तं

३४. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। अथ खो सीहो सेनापति येन भगवा तेनुपसङ्कमि;

उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सीहो सेनापति भगवन्तं एतदवोच – "सक्का नु खो, भन्ते, भगवा सन्दिट्ठिकं दानफलं पञ्ञापेतु"न्ति?

"सक्का, सीहा"ति भगवा अवोच – "दायको, सीह, दानपति बहुनो जनस्स पियो होति मनापो। यम्पि, सीह, दायको दानपति बहुनो जनस्स पियो होति मनापो, इदम्पि सन्दिट्ठिकं दानफलं।

"पुन चपरं, सीह, दायकं दानपतिं सन्तो सप्पुरिसा भजन्ति। यम्पि, सीह, दायकं दानपतिं सन्तो सप्पुरिसा भजन्ति, इदम्पि सन्दिट्ठिकं दानफलं।

"पुन चपरं, सीह, दायकस्स दानपतिनो कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति। यम्पि, सीह, दायकस्स दानपतिनो कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, इदम्पि सन्दिट्ठिकं दानफलं।

"पुन चपरं, सीह, दायको दानपति यं यदेव परिसं उपसङ्कमति – यदि खत्तियपरिसं यदि ब्राह्मणपरिसं यदि गहपतिपरिसं यदि समणपरिसं – विसारदो [विसारदोव (सी॰) अ॰ नि॰ ७.५७ पस्सितब्बं] उपसङ्कमति अमङ्कुभूतो। यम्पि, सीह, दायको दानपति यं यदेव परिसं उपसङ्कमति – यदि खत्तियपरिसं यदि ब्राह्मणपरिसं यदि गहपतिपरिसं यदि समणपरिसं – विसारदो उपसङ्कमति अमङ्कुभूतो, इदम्पि सन्दिट्ठिकं दानफलं।

"पुन चपरं, सीह, दायको दानपति कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। यम्पि, सीह, दायको दानपति कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति, इदं [इदम्पि सीह (क॰)] सम्परायिकं दानफल"न्ति।

एवं वुत्ते सीहो सेनापति भगवन्तं एतदवोच – "यानिमानि, भन्ते, भगवता चत्तारि सन्दिट्ठिकानि दानफलानि अक्खातानि, नाहं एत्थ भगवतो सद्धाय गच्छामि; अहं पेतानि जानामि। अहं, भन्ते, दायको दानपति बहुनो जनस्स पियो मनापो। अहं, भन्ते, दायको दानपति; मं सन्तो सप्पुरिसा भजन्ति। अहं, भन्ते, दायको दानपति; मय्हं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – 'सीहो सेनापति दायको कारको सङ्घुपट्ठाको'ति। अहं, भन्ते, दायको दानपति यं यदेव परिसं उपसङ्कमामि – यदि खत्तियपरिसं यदि ब्राह्मणपरिसं यदि गहपतिपरिसं यदि समणपरिसं – विसारदो उपसङ्कमामि अमङ्कुभूतो। यानिमानि, भन्ते, भगवता चत्तारि सन्दिट्ठिकानि दानफलानि अक्खातानि, नाहं एत्थ भगवतो सद्धाय गच्छामि; अहं पेतानि जानामि। यञ्च खो मं, भन्ते, भगवा एवमाह – 'दायको, सीह, दानपति कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जती'ति, एताहं न जानामि; एत्थ च पनाहं भगवतो सद्धाय गच्छामी"ति। "एवमेतं, सीह, एवमेतं, सीह! दायको दानपति कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जती"ति।

"ददं पियो होति भजन्ति नं बहू,
कित्तिञ्च पप्पोति यसो च वड्ढति [यसस्स वड्ढति (स्या॰ कं॰), यसं पवड्ढति (क॰)]।
अमङ्कुभूतो परिसं विगाहति,
विसारदो होति नरो अमच्छरी॥

"तस्मा हि दानानि ददन्ति पण्डिता,
विनेय्य मच्छेरमलं सुखेसिनो।

ते दीघरत्तं तिदिवे पतिट्ठिता,
देवानं सहब्यगता रमन्ति ते [सहब्यतं गता रमन्ति (सी॰), सहब्यता रमन्ति ते (क॰)]॥

''कतावकासा कतकुसला इतो चुता [ततो चुता (सी॰)],
सयंपभा अनुविचरन्ति नन्दनं [नन्दने (स्या॰ कं॰)]।
ते तत्थ नन्दन्ति रमन्ति मोदरे,
समप्पिता कामगुणेहि पञ्चहि।
''कत्वान वाक्यं असितस्स तादिनो,
रमन्ति सग्गे [रमन्ति सुमना (क॰), कमन्ति सब्बे (स्या॰ कं॰)] सुगतस्स सावका''ति॥ चतुत्थं।

५. दानानिसंससुत्तं

३५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, दाने आनिसंसा। कतमे पञ्च? बहुनो जनस्स पियो होति मनापो; सन्तो सप्पुरिसा भजन्ति; कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; गिहिधम्मा अनपगतो [गिहिधम्मा अनपेतो (सी॰ पी॰), गिहिधम्ममनुपगतो (क॰)] होति; कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च दाने आनिसंसा''ति।

''ददमानो पियो होति, सतं धम्मं अनुक्कमं।
सन्तो नं सदा भजन्ति [सन्तो भजन्ति सप्पुरिसा (सी॰)], सञ्ञता ब्रह्मचारयो॥

''ते तस्स धम्मं देसेन्ति, सब्बदुक्खापनूदनं।
यं सो धम्मं इधञ्ञाय, परिनिब्बाति अनासवो''ति॥ पञ्चमं।

६. कालदानसुत्तं

३६. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, कालदानानि। कतमानि पञ्च? आगन्तुकस्स दानं देति; गमिकस्स दानं देति; गिलानस्स दानं देति; दुब्भिक्खे दानं देति; यानि तानि नवसस्सानि नवफलानि तानि पठमं सीलवन्तेसु पतिट्ठापेति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च कालदानानी''ति।

''काले ददन्ति सप्पञ्ञा, वदञ्ञू वीतमच्छरा।
कालेन दिन्नं अरियेसु, उजुभूतेसु तादिसु॥

''विप्पसन्नमना तस्स, विपुला होति दक्खिणा।
ये तत्थ अनुमोदन्ति, वेय्यावच्चं करोन्ति वा।
न तेन [न तेसं (पी॰ क॰)] दक्खिणा ऊना, तेपि पुञ्ञस्स भागिनो॥

''तस्मा ददे अप्पटिवानचित्तो, यत्थ दिन्नं महप्फलं।
पुञ्ञानि परलोकस्मिं, पतिट्ठा होन्ति पाणिन''न्ति॥ छट्ठं।

७. भोजनसुत्तं

३७. ''भोजनं, भिक्खवे, ददमानो दायको पटिग्गाहकानं पञ्च ठानानि देति। कतमानि पञ्च? आयुं देति, वण्णं देति, सुखं देति, बलं देति, पटिभानं [पटिभाणं (सी॰)] देति। आयुं खो पन दत्वा आयुस्स भागी होति दिब्बस्स वा मानुसस्स वा; वण्णं दत्वा वण्णस्स भागी होति दिब्बस्स वा मानुसस्स वा; सुखं दत्वा सुखस्स भागी होति दिब्बस्स वा मानुसस्स वा; बलं दत्वा बलस्स भागी होति दिब्बस्स वा मानुसस्स वा; पटिभानं दत्वा पटिभानस्स भागी होति दिब्बस्स वा मानुसस्स वा। भोजनं, भिक्खवे, ददमानो दायको पटिग्गाहकानं इमानि पञ्च ठानानि देती''ति।

''आयुदो बलदो धीरो, वण्णदो पटिभानदो।
सुखस्स दाता मेधावी, सुखं सो अधिगच्छति॥

''आयुं दत्वा बलं वण्णं, सुखञ्च पटिभानकं [पटिभाणकं (सी॰), पटिभानदो (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰)]।
दीघायु यसवा होति, यत्थ यत्थूपपज्जती''ति॥ सत्तमं।

८. सद्धसुत्तं

३८. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, सद्धे कुलपुत्ते आनिसंसा। कतमे पञ्च? ये ते, भिक्खवे, लोके सन्तो सप्पुरिसा ते सद्धञ्ञेव पठमं अनुकम्पन्ता अनुकम्पन्ति, नो तथा अस्सद्धं; सद्धञ्ञेव पठमं उपसङ्कमन्ता उपसङ्कमन्ति, नो तथा अस्सद्धं; सद्धञ्ञेव पठमं पटिग्गण्हन्ता पटिग्गण्हन्ति, नो तथा अस्सद्धं; सद्धञ्ञेव पठमं धम्मं देसेन्ता देसेन्ति, नो तथा अस्सद्धं; सद्धो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च सद्धे कुलपुत्ते आनिसंसा।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, सुभूमियं चतुमहापथे महानिग्रोधो समन्ता पक्खीनं पटिसरणं होति; एवमेवं खो, भिक्खवे, सद्धो कुलपुत्तो बहुनो जनस्स पटिसरणं होति भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकान''न्ति।

''साखापत्तफलूपेतो [साखापत्तबहुपेतो (कत्थचि), साखापत्तपलासूपेतो (?)], खन्धिमाव [खन्धिमा च (सी॰)] महादुमो।
मूलवा फलसम्पन्नो, पतिट्ठा होति पक्खिनं॥

''मनोरमे आयतने, सेवन्ति नं विहङ्गमा।
छायं छायत्थिका [छायत्थिनो (सी॰)] यन्ति, फलत्था फलभोजिनो॥

''तथेव सीलसम्पन्नं, सद्धं पुरिसपुग्गलं।
निवातवुत्तिं अत्थद्धं, सोरतं सखिलं मुदुं॥

''वीतरागा वीतदोसा, वीतमोहा अनासवा।
पुञ्ञक्खेत्तानि लोकस्मिं, सेवन्ति तादिसं नरं॥

''ते तस्स धम्मं देसेन्ति, सब्बदुक्खापनूदनं।

यं सो धम्मं इधञ्ञाय, परिनिब्बाति अनासवो''ति॥ अट्ठमं।

९. पुत्तसुत्तं

३९. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, ठानानि सम्पस्सन्ता मातापितरो पुत्तं इच्छन्ति कुले जायमानं। कतमानि पञ्च? भतो वा नो भरिस्सति; किच्चं वा नो करिस्सति; कुलवंसो चिरं ठस्सति; दायज्जं पटिपज्जिस्सति; अथ वा पन पेतानं कालङ्कतानं दक्खिणं अनुप्पदस्सतीति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च ठानानि सम्पस्सन्ता मातापितरो पुत्तं इच्छन्ति कुले जायमान''न्ति।

[कथा॰ ४९१] ''पञ्च ठानानि सम्पस्सं, पुत्तं इच्छन्ति पण्डिता।
भतो वा नो भरिस्सति, किच्चं वा नो करिस्सति॥

''कुलवंसो चिरं तिट्ठे, दायज्जं पटिपज्जति।
अथ वा पन पेतानं, दक्खिणं अनुप्पदस्सति॥

''ठानानेतानि सम्पस्सं, पुत्तं इच्छन्ति पण्डिता।
तस्मा सन्तो सप्पुरिसा, कतञ्ञू कतवेदिनो॥

''भरन्ति मातापितरो, पुब्बे कतमनुस्सरं।
करोन्ति नेसं किच्चानि, यथा तं पुब्बकारिनं॥

''ओवादकारी भतपोसी, कुलवंसं अहापयं।
सद्धो सीलेन सम्पन्नो, पुत्तो होति पसंसियो''ति॥ नवमं।

१०. महासालपुत्तसुत्तं

४०. ''हिमवन्तं, भिक्खवे, पब्बतराजं निस्साय महासाला पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढन्ति। कतमाहि पञ्चहि? साखापत्तपलासेन वड्ढन्ति; तचेन वड्ढन्ति; पपटिकाय वड्ढन्ति; फेग्गुना वड्ढन्ति; सारेन वड्ढन्ति। हिमवन्तं, भिक्खवे, पब्बतराजं निस्साय महासाला इमाहि पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढन्ति। एवमेवं खो, भिक्खवे, सद्धं कुलपुत्तं निस्साय अन्तोजनो पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढति। कतमाहि पञ्चहि? सद्धाय वड्ढति; सीलेन वड्ढति; सुतेन वड्ढति; चागेन वड्ढति; पञ्ञाय वड्ढति। सद्धं, भिक्खवे, कुलपुत्तं निस्साय अन्तोजनो इमाहि पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढती''ति।

''यथा हि पब्बतो सेलो, अरञ्ञस्मिं ब्रहावने।
तं रुक्खा उपनिस्साय, वड्ढन्ते ते वनप्पती॥

''तथेव सीलसम्पन्नं, सद्धं कुलपुत्तं इमं [कुलपतिं इध (सी॰), कुलपुत्तं इध (स्या॰)]।
उपनिस्साय वड्ढन्ति, पुत्तदारा च बन्धवा।
अमच्चा ञातिसङ्घा च, ये चस्स अनुजीविनो॥

''त्यस्स सीलवतो सीलं, चागं सुचरितानि च।

पस्समानानुकुब्बन्ति, ये भवन्ति विचक्खणा॥

‘‘इमं धम्मं चरित्वान, मग्गं [सग्गं (स्या॰ क॰)] सुगतिगामिनं।
नन्दिनो देवलोकस्मिं, मोदन्ति कामकामिनो’’ति॥ दसमं।

सुमनवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

सुमना चुन्दी उग्गहो, सीहो दानानिसंसको।
कालभोजनसद्धा च, पुत्तसालेहि ते दसाति॥

५. मुण्डराजवग्गो

१. आदियसुत्तं

४१. एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो अनाथपिण्डिकं गहपतिं भगवा एतदवोच – ‘‘पञ्चिमे, गहपति, भोगानं आदिया। कतमे पञ्च? इध, गहपति, अरियसावको उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि अत्तानं सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति; मातापितरो सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति; पुत्तदारदासकम्मकरपोरिसे सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति। अयं पठमो भोगानं आदियो।

‘‘पुन चपरं, गहपति, अरियसावको उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि मित्तामच्चे सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति। अयं दुतियो भोगानं आदियो।

‘‘पुन चपरं, गहपति, अरियसावको उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि या ता होन्ति आपदा – अग्गितो वा उदकतो वा राजतो वा चोरतो वा अप्पियतो वा दायादतो [अप्पियतो वा दायादतो वा (बहूसु) अ॰ नि॰ ४.६१; ५.१४८] – तथारूपासु आपदासु भोगेहि परियोधाय वत्तति, सोत्थिं अत्तानं करोति। अयं ततियो भोगानं आदियो।

‘‘पुन चपरं, गहपति, अरियसावको उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि पञ्चबलिं कत्ता होति। ञातिबलिं, अतिथिबलिं, पुब्बपेतबलिं, राजबलिं, देवताबलिं – अयं चतुत्थो भोगानं आदियो।

‘‘पुन चपरं, गहपति, अरियसावको उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि ये ते समणब्राह्मणा मदप्पमादा पटिविरता खन्तिसोरच्चे निविट्ठा एकमत्तानं दमेन्ति एकमत्तानं समेन्ति एकमत्तानं परिनिब्बापेन्ति, तथारूपेसु समणब्राह्मणेसु उद्धग्गिकं दक्खिणं पतिट्ठापेति सोवग्गिकं सुखविपाकं

सग्गसंवत्तनिकं। अयं पञ्चमो भोगानं आदियो। इमे खो, गहपति, पञ्च भोगानं आदिया।

''तस्स चे, गहपति, अरियसावकस्स इमे पञ्च भोगानं आदिये आदियतो भोगा परिक्खयं गच्छन्ति, तस्स एवं होति – 'ये वत भोगानं आदिया ते चाहं आदियामि भोगा च मे परिक्खयं गच्छन्ती'ति। इतिस्स होति अविप्पटिसारो। तस्स चे, गहपति, अरियसावकस्स इमे पञ्च भोगानं आदिये आदियतो भोगा अभिवड्ढन्ति, तस्स एवं होति – 'ये वत भोगानं आदिया ते चाहं आदियामि भोगा च मे अभिवड्ढन्ती'ति। इतिस्स होति [इतिस्स होति अविप्पटिसारो, (सी॰ स्या॰)] उभयेनेव अविप्पटिसारो''ति।

''भुत्ता भोगा भता भच्चा [गता तच्छा (क॰)], वितिण्णा आपदासु मे।
उद्धग्गा दक्खिणा दिन्ना, अथो पञ्चबलीकता।
उपट्ठिता सीलवन्तो, सञ्ञता ब्रह्मचारयो॥

''यदत्थं भोगं इच्छेय्य, पण्डितो घरमावसं।
सो मे अत्थो अनुप्पत्तो, कतं अननुतापियं॥

''एतं [एवं (क॰)] अनुस्सरं मच्चो, अरियधम्मे ठितो नरो।
इधेव नं पसंसन्ति, पेच्च सग्गे पमोदती''ति [पेच्च सग्गे च मोदतीति (सी॰ स्या॰)]॥ पठमं।

२. सप्पुरिससुत्तं

४२. ''सप्पुरिसो, भिक्खवे, कुले जायमानो बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; मातापितूनं [मातापितुन्नं (सी॰ पी॰)] अत्थाय हिताय सुखाय होति; पुत्तदारस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; दासकम्मकरपोरिसस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; मित्तामच्चानं अत्थाय हिताय सुखाय होति; समणब्राह्मणानं अत्थाय हिताय सुखाय होति।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, महामेघो सब्बसस्सानि सम्पादेन्तो बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; एवमेवं खो, भिक्खवे, सप्पुरिसो कुले जायमानो बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; मातापितूनं अत्थाय हिताय सुखाय होति; पुत्तदारस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; दासकम्मकरपोरिसस्स अत्थाय हिताय सुखाय होति; मित्तामच्चानं अत्थाय हिताय सुखाय होति; समणब्राह्मणानं अत्थाय हिताय सुखाय होती''ति।

''हितो बहुन्नं पटिपज्ज भोगे, तं देवता रक्खति धम्मगुत्तं।
बहुस्सुतं सीलवतूपपन्नं, धम्मे ठितं न विजहति [विजहाति (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] कित्ति॥

''धम्मट्ठं सीलसम्पन्नं, सच्चवादिं हिरीमनं।
नेक्खं जम्बोनदस्सेव, को तं निन्दितुमरहति।
देवापि नं पसंसन्ति, ब्रह्मुनापि पसंसितो''ति॥ दुतियं।

३. इट्ठसुत्तं

४३. अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो अनाथपिण्डिकं गहपतिं भगवा एतदवोच –

''पञ्चिमे, गहपति, धम्मा इट्ठा कन्ता मनापा दुल्लभा लोकस्मिं। कतमे पञ्च? आयु, गहपति, इट्ठो कन्तो मनापो दुल्लभो लोकस्मिं; वण्णो इट्ठो कन्तो मनापो दुल्लभो लोकस्मिं; सुखं इट्ठं कन्तं मनापं दुल्लभं लोकस्मिं; यसो इट्ठो कन्तो मनापो दुल्लभो लोकस्मिं; सग्गा इट्ठा कन्ता मनापा दुल्लभा लोकस्मिं। इमे खो, गहपति, पञ्च धम्मा इट्ठा कन्ता मनापा दुल्लभा लोकस्मिं।

''इमेसं खो, गहपति, पञ्चन्नं धम्मानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं दुल्लभानं लोकस्मिं न आयाचनहेतु वा पत्थनाहेतु वा [न पत्थनाहेतु वा (स्या० कं० पी०)] पटिलाभं वदामि। इमेसं खो, गहपति, पञ्चन्नं धम्मानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं दुल्लभानं लोकस्मिं आयाचनहेतु वा पत्थनाहेतु वा पटिलाभो अभविस्स, को इध केन हायेथ?

''न खो, गहपति, अरहति अरियसावको आयुकामो आयुं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा आयुस्स वापि हेतु। आयुकामेन, गहपति, अरियसावकेन आयुसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा। आयुसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना आयुपटिलाभाय संवत्तति। सो लाभी होति आयुस्स दिब्बस्स वा मानुसस्स वा।

''न खो, गहपति, अरहति अरियसावको वण्णकामो वण्णं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा वण्णस्स वापि हेतु। वण्णकामेन, गहपति, अरियसावकेन वण्णसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा। वण्णसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना वण्णपटिलाभाय संवत्तति। सो लाभी होति वण्णस्स दिब्बस्स वा मानुसस्स वा।

''न खो, गहपति, अरहति अरियसावको सुखकामो सुखं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा सुखस्स वापि हेतु। सुखकामेन, गहपति, अरियसावकेन सुखसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा। सुखसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना सुखपटिलाभाय संवत्तति। सो लाभी होति सुखस्स दिब्बस्स वा मानुसस्स वा।

''न खो, गहपति, अरहति अरियसावको यसकामो यसं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा यसस्स वापि हेतु। यसकामेन, गहपति, अरियसावकेन यससंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा। यससंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना यसपटिलाभाय संवत्तति। सो लाभी होति यसस्स दिब्बस्स वा मानुसस्स वा।

''न खो, गहपति, अरहति अरियसावको सग्गकामो सग्गं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा सग्गानं वापि हेतु। सग्गकामेन, गहपति, अरियसावकेन सग्गसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा। सग्गसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना सग्गपटिलाभाय संवत्तति। सो लाभी होति सग्गान''न्ति।

''आयुं वण्णं यसं कित्तिं, सग्गं उच्चाकुलीनतं।
रतियो पत्थयानेन [पत्थयमानेन (क०)], उळारा अपरापरा॥

''अप्पमादं पसंसन्ति, पुञ्ञकिरियासु पण्डिता।
''अप्पमत्तो उभो अत्थे, अधिगण्हाति पण्डितो॥

"दिट्ठे धम्मे च [दिट्ठेव धम्मे (सी॰)] यो अत्थो, यो चत्थो सम्परायिको।
अत्थाभिसमया धीरो, पण्डितोति पवुच्चती"ति॥ ततियं।

४. मनापदायीसुत्तं

४४. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन उग्गस्स गहपतिनो वेसालिकस्स निवेसनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। अथ खो उग्गो गहपति वेसालिको येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो उग्गो गहपति वेसालिको भगवन्तं एतदवोच –

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापं मे, भन्ते, सालपुप्फकं [सालिपुप्फकं (क॰)] खादनीयं; तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय।

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापं मे, भन्ते, सम्पन्नकोलकं सूकरमंसं [सम्पन्नसूकरमंसं (सी॰), सम्पन्नवरसूकरमंसं (स्या॰)]; तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय।

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापं मे, भन्ते, निब्बत्ततेलकं [निबद्धतेलकं (पी॰ सी॰ अट्ठ॰), निब्बट्टतेलकं (स्या॰ अट्ठ॰)] नालियसाकं; तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय।

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापो मे, भन्ते, सालीनं ओदनो विचितकाळको [विगतकालको (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰)] अनेकसूपो अनेकब्यञ्जनो; तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय।

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापानि मे, भन्ते, कासिकानि वत्थानि; तानि मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय।

"सम्मुखा मेतं, भन्ते, भगवतो सुतं सम्मुखा पटिग्गहितं – 'मनापदायी लभते मनाप'न्ति। मनापो मे, भन्ते, पल्लङ्को गोनकत्थतो पटलिकत्थतो कदलिमिगपवरपच्चत्थरणो [कादलिमिगपवरपच्चत्थरणो (सी॰)] सउत्तरच्छदो उभतोलोहितकूपधानो। अपि च, भन्ते, मयम्पेतं जानाम – 'नेतं भगवतो कप्पती'ति। इदं मे, भन्ते, चन्दनफलकं अग्घति अधिकसतसहस्सं; तं मे भगवा पटिग्गण्हातु अनुकम्पं उपादाया"ति। पटिग्गहेसि भगवा अनुकम्पं उपादाय। अथ खो भगवा उग्गं गहपतिं वेसालिकं इमिना अनुमोदनीयेन अनुमोदि –

"मनापदायी लभते मनापं,
यो उज्जुभूतेसु [उजुभूतेसु (स्या॰ कं॰ पी॰)] ददाति छन्दसा।
अच्छादनं सयनमन्नपानं [सयनमथन्नपानं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)],

नानाप्पकारानि च पच्चयानि॥

''चत्तञ्च मुत्तञ्च अनुग्गहीतं [अनग्गहीतं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)],
खेत्तूपमे अरहन्ते विदित्वा।
सो दुच्चजं सप्पुरिसो चजित्वा,
मनापदायी लभते मनाप''न्ति॥

अथ खो भगवा उग्गं गहपतिं वेसालिकं इमिना अनुमोदनीयेन अनुमोदित्वा उट्ठायासना पक्कामि।

अथ खो उग्गो गहपति वेसालिको अपरेन समयेन कालमकासि। कालङ्कतो [कालकतो (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] च उग्गो गहपति वेसालिको अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपज्जि। तेन खो पन समयेन भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो उग्गो देवपुत्तो अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णो केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितं खो उग्गं देवपुत्तं भगवा एतदवोच – ''कच्चि ते, उग्ग, यथाधिप्पायो''ति? ''तग्घ मे, भगवा, यथाधिप्पायो''ति। अथ खो भगवा उग्गं देवपुत्तं गाथाहि अज्झभासि –

''मनापदायी लभते मनापं,
अग्गस्स दाता लभते पुनग्गं।
वरस्स दाता वरलाभि होति,
सेट्ठं ददो सेट्ठमुपेति ठानं॥

''यो अग्गदायी वरदायी, सेट्ठदायी च यो नरो।
दीघायु यसवा होति, यत्थ यत्थूपपज्जती''ति॥ चतुत्थं।

५. पुञ्ञाभिसन्दसुत्तं

४५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पुञ्ञाभिसन्दा कुसलाभिसन्दा सुखस्साहारा सोवग्गिका सुखविपाका सग्गसंवत्तनिका इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तन्ति।

''कतमे पञ्च? यस्स, भिक्खवे, भिक्खु चीवरं परिभुञ्जमानो अप्पमाणं चेतोसमाधिं उपसम्पज्ज विहरति, अप्पमाणो तस्स पुञ्ञाभिसन्दो कुसलाभिसन्दो सुखस्साहारो सोवग्गिको सुखविपाको सग्गसंवत्तनिको इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तति।

''यस्स, भिक्खवे, भिक्खु पिण्डपातं परिभुञ्जमानो...पे॰... यस्स, भिक्खवे, भिक्खु विहारं परिभुञ्जमानो...पे॰... यस्स, भिक्खवे, भिक्खु मञ्चपीठं परिभुञ्जमानो...पे॰...।

''यस्स, भिक्खवे, भिक्खु गिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारं परिभुञ्जमानो अप्पमाणं चेतोसमाधिं उपसम्पज्ज विहरति, अप्पमाणो तस्स पुञ्ञाभिसन्दो कुसलाभिसन्दो सुखस्साहारो सोवग्गिको सुखविपाको सग्गसंवत्तनिको इट्ठाय कन्ताय

मनापाय हिताय सुखाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च पुञ्ञाभिसन्दा कुसलाभिसन्दा सुखस्साहारा सोवग्गिका सुखविपाका सग्गसंवत्तनिका इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तन्ति।

''इमेहि च पन, भिक्खवे, पञ्चहि पुञ्ञाभिसन्देहि कुसलाभिसन्देहि समन्नागतस्स अरियसावकस्स न सुकरं पुञ्ञस्स पमाणं गहेतुं – 'एत्तको पुञ्ञाभिसन्दो कुसलाभिसन्दो सुखस्साहारो सोवग्गिको सुखविपाको सग्गसंवत्तनिको इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तती'ति। अथ खो असङ्खेय्यो अप्पमेय्यो महापुञ्ञक्खन्धोत्वेव सङ्खं गच्छति।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, महासमुद्दे न सुकरं उदकस्स पमाणं गहेतुं – 'एत्तकानि उदकाळ्हकानीति वा एत्तकानि उदकाळ्हकसतानीति वा एत्तकानि उदकाळ्हकसहस्सानीति वा एत्तकानि उदकाळ्हकसतसहस्सानीति वा; अथ खो असङ्खेय्यो अप्पमेय्यो महाउदकक्खन्धोत्वेव सङ्खं गच्छति'। एवमेवं खो, भिक्खवे, इमेहि पञ्चहि पुञ्ञाभिसन्देहि कुसलाभिसन्देहि समन्नागतस्स अरियसावकस्स न सुकरं पुञ्ञस्स पमाणं गहेतुं – 'एत्तको पुञ्ञाभिसन्दो कुसलाभिसन्दो सुखस्साहारो सोवग्गिको सुखविपाको सग्गसंवत्तनिको इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तती'ति। अथ खो असङ्खेय्यो अप्पमेय्यो महापुञ्ञक्खन्धोत्वेव सङ्खं गच्छती''ति।

''महोदधिं अपरिमितं महासरं,
बहुभेरवं रतनगणानमालयं।
नज्जो यथा नरगणसङ्घसेविता [मच्छ गणसंघसेविता (स्या॰ कं॰ क॰) सं॰ नि॰ ५.१०३७ पस्सितब्बं],
पुथू सवन्ती उपयन्ति सागरं॥

''एवं नरं अन्नदपानवत्थदं,
सेय्यानिसज्जत्थरणस्स दायकं।
पुञ्ञस्स धारा उपयन्ति पण्डितं,
नज्जो यथा वारिवहाव सागर''न्ति॥ पञ्चमं।

६. सम्पदासुत्तं

४६. ''पञ्चिमा, भिक्खवे, सम्पदा। कतमा पञ्च? सद्धासम्पदा, सीलसम्पदा, सुतसम्पदा, चागसम्पदा, पञ्ञासम्पदा – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सम्पदा''ति। छट्ठं।

७. धनसुत्तं

४७. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, धनानि। कतमानि पञ्च? सद्धाधनं, सीलधनं, सुतधनं, चागधनं, पञ्ञाधनं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, सद्धाधनं? इध, भिक्खवे, अरियसावको सद्धो होति, सद्दहति तथागतस्स बोधिं – 'इतिपि सो भगवा...पे॰... सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सद्धाधनं।

''कतमञ्च, भिक्खवे, सीलधनं? इध, भिक्खवे, अरियसावको पाणातिपाता पटिविरतो होति...पे॰... सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सीलधनं।

"कतमञ्च, भिक्खवे, सुतधनं? इध, भिक्खवे, अरियसावको बहुस्सुतो होति…पे॰… दिट्ठिया सुप्पटिविद्धो। इदं वुच्चति, भिक्खवे, सुतधनं।

"कतमञ्च, भिक्खवे, चागधनं? इध, भिक्खवे, अरियसावको विगतमलमच्छेरेन चेतसा अगारं अज्झावसति मुत्तचागो पयतपाणि वोस्सग्गरतो याचयोगो दानसंविभागरतो। इदं वुच्चति, भिक्खवे, चागधनं।

"कतमञ्च, भिक्खवे, पञ्ञाधनं? इध, भिक्खवे, अरियसावको पञ्ञवा होति, उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। इदं वुच्चति, भिक्खवे, पञ्ञाधनं। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च धनानी"ति।

[अ॰ नि॰ ४.५२] "यस्स सद्धा तथागते, अचला सुप्पतिट्ठिता।
सीलञ्च यस्स कल्याणं, अरियकन्तं पसंसितं॥

"सङ्घे पसादो यस्सत्थि, उजुभूतञ्च दस्सनं।
अदलिद्दोति तं आहु, अमोघं तस्स जीवितं॥

"तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च, पसादं धम्मदस्सनं।
अनुयुञ्जेथ मेधावी, सरं बुद्धान सासन"न्ति॥ सत्तमं।

८. अलब्भनीयठानसुत्तं

४८. "पञ्चिमानि, भिक्खवे, अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं। कतमानि पञ्च? 'जराधम्मं मा जीरी'ति अलब्भनीयं ठानं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं। 'ब्याधिधम्मं मा ब्याधीयी'ति [व्याधिधम्मं "मा व्याधीयी"ति (सी॰ पी॰)] …पे॰… 'मरणधम्मं मा मीयी'ति… 'खयधम्मं मा खीयी'ति… 'नस्सनधम्मं मा नस्सी'ति अलब्भनीयं ठानं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं।

"अस्सुतवतो, भिक्खवे, पुथुज्जनस्स जराधम्मं जीरति। सो जराधम्मे जिण्णे न इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स [मय्हमेवेकस्स (सी॰)] जराधम्मं जीरति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति। अहञ्चेव [अहञ्चे (?)] खो पन जराधम्मे जिण्णे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं [कम्मन्तोपि नप्पवत्तेय्य (क॰)], अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो जराधम्मे जिण्णे सोचति किलमति परिदेवति, उरत्ताळिं कन्दति, सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, भिक्खवे – 'अस्सुतवा पुथुज्जनो विद्धो सविसेन सोकसल्लेन अत्तानंयेव परितापेति'"।

"पुन चपरं, भिक्खवे, अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स ब्याधिधम्मं ब्याधीयति…पे॰… मरणधम्मं मीयति… खयधम्मं खीयति… नस्सनधम्मं नस्सति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे न इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स नस्सनधम्मं नस्सति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं नस्सनधम्मं नस्सति। अहञ्चेव खो पन नस्सनधम्मे नट्ठे सोचेय्यं

किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे सोचति किलमति परिदेवति, उरत्ताळिं कन्दति, सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, भिक्खवे – 'अस्सुतवा पुथुज्जनो विद्धो सविसेन सोकसल्लेन अत्तानंयेव परितापेति''।

''सुतवतो च खो, भिक्खवे, अरियसावकस्स जराधम्मं जीरति। सो जराधम्मे जिण्णे इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स जराधम्मं जीरति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति। अहञ्चेव खो पन जराधम्मे जिण्णे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो जराधम्मे जिण्णे न सोचति न किलमति न परिदेवति, न उरत्ताळिं कन्दति, न सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, भिक्खवे – 'सुतवा अरियसावको अब्बुहि [अब्बहि (सी०)] सविसं सोकसल्लं, येन विद्धो अस्सुतवा पुथुज्जनो अत्तानंयेव परितापेति। असोको विसल्लो अरियसावको अत्तानंयेव परिनिब्बापेति''।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सुतवतो अरियसावकस्स ब्याधिधम्मं ब्याधीयति...पे०... मरणधम्मं मीयति... खयधम्मं खीयति... नस्सनधम्मं नस्सति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स नस्सनधम्मं नस्सति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं नस्सनधम्मं नस्सति। अहञ्चेव खो पन नस्सनधम्मे नट्ठे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे न सोचति न किलमति न परिदेवति, न उरत्ताळिं कन्दति, न सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, भिक्खवे – 'सुतवा अरियसावको अब्बुहि सविसं सोकसल्लं, येन विद्धो अस्सुतवा पुथुज्जनो अत्तानंयेव परितापेति। असोको विसल्लो अरियसावको अत्तानंयेव परिनिब्बापेती''ति।

''इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि''न्ति।

[जा० १.५.९६ जातकेपि] ''न सोचनाय परिदेवनाय,
अत्थोध लब्भा [अत्थो इध लब्भति (स्या०), अत्थो इध लब्भा (पी०)] अपि अप्पकोपि।
सोचन्तमेनं दुखितं विदित्वा,
पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति॥

''यतो च खो पण्डितो आपदासु,
न वेधती अत्थविनिच्छयञ्ञू।
पच्चत्थिकास्स दुखिता भवन्ति,
दिस्वा मुखं अविकारं पुराणं॥

''जप्पेन मन्तेन सुभासितेन,
अनुप्पदानेन पवेणिया वा।

यथा यथा यत्थ [यथा यथा यत्थ यत्थ (क॰)] लभेथ अत्थं,
तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य॥

''सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो,
मयाव [मया वा (स्या॰ कं॰ पी॰)] अञ्ञेन वा एस अत्थो।
असोचमानो अधिवासयेय्य,
कम्मं दळ्हं किन्ति करोमि दानी''ति॥ अट्ठमं।

९. कोसलसुत्तं

४९. एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो राजा पसेनदि कोसलो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि।

(तेन खो पन समयेन मल्लिका देवी कालङ्कता होति।) [( ) नत्थि (सी॰)] अथ खो अञ्ञतरो पुरिसो येन राजा पसेनदि कोसलो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स उपकण्णके आरोचेति – ''मल्लिका देवी, देव [देव देवी (स्या॰ कं॰ पी॰)], कालङ्कता''ति। एवं वुत्ते राजा पसेनदि कोसलो दुक्खी दुम्मनो पत्तक्खन्धो अधोमुखो पज्झायन्तो अप्पटिभानो निसीदि।

अथ खो भगवा राजानं पसेनदिं कोसलं दुक्खिं दुम्मनं पत्तक्खन्धं अधोमुखं पज्झायन्तं अप्पटिभानं विदित्वा राजानं पसेनदिं कोसलं एतदवोच – ''पञ्चिमानि, महाराज, अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं। कतमानि पञ्च? 'जराधम्मं मा जीरी'ति अलब्भनीयं ठानं...पे॰... न सोचनाय परिदेवनाय...पे॰... कम्मं दळ्हं किन्ति करोमि दानी''ति। नवमं।

१०. नारदसुत्तं

५०. एकं समयं आयस्मा नारदो पाटलिपुत्ते विहरति कुक्कुटारामे। तेन खो पन समयेन मुण्डस्स रञ्ञो भद्दा देवी कालङ्कता होति पिया मनापा। सो भद्दाय देविया कालङ्कताय पियाय मनापाय नेव न्हायति [नहायति (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] न विलिम्पति न भत्तं भुञ्जति न कम्मन्तं पयोजेति – रत्तिन्दिवं [रत्तिदिवं (क॰)] भद्दाय देविया सरीरे अज्झोमुच्छितो। अथ खो मुण्डो राजा पियकं कोसारक्खं [सोकारक्खं (स्या॰)] आमन्तेसि – ''तेन हि, सम्म पियक, भद्दाय देविया सरीरं आयसाय तेलदोणिया पक्खिपित्वा अञ्ञिस्सा आयसाय दोणिया पटिकुज्जथ, यथा मयं भद्दाय देविया सरीरं चिरतरं पस्सेय्यामा''ति। ''एवं, देवा''ति खो पियको कोसारक्खो मुण्डस्स रञ्ञो पटिस्सुत्वा भद्दाय देविया सरीरं आयसाय तेलदोणिया पक्खिपित्वा अञ्ञिस्सा आयसाय दोणिया पटिकुज्जि।

अथ खो पियकस्स कोसारक्खस्स एतदहोसि – ''इमस्स खो मुण्डस्स रञ्ञो भद्दा देवी कालङ्कता पिया मनापा। सो भद्दाय देविया कालङ्कताय पियाय मनापाय नेव न्हायति न विलिम्पति न भत्तं भुञ्जति न कम्मन्तं पयोजेति – रत्तिन्दिवं भद्दाय देविया सरीरे अज्झोमुच्छितो। कं [किं (क॰)] नु खो मुण्डो राजा समणं वा ब्राह्मणं वा पयिरुपासेय्य, यस्स धम्मं सुत्वा सोकसल्लं पजहेय्या''ति!

अथ खो पियकस्स कोसारक्खस्स एतदहोसि – ''अयं खो आयस्मा नारदो पाटलिपुत्ते विहरति कुक्कुटारामे। तं खो पनायस्मन्तं नारदं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – 'पण्डितो वियत्तो [व्यत्तो (सी॰ पी॰), ब्यत्तो (स्या॰ कं॰, दी॰ नि॰ २.४०७)] मेधावी बहुस्सुतो चित्तकथी कल्याणपटिभानो वुद्धो चेव [बुद्धो चेव (क॰)] अरहा च' [अरहा चा'ति (?)]। यंनून मुण्डो राजा आयस्मन्तं नारदं पयिरुपासेय्य, अप्पेव नाम मुण्डो राजा आयस्मतो नारदस्स धम्मं सुत्वा सोकसल्लं पजहेय्या''ति।

अथ खो पियको कोसारक्खो येन मुण्डो राजा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा मुण्डं राजानं एतदवोच – ''अयं खो, देव, आयस्मा नारदो पाटलिपुत्ते विहरति कुक्कुटारामे। तं खो पनायस्मन्तं नारदं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – 'पण्डितो वियत्तो मेधावी बहुस्सुतो चित्तकथी कल्याणपटिभानो वुद्धो चेव अरहा च' [अरहा चा'ति (?)]। यदि पन देवो आयस्मन्तं नारदं पयिरुपासेय्य, अप्पेव नाम देवो आयस्मतो नारदस्स धम्मं सुत्वा सोकसल्लं पजहेय्या''ति। ''तेन हि, सम्म पियक, आयस्मन्तं नारदं पटिवेदेहि। कथञ्हि नाम मादिसो समणं वा ब्राह्मणं वा विजिते वसन्तं पुब्बे अप्पटिसंविदितो उपसङ्कमितब्बं मञ्ञेय्या''ति! ''एवं, देवा''ति खो पियको कोसारक्खो मुण्डस्स रञ्ञो पटिस्सुत्वा येनायस्मा नारदो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नारदं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो पियको कोसारक्खो आयस्मन्तं नारदं एतदवोच –

''इमस्स, भन्ते, मुण्डस्स रञ्ञो भद्दा देवी कालङ्कता पिया मनापा। सो भद्दाय देविया कालङ्कताय पियाय मनापाय नेव न्हायति न विलिम्पति न भत्तं भुञ्जति न कम्मन्तं पयोजेति – रत्तिन्दिवं भद्दाय देविया सरीरे अज्झोमुच्छितो। साधु, भन्ते, आयस्मा नारदो मुण्डस्स रञ्ञो तथा धम्मं देसेतु यथा मुण्डो राजा आयस्मतो नारदस्स धम्मं सुत्वा सोकसल्लं पजहेय्या''ति। ''यस्सदानि, पियक, मुण्डो राजा कालं मञ्ञती''ति।

अथ खो पियको कोसारक्खो उट्ठायासना आयस्मन्तं नारदं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा येन मुण्डो राजा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा मुण्डं राजानं एतदवोच – ''कतावकासो खो, देव, आयस्मता नारदेन। यस्सदानि देवो कालं मञ्ञती''ति। ''तेन हि, सम्म पियक, भद्रानि भद्रानि यानानि योजापेही''ति। ''एवं, देवा''ति खो पियको कोसारक्खो मुण्डस्स रञ्ञो पटिस्सुत्वा भद्रानि भद्रानि यानानि योजापेत्वा मुण्डं राजानं एतदवोच – ''युत्तानि खो ते, देव, भद्रानि भद्रानि यानानि। यस्सदानि देवो कालं मञ्ञती''ति।

अथ खो मुण्डो राजा भद्रं यानं [भद्रं भद्रं यानं (स्या॰ कं॰ क॰), भद्दं यानं (पी॰)] अभिरुहित्वा भद्रेहि भद्रेहि यानेहि येन कुक्कुटारामो तेन पायासि महच्चा [महच्च (बहूसु)] राजानुभावेन आयस्मन्तं नारदं दस्सनाय। यावतिका यानस्स भूमि यानेन गन्त्वा, याना पच्चोरोहित्वा पत्तिकोव आरामं पाविसि। अथ खो मुण्डो राजा येन आयस्मा नारदो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं नारदं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो मुण्डं राजानं आयस्मा नारदो एतदवोच –

''पञ्चिमानि, महाराज, अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं। कतमानि पञ्च? 'जराधम्मं मा जीरी'ति अलब्भनीयं ठानं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं। 'ब्याधिधम्मं मा ब्याधीयी'ति…पे॰… 'मरणधम्मं मा मीयी'ति… 'खयधम्मं मा खीयी'ति… 'नस्सनधम्मं मा नस्सी'ति अलब्भनीयं ठानं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं।

''अस्सुतवतो, महाराज, पुथुज्जनस्स जराधम्मं जीरति। सो जराधम्मे जिण्णे न इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स जराधम्मं जीरति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति। अहञ्चेव खो पन जराधम्मे जिण्णे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो जराधम्मे जिण्णे सोचति किलमति परिदेवति, उरत्ताळिं कन्दति, सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, महाराज – 'अस्सुतवा पुथुज्जनो विद्धो सविसेन सोकसल्लेन अत्तानंयेव परितापेति'''।

''पुन चपरं, महाराज, अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स ब्याधिधम्मं ब्याधीयति...पे॰... मरणधम्मं मीयति... खयधम्मं खीयति... नस्सनधम्मं नस्सति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे न इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स नस्सनधम्मं नस्सति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं नस्सनधम्मं नस्सति। अहञ्चेव खो पन नस्सनधम्मे नट्ठे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे सोचति किलमति परिदेवति, उरत्ताळिं कन्दति, सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, महाराज – 'अस्सुतवा पुथुज्जनो विद्धो सविसेन सोकसल्लेन अत्तानंयेव परितापेति'''।

''सुतवतो च खो, महाराज, अरियसावकस्स जराधम्मं जीरति। सो जराधम्मे जिण्णे इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स जराधम्मं जीरति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति। अहञ्चेव खो पन जराधम्मे जिण्णे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो जराधम्मे जिण्णे न सोचति न किलमति न परिदेवति, न उरत्ताळिं कन्दति, न सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, महाराज – 'सुतवा अरियसावको अब्बुहि सविसं सोकसल्लं, येन विद्धो अस्सुतवा पुथुज्जनो अत्तानंयेव परितापेति। असोको विसल्लो अरियसावको अत्तानंयेव परिनिब्बापेति'''।

''पुन चपरं, महाराज, सुतवतो अरियसावकस्स ब्याधिधम्मं ब्याधीयति...पे॰... मरणधम्मं मीयति... खयधम्मं खीयति... नस्सनधम्मं नस्सति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स नस्सनधम्मं नस्सति, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं नस्सनधम्मं नस्सति। अहञ्चेव खो पन नस्सनधम्मे नट्ठे सोचेय्यं किलमेय्यं परिदेवेय्यं, उरत्ताळिं कन्देय्यं, सम्मोहं आपज्जेय्यं, भत्तम्पि मे नच्छादेय्य, कायेपि दुब्बण्णियं ओक्कमेय्य, कम्मन्तापि नप्पवत्तेय्युं, अमित्तापि अत्तमना अस्सु, मित्तापि दुम्मना अस्सू'ति। सो नस्सनधम्मे नट्ठे न सोचति न किलमति न परिदेवति, न उरत्ताळिं कन्दति, न सम्मोहं आपज्जति। अयं वुच्चति, महाराज – 'सुतवा अरियसावको अब्बुहि सविसं सोकसल्लं, येन विद्धो अस्सुतवा पुथुज्जनो अत्तानंयेव परितापेति। असोको विसल्लो अरियसावको अत्तानंयेव परिनिब्बापेति '''।

''इमानि खो, महाराज, पञ्च अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि''न्ति।

''न सोचनाय परिदेवनाय,
अत्थोध लब्भा अपि अप्पकोपि।

सोचन्तमेनं दुखितं विदित्वा,
पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति॥

“यतो च खो पण्डितो आपदासु,
न वेधती अत्थविनिच्छयञ्ञू।
पच्चत्थिकास्स दुखिता भवन्ति,
दिस्वा मुखं अविकारं पुराणं॥

“जप्पेन मन्तेन सुभासितेन,
अनुप्पदानेन पवेणिया वा।
यथा यथा यत्थ लभेथ अत्थं,
तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य॥

“सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो,
मयाव अञ्ञेन वा एस अत्थो।
असोचमानो अधिवासयेय्य,
कम्मं दळ्हं किन्ति करोमि दानी”ति [जा॰ १ जातकेपि]॥

एवं वुत्ते मुण्डो राजा आयस्मन्तं नारदं एतदवोच – “को नामो [को नु खो (सी॰ पी॰)] अयं, भन्ते, धम्मपरियायो”ति? “सोकसल्लहरणो नाम अयं, महाराज, धम्मपरियायो”ति। “तग्घ, भन्ते, सोकसल्लहरणो [तग्घ भन्ते सोकसल्लहरणो, तग्घ भन्ते सोकसल्लहरणो (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)]! इमञ्हि मे, भन्ते, धम्मपरियायं सुत्वा सोकसल्लं पहीन”न्ति।

अथ खो मुण्डो राजा पियकं कोसारक्खं आमन्तेसि – “तेन हि, सम्म पियक, भद्दाय देविया सरीरं झापेथ; थूपञ्चस्सा करोथ। अज्जतग्गे दानि मयं न्हायिस्साम चेव विलिम्पिस्साम भत्तञ्च भुञ्जिस्साम कम्मन्ते च पयोजेस्सामा”ति। दसमं।

मुण्डराजवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

आदियो सप्पुरिसो इट्ठा, मनापदायीभिसन्दं।
सम्पदा च धनं ठानं, कोसलो नारदेन चाति॥

पठमपण्णासकं समत्तं।

२. दुतियपण्णासकं

(६) १. नीवरणवग्गो

१. आवरणसुत्तं

५१. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''भिक्खवो''ति। ''भदन्ते''ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा पञ्ञाय दुब्बलीकरणा। कतमे पञ्च? कामच्छन्दो, भिक्खवे, आवरणो नीवरणो चेतसो अज्झारुहो पञ्ञाय दुब्बलीकरणो। ब्यापादो, भिक्खवे, आवरणो नीवरणो चेतसो अज्झारुहो पञ्ञाय दुब्बलीकरणो। थिनमिद्धं, भिक्खवे, आवरणं नीवरणं चेतसो अज्झारुहं पञ्ञाय दुब्बलीकरणं। उद्धच्चकुक्कुच्चं, भिक्खवे, आवरणं नीवरणं चेतसो अज्झारुहं पञ्ञाय दुब्बलीकरणं। विचिकिच्छा, भिक्खवे, आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा पञ्ञाय दुब्बलीकरणा। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा पञ्ञाय दुब्बलीकरणा।

''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु इमे पञ्च आवरणे नीवरणे चेतसो अज्झारुहे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे अप्पहाय, अबलाय पञ्ञाय दुब्बलाय अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति उभयत्थं वा ञस्सति उत्तरि [उत्तरिं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] वा मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं सच्छिकरिस्सतीति नेतं ठानं विज्जति। सेय्यथापि, भिक्खवे, नदी पब्बतेय्या दूरङ्गमा [दूरगमा (सी॰)] सीघसोता हारहारिनी। तस्सा पुरिसो उभतो नङ्गलमुखानि विवरेय्य। एवञ्हि सो, भिक्खवे, मज्झे नदिया सोतो विक्खित्तो विसटो ब्यादिण्णो नेव [न चेव (क॰)] दूरङ्गमो अस्स न [न च (क॰)] सीघसोतो न [न च (क॰)] हारहारी [हारहारिणी (सी॰)]। एवमेवं खो, भिक्खवे, सो वत भिक्खु इमे पञ्च आवरणे नीवरणे चेतसो अज्झारुहे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे अप्पहाय, अबलाय पञ्ञाय दुब्बलाय अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति उभयत्थं वा ञस्सति उत्तरि वा मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं सच्छिकरिस्सतीति नेतं ठानं विज्जति।

''सो वत, भिक्खवे, भिक्खु इमे पञ्च आवरणे नीवरणे चेतसो अज्झारुहे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे पहाय, बलवतिया पञ्ञाय अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति उभयत्थं वा ञस्सति उत्तरि वा मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं सच्छिकरिस्सतीति ठानमेतं विज्जति। सेय्यथापि, भिक्खवे, नदी पब्बतेय्या दूरङ्गमा सीघसोता हारहारिनी। तस्सा पुरिसो उभतो नङ्गलमुखानि पिदहेय्य। एवञ्हि सो, भिक्खवे, मज्झे नदिया सोतो अविक्खित्तो अविसटो अब्यादिण्णो दूरङ्गमो चेव अस्स सीघसोतो च हारहारी च। एवमेवं खो, भिक्खवे, सो वत भिक्खु इमे पञ्च आवरणे नीवरणे चेतसो अज्झारुहे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे पहाय, बलवतिया पञ्ञाय अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति उभयत्थं वा ञस्सति उत्तरि वा मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं सच्छिकरिस्सतीति ठानमेतं विज्जती''ति। पठमं।

२. अकुसलरासिसुत्तं

५२. ''अकुसलरासीति, भिक्खवे, वदमानो पञ्च नीवरणे [इमे पञ्च नीवरणे (सी॰)] सम्मा वदमानो वदेय्य। केवलो हायं [हयं (सी॰), चायं (स्या॰ कं॰), सायं (क॰)], भिक्खवे, अकुसलरासि यदिदं पञ्च नीवरणा। कतमे पञ्च? कामच्छन्दनीवरणं, ब्यापादनीवरणं, थिनमिद्धनीवरणं, उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं। अकुसलरासीति, भिक्खवे, वदमानो इमे पञ्च नीवरणे सम्मा वदमानो वदेय्य। केवलो हायं, भिक्खवे, अकुसलरासि यदिदं पञ्च

नीवरणा’’ति। दुतियं।

३. पधानियङ्गसुत्तं

५३. ‘‘पञ्चिमानि, भिक्खवे, पधानियङ्गानि। कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, सद्दहति तथागतस्स बोधिं – ‘इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा’ति। अप्पाबाधो होति अप्पातङ्को; समवेपाकिनिया गहणिया समन्नागतो नातिसीताय नाच्चुण्हाय मज्झिमाय पधानक्खमाय; असठो होति अमायावी; यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु; आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु; पञ्ञवा होति, उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च पधानियङ्गानी’’ति। ततियं।

४. समयसुत्तं

५४. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, असमया पधानाय। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु जिण्णो होति जरायाभिभूतो। अयं, भिक्खवे, पठमो असमयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु ब्याधितो होति ब्याधिनाभिभूतो। अयं, भिक्खवे, दुतियो असमयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, दुब्भिक्खं होति दुस्सस्सं दुल्लभपिण्डं, न सुकरं उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। अयं, भिक्खवे, ततियो असमयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भयं होति अटविसङ्कोपो, चक्कसमारूळ्हा जानपदा परियायन्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो असमयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, सङ्घो भिन्नो होति। सङ्घे खो पन, भिक्खवे, भिन्ने अञ्ञमञ्ञं अक्कोसा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिभासा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिच्चजा च होन्ति। तत्थ अप्पसन्ना चेव नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो असमयो पधानाय। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च असमया पधानायाति।

‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, समया पधानाय। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु दहरो होति युवा सुसु काळकेसो भद्रेन योब्बनेन समन्नागतो पठमेन वयसा। अयं, भिक्खवे, पठमो समयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु अप्पाबाधो होति अप्पातङ्को, समवेपाकिनिया गहणिया समन्नागतो नातिसीताय नाच्चुण्हाय मज्झिमाय पधानक्खमाय। अयं, भिक्खवे, दुतियो समयो पधानाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, सुभिक्खं होति सुसस्सं सुलभपिण्डं, सुकरं उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। अयं, भिक्खवे, ततियो समयो पधानाय।

"पुन चपरं, भिक्खवे, मनुस्सा समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना खीरोदकीभूता अञ्ञमञ्ञं पियचक्खूहि सम्पस्सन्ता विहरन्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो समयो पधानाय।

"पुन चपरं, भिक्खवे, सङ्घो समग्गो सम्मोदमानो अविवदमानो एकुद्देसो फासु विहरति। सङ्घे खो पन, भिक्खवे, समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञं अक्कोसा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिभासा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिच्चजा होन्ति। तत्थ अप्पसन्ना चेव पसीदन्ति, पसन्नानञ्च भिय्योभावो [भीय्योभावाय (क॰)] होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो समयो पधानाय। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च समया पधानाया"ति। चतुत्थं।

५. मातापुत्तसुत्तं

५५. एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सावत्थियं उभो मातापुत्ता वस्सावासं उपगमिंसु [उपसङ्कमिंसु (क॰)] – भिक्खु च भिक्खुनी च। ते अञ्ञमञ्ञस्स अभिण्हं दस्सनकामा अहेसुं। मातापि पुत्तस्स अभिण्हं दस्सनकामा अहोसि; पुत्तोपि मातरं अभिण्हं दस्सनकामो अहोसि। तेसं अभिण्हं दस्सना संसग्गो अहोसि। संसग्गे सति विस्सासो अहोसि। विस्सासे सति ओतारो अहोसि। ते ओतिण्णचित्ता सिक्खं अपच्चक्खाय दुब्बल्यं अनाविकत्वा मेथुनं धम्मं पटिसेविंसु।

अथ खो सम्बहुला भिक्खू येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्नो खो ते भिक्खू भगवन्तं एतदवोचुं – "इध, भन्ते, सावत्थियं उभो मातापुत्ता वस्सावासं उपगमिंसु – भिक्खु च भिक्खुनी च, ते अञ्ञमञ्ञस्स अभिण्हं दस्सनकामा अहेसुं, मातापि पुत्तस्स अभिण्हं दस्सनकामा अहोसि, पुत्तोपि मातरं अभिण्हं दस्सनकामो अहोसि। तेसं अभिण्हं दस्सना संसग्गो अहोसि, संसग्गे सति विस्सासो अहोसि, विस्सासे सति ओतारो अहोसि, ते ओतिण्णचित्ता सिक्खं अपच्चक्खाय दुब्बल्यं अनाविकत्वा मेथुनं धम्मं पटिसेविंसू"ति।

"किं नु सो, भिक्खवे, मोघपुरिसो मञ्ञति – 'न माता पुत्ते सारज्जति, पुत्तो वा पन मातरी'ति? नाहं, भिक्खवे, अञ्ञं एकरूपम्पि समनुपस्सामि एवं [यं एवं (सी॰)] रजनीयं एवं कमनीयं एवं मदनीयं एवं बन्धनीयं एवं मुच्छनीयं एवं अन्तरायकरं अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाय यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिरूपं। इत्थिरूपे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गथिता [गधिता (स्या॰ पी॰ क॰)] मुच्छिता अज्झोसन्ना [अज्झोपन्ना (बहूसु)]। ते दीघरत्तं सोचन्ति इत्थिरूपवसानुगा।

"नाहं, भिक्खवे, अञ्ञं एकसद्दम्पि...पे॰... एकगन्धम्पि... एकरसम्पि... एकफोट्ठब्बम्पि समनुपस्सामि एवं रजनीयं एवं कमनीयं एवं मदनीयं एवं बन्धनीयं एवं मुच्छनीयं एवं अन्तरायकरं अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाय यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिफोट्ठब्बं। इत्थिफोट्ठब्बे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोसन्ना। ते दीघरत्तं सोचन्ति इत्थिफोट्ठब्बवसानुगा।

"इत्थी, भिक्खवे, गच्छन्तीपि पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति; ठितापि...पे॰... निसिन्नापि... सयानापि... हसन्तीपि... भणन्तीपि... गायन्तीपि... रोदन्तीपि... उग्घातितापि [उग्घानितापि (सी॰)] ... मतापि पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति। यञ्हि तं, भिक्खवे, सम्मा वदमानो वदेय्य – 'समन्तपासो मारस्सा'ति मातुगामंयेव सम्मा वदमानो वदेय्य – 'समन्तपासो मारस्सा'"ति।

"सल्लपे असिहत्थेन, पिसाचेनापि सल्लपे।

आसीविसम्पि आसीदे [आसद्दे (स्या॰ कं॰)], येन दट्ठो न जीवति॥

“नत्वेव एको एकाय, मातुगामेन सल्लपे।
मुट्ठस्सतिं ता बन्धन्ति, पेक्खितेन सितेन च [म्हितेन च (स्या॰ कं॰)]॥

“अथोपि दुन्निवत्थेन, मञ्जुना भणितेन च।
नेसो जनो स्वासीसदो, अपि उग्घातितो मतो॥

“पञ्च कामगुणा एते, इत्थिरूपस्मिं दिस्सरे।
रूपा सद्दा रसा गन्धा, फोट्ठब्बा च मनोरमा॥

“तेसं कामोघवूळ्हानं, कामे अपरिजानतं।
कालं गति [गतिं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] भवाभवं, संसारस्मिं पुरक्खता॥

“ये च कामे परिञ्ञाय, चरन्ति अकुतोभया।
ते वे पारङ्गता लोके, ये पत्ता आसवक्खय”न्ति॥ पञ्चमं।

६. उपज्झायसुत्तं

५६. अथ खो अञ्ञतरो भिक्खु येन सको उपज्झायो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा सकं उपज्झायं एतदवोच – “एतरहि मे, भन्ते, मधुरकजातो चेव कायो, दिसा च मे न पक्खायन्ति, धम्मा च मं नप्पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्च मे चित्तं परियादाय तिट्ठति, अनभिरतो च ब्रह्मचरियं चरामि, अत्थि च मे धम्मेसु विचिकिच्छा”ति।

अथ खो सो भिक्खु तं सद्धिविहारिकं भिक्खुं आदाय येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – “अयं, भन्ते, भिक्खु एवमाह – ‘एतरहि मे, भन्ते, मधुरकजातो चेव कायो, दिसा च मं न पक्खायन्ति, धम्मा च मे नप्पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्च मे चित्तं परियादाय तिट्ठति, अनभिरतो च ब्रह्मचरियं चरामि, अत्थि च मे धम्मेसु विचिकिच्छा’”ति।

“एवञ्हेतं, भिक्खु, होति इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारस्स, भोजने अमत्तञ्ञुनो, जागरियं अननुयुत्तस्स, अविपस्सकस्स कुसलानं धम्मानं, पुब्बरत्तापररत्तं बोधिपक्खियानं धम्मानं भावनानुयोगं अननुयुत्तस्स विहरतो, यं मधुरकजातो चेव कायो होति, दिसा चस्स न पक्खायन्ति, धम्मा च तं नप्पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्चस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति, अनभिरतो च ब्रह्मचरियं चरति, होति चस्स धम्मेसु विचिकिच्छा। तस्मातिह ते, भिक्खु, एवं सिक्खितब्बं – ‘इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो भविस्सामि, भोजने मत्तञ्ञू, जागरियं अनुयुत्तो, विपस्सको कुसलानं धम्मानं, पुब्बरत्तापररत्तं बोधिपक्खियानं धम्मानं भावनानुयोगं अनुयुत्तो विहरिस्सामी’ति। एवञ्हि ते, भिक्खु, सिक्खितब्ब”न्ति।

अथ खो सो भिक्खु भगवता इमिना ओवादेन ओवदितो उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अथ खो सो भिक्खु एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो विहरन्तो नचिरस्सेव – यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति, तदनुत्तरं – ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा

उपसम्पज्ज विहासि। ''खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया''ति अब्भञ्ञासि। अञ्ञतरो पन सो भिक्खु अरहतं अहोसि।

अथ खो सो भिक्खु अरहत्तं पत्तो येन सको उपज्झायो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा सकं उपज्झायं एतदवोच – ''एतरहि मे, भन्ते, न चेव [न त्वेव (सी०)] मधुरकजातो कायो, दिसा च मे पक्खायन्ति, धम्मा च मं पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्च मे चित्तं न परियादाय तिट्ठति, अभिरतो च ब्रह्मचरियं चरामि, नत्थि च मे धम्मेसु विचिकिच्छा''ति। अथ खो सो भिक्खु तं सद्धिविहारिकं भिक्खुं आदाय येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ''अयं, भन्ते, भिक्खु एवमाह – 'एतरहि मे, भन्ते, न चेव मधुरकजातो कायो, दिसा च मे पक्खायन्ति, धम्मा च मं पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्च मे चित्तं न परियादाय तिट्ठति, अभिरतो च ब्रह्मचरियं चरामि, नत्थि च मे धम्मेसु विचिकिच्छा'''ति।

''एवञ्हेतं, भिक्खु, होति इन्द्रियेसु गुत्तद्वारस्स, भोजने मत्तञ्ञुनो, जागरियं अनुयुत्तस्स, विपस्सकस्स कुसलानं धम्मानं, पुब्बरत्तापररत्तं बोधिपक्खियानं धम्मानं भावनानुयोगं अनुयुत्तस्स विहरतो, यं न चेव मधुरकजातो कायो होति, दिसा चस्स पक्खायन्ति, धम्मा च तं पटिभन्ति, थिनमिद्धञ्चस्स चित्तं न परियादाय तिट्ठति, अभिरतो च ब्रह्मचरियं चरति, न चस्स होति धम्मेसु विचिकिच्छा। तस्मातिह वो, भिक्खवे, एवं सिक्खितब्बं – 'इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा भविस्साम, भोजने मत्तञ्ञुनो, जागरियं अनुयुत्ता, विपस्सका कुसलानं धम्मानं, पुब्बरत्तापररत्तं बोधिपक्खियानं धम्मानं भावनानुयोगं अनुयुत्ता विहरिस्सामा'ति। एवञ्हि वो, भिक्खवे, सिक्खितब्ब''न्ति। छट्ठं।

७. अभिण्हपच्चवेक्खितब्बठानसुत्तं

५७. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, ठानानि अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बानि इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा। कतमानि पञ्च? 'जराधम्मोम्हि, जरं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा। 'ब्याधिधम्मोम्हि, ब्याधिं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा। 'मरणधम्मोम्हि, मरणं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा। 'सब्बेहि मे पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा। 'कम्मस्सकोम्हि, कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मपटिसरणो। यं कम्मं करिस्सामि – कल्याणं वा पापकं वा – तस्स दायादो भविस्सामी'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''किञ्च, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'जराधम्मोम्हि, जरं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा? अत्थि, भिक्खवे, सत्तानं योब्बने योब्बनमदो, येन मदेन मत्ता कायेन दुच्चरितं चरन्ति, वाचाय दुच्चरितं चरन्ति, मनसा दुच्चरितं चरन्ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो यो योब्बने योब्बनमदो सो सब्बसो वा पहीयति तनु वा पन होति। इदं खो, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'जराधम्मोम्हि, जरं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''किञ्च, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'ब्याधिधम्मोम्हि, ब्याधिं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा? अत्थि, भिक्खवे, सत्तानं आरोग्ये आरोग्यमदो, येन मदेन मत्ता कायेन दुच्चरितं चरन्ति, वाचाय दुच्चरितं चरन्ति, मनसा दुच्चरितं चरन्ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो यो आरोग्ये आरोग्यमदो सो

सब्बसो वा पहीयति तनु वा पन होति। इदं खो, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'ब्याधिधम्मोम्हि, ब्याधिं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''किञ्च, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'मरणधम्मोम्हि, मरणं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा? अत्थि, भिक्खवे, सत्तानं जीविते जीवितमदो, येन मदेन मत्ता कायेन दुच्चरितं चरन्ति, वाचाय दुच्चरितं चरन्ति, मनसा दुच्चरितं चरन्ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो यो जीविते जीवितमदो सो सब्बसो वा पहीयति तनु वा पन होति। इदं खो, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'मरणधम्मोम्हि, मरणं अनतीतो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''किञ्च, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'सब्बेहि मे पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा? अत्थि, भिक्खवे, सत्तानं पियेसु मनापेसु यो छन्दरागो येन रागेन रत्ता कायेन दुच्चरितं चरन्ति, वाचाय दुच्चरितं चरन्ति, मनसा दुच्चरितं चरन्ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो यो पियेसु मनापेसु छन्दरागो सो सब्बसो वा पहीयति तनु वा पन होति। इदं खो, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'सब्बेहि मे पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''किञ्च, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'कम्मस्सकोम्हि, कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मपटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि – कल्याणं वा पापकं वा – तस्स दायादो भविस्सामी'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा? अत्थि, भिक्खवे, सत्तानं कायदुच्चरितं वचीदुच्चरितं मनोदुच्चरितं। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो सब्बसो वा दुच्चरितं पहीयति तनु वा पन होति। इदं खो, भिक्खवे, अत्थवसं पटिच्च 'कम्मस्सकोम्हि, कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मपटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि – कल्याणं वा पापकं वा – तस्स दायादो भविस्सामी'ति अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं इत्थिया वा पुरिसेन वा गहट्ठेन वा पब्बजितेन वा।

''स खो [सचे (पी॰ क॰)] सो, भिक्खवे, अरियसावको इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो अहञ्ञेवेको जराधम्मो [अहञ्चेवेको जराधम्मोम्हि (क॰)] जरं अनतीतो, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बे सत्ता जराधम्मा जरं अनतीता'ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो मग्गो सञ्जायति। सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति। तस्स तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि सब्बसो पहीयन्ति अनुसया ब्यन्तीहोन्ति।

''स खो सो, भिक्खवे, अरियसावको इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो अहञ्ञेवेको ब्याधिधम्मो ब्याधिं अनतीतो, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बे सत्ता ब्याधिधम्मा ब्याधिं अनतीता'ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो मग्गो सञ्जायति। सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति। तस्स तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि सब्बसो पहीयन्ति, अनुसया ब्यन्तीहोन्ति।

''स खो सो, भिक्खवे, अरियसावको इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो अहञ्ञेवेको मरणधम्मो मरणं अनतीतो, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बे सत्ता मरणधम्मा मरणं अनतीता'ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो मग्गो सञ्जायति। सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति। तस्स तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि सब्बसो पहीयन्ति, अनुसया ब्यन्तीहोन्ति।

''स खो सो, भिक्खवे, अरियसावको इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो मय्हेवेकस्स सब्बेहि पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो, अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो'ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो मग्गो सञ्जायति। सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति। तस्स तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि सब्बसो पहीयन्ति, अनुसया ब्यन्तीहोन्ति।

''स खो सो, भिक्खवे, अरियसावको इति पटिसञ्चिक्खति – 'न खो अहञ्ञेवेको कम्मस्सको कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मप्पटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि – कल्याणं वा पापकं वा – तस्स दायादो भविस्सामि; अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बे सत्ता कम्मस्सका कम्मदायादा कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मप्पटिसरणा, यं कम्मं करिस्सन्ति – कल्याणं वा पापकं वा – तस्स दायादा भविस्सन्ती'ति। तस्स तं ठानं अभिण्हं पच्चवेक्खतो मग्गो सञ्जायति। सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति। तस्स तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि सब्बसो पहीयन्ति, अनुसया ब्यन्तीहोन्ती''ति।

''ब्याधिधम्मा जराधम्मा, अथो मरणधम्मिनो।
यथा धम्मा तथा सत्ता [सन्ता (स्या॰ कं॰)], जिगुच्छन्ति पुथुज्जना॥

''अहञ्चे तं जिगुच्छेय्यं, एवं धम्मेसु पाणिसु।
न मेतं पतिरूपस्स, मम एवं विहारिनो॥

''सोहं एवं विहरन्तो, ञत्वा धम्मं निरूपधिं।
आरोग्ये योब्बनस्मिञ्च, जीवितस्मिञ्च ये मदा॥

''सब्बे मदे अभिभोस्मि, नेक्खम्मं दट्ठु खेमतो [नेक्खम्मे दट्ठु खेमतं (अ॰ नि॰ ३.३९) उभयत्थपि अट्ठकथाय समेति]।
तस्स मे अहु उस्साहो, निब्बानं अभिपस्सतो॥

''नाहं भब्बो एतरहि, कामानि पटिसेवितुं।
अनिवत्ति [अनिवत्ती (?)] भविस्सामि, ब्रह्मचरियपरायणो''ति॥ सत्तमं।

८. लिच्छविकुमारकसुत्तं

५८. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय वेसालिं पिण्डाय पाविसि। वेसालियं पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो महावनं अज्झोगाहेत्वा अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले दिवाविहारं निसीदि।

तेन खो पन समयेन सम्बहुला लिच्छविकुमारका सज्जानि धनूनि आदाय कुक्कुरसङ्घपरिवुता महावने अनुचङ्कममाना अनुविचरमाना अद्दसु भगवन्तं अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले निसिन्नं; दिस्वान सज्जानि धनूनि निक्खिपित्वा कुक्कुरसङ्घं एकमन्तं उय्योजेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा तुण्हीभूता तुण्हीभूता पञ्जलिका भगवन्तं पयिरुपासन्ति।

तेन खो पन समयेन महानामो लिच्छवि महावने जङ्घाविहारं अनुचङ्कममानो अद्दस ते लिच्छविकुमारके तुण्हीभूते तुण्हीभूते पञ्जलिके भगवन्तं पयिरुपासन्ते; दिस्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो महानामो लिच्छवि उदानं उदानेसि – 'भविस्सन्ति वज्जी, भविस्सन्ति वज्जी''ति!

''किं पन त्वं, महानाम, एवं वदेसि – 'भविस्सन्ति वज्जी, भविस्सन्ति वज्जी''ति? ''इमे, भन्ते, लिच्छविकुमारका चण्डा फरुसा अपानुभा [अपजहाति (सी॰), अपाटुभा (स्या॰ कं॰), अपजहा (पी॰), अपानुता (कत्थचि)]। यानिपि तानि कुलेसु पहेणकानि [पहीनकानि (सी॰), पहीणकानि (स्या॰ कं॰ पी॰)] पहीयन्ति, उच्छूति वा बदराति वा पूवाति वा मोदकाति वा संकुलिकाति वा [सक्खलिकाति वा (सी॰ पी॰)], तानि विलुम्पित्वा विलुम्पित्वा खादन्ति; कुलित्थीनम्पि कुलकुमारीनम्पि पच्छालियं खिपन्ति। ते दानिमे तुण्हीभूता तुण्हीभूता पञ्जलिका भगवन्तं पयिरुपासन्ती''ति।

''यस्स कस्सचि, महानाम, कुलपुत्तस्स पञ्च धम्मा संविज्जन्ति – यदि वा रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स, यदि वा रट्ठिकस्स पेत्तनिकस्स [मुद्धाभिसित्तस्स (क॰) अ॰ नि॰ ५.१३५, १३६ पस्सितब्बं], यदि वा सेनाय सेनापतिकस्स, यदि वा गामगामणिकस्स, यदि वा पूगगामणिकस्स, ये वा पन कुलेसु पच्चेकाधिपच्चं कारेन्ति, वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''कतमे पञ्च? इध, महानाम, कुलपुत्तो उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि मातापितरो सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति। तमेनं मातापितरो सक्कता गरुकता मानिता पूजिता कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ति – 'चिरं जीव, दीघमायुं पालेही'ति। मातापितानुकम्पितस्स, महानाम, कुलपुत्तस्स वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''पुन चपरं, महानाम, कुलपुत्तो उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि पुत्तदारदासकम्मकरपोरिसे [... सामन्तसंवोहारे (सी॰ पी॰)] सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति। तमेनं पुत्तदारदासकम्मकरपोरिसा सक्कता गरुकता मानिता पूजिता कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ति – 'चिरं जीव, दीघमायुं पालेही'ति। पुत्तदारदासकम्मकरपोरिसानुकम्पितस्स, महानाम, कुलपुत्तस्स वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''पुन चपरं, महानाम, कुलपुत्तो उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि खेत्तकम्मन्तसामन्तसब्योहारे सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति। तमेनं खेत्तकम्मन्तसामन्तसब्योहारा सक्कता गरुकता मानिता पूजिता कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ति – 'चिरं जीव, दीघमायुं पालेही'ति। खेत्तकम्मन्तसामन्तसब्योहारानुकम्पितस्स, महानाम, कुलपुत्तस्स वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''पुन चपरं, महानाम, कुलपुत्तो उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि यावता बलिपटिग्गाहिका देवता सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति। तमेनं बलिपटिग्गाहिका देवता सक्कता गरुकता मानिता पूजिता कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ति – 'चिरं जीव, दीघमायुं पालेही'ति। देवतानुकम्पितस्स, महानाम, कुलपुत्तस्स वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''पुन चपरं, महानाम, कुलपुत्तो उट्ठानवीरियाधिगतेहि भोगेहि बाहाबलपरिचितेहि सेदावक्खित्तेहि धम्मिकेहि धम्मलद्धेहि समणब्राह्मणे सक्करोति गरुं करोति मानेति पूजेति। तमेनं समणब्राह्मणा सक्कता गरुकता मानिता पूजिता कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ति – 'चिरं जीव, दीघमायुं पालेही'ति। समणब्राह्मणानुकम्पितस्स, महानाम, कुलपुत्तस्स

वुद्धियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि।

''यस्स कस्सचि, महानाम, कुलपुत्तस्स इमे पञ्च धम्मा संविज्जन्ति – यदि वा रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स, यदि वा रट्ठिकस्स पेत्तनिकस्स, यदि वा सेनाय सेनापतिकस्स, यदि वा गामगामणिकस्स, यदि वा पूगगामणिकस्स, ये वा पन कुलेसु पच्चेकाधिपच्चं कारेन्ति, वुद्धियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानी''ति।

''मातापितुकिच्चकरो, पुत्तदारहितो सदा।
अन्तोजनस्स अत्थाय, ये चस्स अनुजीविनो॥

''उभिन्नञ्चेव अत्थाय, वदञ्ञू होति सीलवा।
ञातीनं पुब्बपेतानं, दिट्ठे धम्मे च जीवतं [जीविनं (सी॰), जीवितं (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰)]॥

''समणानं ब्राह्मणानं, देवतानञ्च पण्डितो।
वित्तिसञ्जननो होति, धम्मेन घरमावसं॥

''सो करित्वान कल्याणं, पुज्जो होति पसंसियो।
इधेव नं पसंसन्ति, पेच्च सग्गे पमोदती''ति॥ अट्ठमं।

९. पठमवुड्ढपब्बजितसुत्तं

५९. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो दुल्लभो वुड्ढपब्बजितो। कतमेहि पञ्चहि? दुल्लभो, भिक्खवे, वुड्ढपब्बजितो निपुणो, दुल्लभो आकप्पसम्पन्नो, दुल्लभो बहुस्सुतो, दुल्लभो धम्मकथिको, दुल्लभो विनयधरो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो दुल्लभो वुड्ढपब्बजितो''ति। नवमं।

१०. दुतियवुड्ढपब्बजितसुत्तं

६०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो दुल्लभो वुड्ढपब्बजितो। कतमेहि पञ्चहि? दुल्लभो, भिक्खवे, वुड्ढपब्बजितो सुवचो, दुल्लभो सुग्गहितग्गाही, दुल्लभो पदक्खिणग्गाही, दुल्लभो धम्मकथिको, दुल्लभो विनयधरो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो दुल्लभो वुड्ढपब्बजितो''ति। दसमं।

नीवरणवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

आवरणं रासि अङ्गानि, समयं मातुपुत्तिका।
उपज्झा ठाना लिच्छवि, कुमारा अपरा दुवेति॥

(७) २. सञ्ञावग्गो

१. पठमसञ्ञासुत्तं

६१. "पञ्चिमा, भिक्खवे, सञ्ञा भाविता बहुलीकता महप्फला होन्ति महानिसंसा अमतोगधा अमतपरियोसाना। कतमा पञ्च? असुभसञ्ञा, मरणसञ्ञा, आदीनवसञ्ञा, आहारे पटिकूलसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा [अनभिरतिसञ्ञा (क॰) अ॰ नि॰ ५.१२१-१२२, ३०३-३०४ पस्सितब्बं] – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सञ्ञा भाविता बहुलीकता महप्फला होन्ति महानिसंसा अमतोगधा अमतपरियोसाना"ति। पठमं।

२. दुतियसञ्ञासुत्तं

६२. "पञ्चिमा, भिक्खवे, सञ्ञा भाविता बहुलीकता महप्फला होन्ति महानिसंसा अमतोगधा अमतपरियोसाना। कतमा पञ्च? अनिच्चसञ्ञा, अनत्तसञ्ञा, मरणसञ्ञा, आहारे पटिकूलसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सञ्ञा भाविता बहुलीकता महप्फला होन्ति महानिसंसा अमतोगधा अमतपरियोसाना"ति। दुतियं।

३. पठमवड्ढिसुत्तं

६३. "पञ्चहि, भिक्खवे, वड्ढीहि वड्ढमानो अरियसावको अरियाय वड्ढिया वड्ढति, सारादायी च होति वरादायी च कायस्स। कतमाहि पञ्चहि? सद्धाय वड्ढति, सीलेन वड्ढति, सुतेन वड्ढति, चागेन वड्ढति, पञ्ञाय वड्ढति – इमाहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढमानो अरियसावको अरियाय वड्ढिया वड्ढति, सारादायी च होति वरादायी च कायस्सा"ति।

"सद्धाय सीलेन च यो पवड्ढति [योध वड्ढति (सी॰)],
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभयं।
सो तादिसो सप्पुरिसो विचक्खणो,
आदीयती सारमिधेव अत्तनो"ति॥ ततियं।

४. दुतियवड्ढिसुत्तं

६४. "पञ्चहि, भिक्खवे, वड्ढीहि वड्ढमाना अरियसाविका अरियाय वड्ढिया वड्ढति, सारादायिनी च होति वरादायिनी च कायस्स। कतमाहि पञ्चहि? सद्धाय वड्ढति, सीलेन वड्ढति, सुतेन वड्ढति, चागेन वड्ढति, पञ्ञाय वड्ढति – इमाहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि वड्ढीहि वड्ढमाना अरियसाविका अरियाय वड्ढिया वड्ढति, सारादायिनी च होति वरादायिनी च कायस्सा"ति।

"सद्धाय सीलेन च या पवड्ढति [याध वड्ढति (सी॰)],
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभयं।
सा तादिसी सीलवती उपासिका,
आदीयती सारमिधेव अत्तनो"ति॥ चतुत्थं।

५. साकच्छसुत्तं

६५. [अ॰ नि॰ ५.१६४] "पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाकच्छो सब्रह्मचारीनं। कतमेहि

पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना च सीलसम्पन्नो होति, सीलसम्पदाय कथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च समाधिसम्पन्नो होति, समाधिसम्पदाय कथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च पञ्ञासम्पन्नो होति, पञ्ञासम्पदाय कथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिसम्पन्नो होति, विमुत्तिसम्पदाय कथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय कथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाकच्छो सब्रह्मचारीन''न्ति। पञ्चमं।

६. साजीवसुत्तं

६६. [अ० नि० ५.१६४] ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाजीवो सब्रह्मचारीनं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्तना च सीलसम्पन्नो होति, सीलसम्पदाय कथाय च कतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च समाधिसम्पन्नो होति, समाधिसम्पदाय कथाय च कतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च पञ्ञासम्पन्नो होति, पञ्ञासम्पदाय कथाय च कतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिसम्पन्नो होति, विमुत्तिसम्पदाय कथाय च कतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाय कथाय च कतं पञ्हं ब्याकत्ता होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाजीवो सब्रह्मचारीन''न्ति। छट्ठं।

७. पठमइद्धिपादसुत्तं

६७. ''यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा पञ्च धम्मे [इमे पञ्च धम्मे (क०)] भावेति, पञ्च धम्मे [इमे पञ्च धम्मे (क०)] बहुलीकरोति, तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं – दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता।

''कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेति, वीरियसमाधि...पे०... चित्तसमाधि... वीमंसासमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेति, उस्सोळ्हिञ्ञेव पञ्चमिं [उस्सोळ्हीयेव पञ्चमी (सी०)]। यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा इमे पञ्च धम्मे भावेति, इमे पञ्च धम्मे बहुलीकरोति, तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं – दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता''ति। सत्तमं।

८. दुतियइद्धिपादसुत्तं

६८. ''पुब्बेवाहं, भिक्खवे, सम्बोधा अनभिसम्बुद्धो बोधिसत्तोव समानो पञ्च धम्मे भावेसिं, पञ्च धम्मे बहुलीकासिं [बहुलिमकासिं (क०), बहुलमकासिं (क०)]। कतमे पञ्च? छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेसिं, वीरियसमाधि... चित्तसमाधि... वीमंसासमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेसिं, उस्सोळ्हिञ्ञेव पञ्चमिं। सो खो अहं, भिक्खवे, इमेसं उस्सोळ्हिपञ्चमानं धम्मानं भावितत्ता बहुलीकतत्ता यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेसिं अभिञ्ञासच्छिकिरियाय, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणिं सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खिं – 'अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभवेय्यं...पे०... याव ब्रह्मलोकापि कायेन वसं वत्तेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणिं सति सति आयतने।

''सो सचे आकङ्खिं...पे०... 'आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा

सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्य'न्ति, तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणिं सति सति आयतने''ति। अट्ठमं।

९. निब्बिदासुत्तं

६९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा भाविता बहुलीकता एकन्तनिब्बिदाय विरागाय निरोधाय उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तन्ति।

''कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु असुभानुपस्सी काये विहरति, आहारे पटिकूलसञ्ञी, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञी [अनभिरतिसञ्ञी (क०) अ० नि० ५.१२१-१२२, ३०३-३०४ पस्सितब्बं], सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी, मरणसञ्ञा खो पनस्स अज्झत्तं सूपट्ठिता होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा भाविता बहुलीकता एकन्तनिब्बिदाय विरागाय निरोधाय उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तन्ती''ति। नवमं।

१०. आसवक्खयसुत्तं

७०. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा भाविता बहुलीकता आसवानं खयाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु असुभानुपस्सी काये विहरति, आहारे पटिकूलसञ्ञी, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञी, सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी, मरणसञ्ञा खो पनस्स अज्झत्तं सूपट्ठिता होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा भाविता बहुलीकता आसवानं खयाय संवत्तन्ती''ति। दसमं।

सञ्ञावग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

द्वे च सञ्ञा द्वे वड्ढी च, साकच्छेन च साजीवं।
इद्धिपादा च द्वे वुत्ता, निब्बिदा चासवक्खयाति॥

(८) ३. योधाजीववग्गो

१. पठमचेतोविमुत्तिफलसुत्तं

७१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा भाविता बहुलीकता चेतोविमुत्तिफला च होन्ति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होन्ति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा च।

''कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु असुभानुपस्सी काये विहरति, आहारे पटिकूलसञ्ञी [पटिक्कूलसञ्ञी (सी० स्या० कं० पी०)], सब्बलोके अनभिरतसञ्ञी, सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी, मरणसञ्ञा खो पनस्स अज्झत्तं सूपट्ठिता होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा भाविता बहुलीकता चेतोविमुत्तिफला च होन्ति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होन्ति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा च। यतो खो, भिक्खवे, भिक्खु चेतोविमुत्तो च होति पञ्ञाविमुत्तो च होति – अयं वुच्चति, भिक्खवे, 'भिक्खु उक्खित्तपलिघो इतिपि, संकिण्णपरिखो [संकिण्णपरिक्खो (स्या० कं०)] इतिपि,

अब्बूळ्हेसिको इतिपि, निरग्गळो इतिपि, अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो इतिपि’’’।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु उक्खित्तपलिघो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो अविज्जा पहीना होति उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु उक्खित्तपलिघो होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु संकिण्णपरिखो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो पोनोभविको [पोनोब्भविको (स्या० क०)] जातिसंसारो पहीनो होति उच्छिन्नमूलो तालावत्थुकतो अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु संकिण्णपरिखो होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अब्बूळ्हेसिको होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो तण्हा पहीना होति उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अब्बूळ्हेसिको होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु निरग्गळो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानि पहीनानि होन्ति उच्छिन्नमूलानि तालावत्थुकतानि अनभावंकतानि आयतिं अनुप्पादधम्मानि। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु निरग्गळो होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो अस्मिमानो पहीनो होति उच्छिन्नमूलो तालावत्थुकतो अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो होती’’ति। पठमं।

२. दुतियचेतोविमुत्तिफलसुत्तं

७२. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा भाविता बहुलीकता चेतोविमुत्तिफला च होन्ति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होन्ति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा च। कतमे पञ्च? अनिच्चसञ्ञा, अनिच्चे दुक्खसञ्ञा, दुक्खे अनत्तसञ्ञा, पहानसञ्ञा, विरागसञ्ञा – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा भाविता बहुलीकता चेतोविमुत्तिफला च होन्ति चेतोविमुत्तिफलानिसंसा च, पञ्ञाविमुत्तिफला च होन्ति पञ्ञाविमुत्तिफलानिसंसा च। यतो खो, भिक्खवे, भिक्खु चेतोविमुत्तो च होति पञ्ञाविमुत्तो च – अयं वुच्चति, भिक्खवे, ‘भिक्खु उक्खित्तपलिघो इतिपि, संकिण्णपरिखो इतिपि, अब्बूळ्हेसिको इतिपि, निरग्गळो इतिपि, अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो इतिपि’’’।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु उक्खित्तपलिघो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो अविज्जा पहीना होति उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु उक्खित्तपलिघो होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु संकिण्णपरिखो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो पोनोभविको जातिसंसारो पहीनो होति उच्छिन्नमूलो तालावत्थुकतो अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु संकिण्णपरिखो होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अब्बूळ्हेसिको होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो तण्हा पहीना होति उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अब्बूळ्हेसिको होति।

‘‘कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु निरग्गळो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानि पहीनानि होन्ति

उच्छिन्नमूलानि तालावत्थुकतानि अनभावंकतानि आयतिं अनुप्पादधम्मानि। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु निरग्गळो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो होति? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो अस्मिमानो पहीनो होति उच्छिन्नमूलो तालावत्थुकतो अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अरियो पन्नद्धजो पन्नभारो विसंयुत्तो होती''ति। दुतियं।

३. पठमधम्मविहारीसुत्तं

७३. अथ खो अञ्ञतरो भिक्खु येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – '''धम्मविहारी, धम्मविहारी'ति, भन्ते, वुच्चति। कित्तावता नु खो, भन्ते, भिक्खु धम्मविहारी होती''ति?

''इध, भिक्खु, भिक्खु धम्मं परियापुणाति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं। सो ताय धम्मपरियत्तिया दिवसं अतिनामेति, रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं वुच्चति, भिक्खु – 'भिक्खु परियत्तिबहुलो, नो धम्मविहारी'''।

''पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति। सो ताय धम्मपञ्ञत्तिया दिवसं अतिनामेति, रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं वुच्चति, भिक्खु – 'भिक्खु पञ्ञत्तिबहुलो, नो धम्मविहारी'''।

''पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति। सो तेन सज्झायेन दिवसं अतिनामेति, रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं वुच्चति, भिक्खु – 'भिक्खु सज्झायबहुलो, नो धम्मविहारी'''।

''पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति। सो तेहि धम्मवितक्केहि दिवसं अतिनामेति, रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं वुच्चति, भिक्खु – 'भिक्खु वितक्कबहुलो, नो धम्मविहारी'''।

''इध, भिक्खु, भिक्खु धम्मं परियापुणाति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं। सो ताय धम्मपरियत्तिया न दिवसं अतिनामेति, नापि रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। एवं खो, भिक्खु, भिक्खु धम्मविहारी होति।

''इति खो, भिक्खु, देसितो मया परियत्तिबहुलो, देसितो पञ्ञत्तिबहुलो, देसितो सज्झायबहुलो, देसितो वितक्कबहुलो, देसितो धम्मविहारी। यं खो, भिक्खु [यं भिक्खु (स्या० कं० पी०)], सत्थारा करणीयं सावकानं हितेसिना अनुकम्पकेन अनुकम्पं उपादाय, कतं वो तं मया। एतानि, भिक्खु, रुक्खमूलानि, एतानि सुञ्ञागारानि। झायथ, भिक्खु, मा पमादत्थ, मा पच्छा विप्पटिसारिनो अहुवत्थ। अयं वो अम्हाकं अनुसासनी''ति। ततियं।

४. दुतियधम्मविहारीसुत्तं

७४. अथ खो अञ्‍ञतरो भिक्खु येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्‍नो खो सो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ‘‘‘धम्मविहारी धम्मविहारी’ति, भन्ते, वुच्‍चति। कित्तावता नु खो, भन्ते, भिक्खु धम्मविहारी होती’’ति?

‘‘इध, भिक्खु, भिक्खु धम्मं परियापुणाति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं; उत्तरि [उत्तरिं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] चस्स पञ्‍ञाय अत्थं नप्पजानाति। अयं वुच्‍चति, भिक्खु – ‘भिक्खु परियत्तिबहुलो, नो धम्मविहारी’’’।

‘‘पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेति, उत्तरि चस्स पञ्‍ञाय अत्थं नप्पजानाति। अयं वुच्‍चति, भिक्खु – ‘भिक्खु पञ्‍ञत्तिबहुलो, नो धम्मविहारी’’’।

‘‘पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोति, उत्तरि चस्स पञ्‍ञाय अत्थं नप्पजानाति। अयं वुच्‍चति, भिक्खु – ‘भिक्खु सज्झायबहुलो, नो धम्मविहारी’’’।

‘‘पुन चपरं, भिक्खु, भिक्खु यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति, उत्तरि चस्स पञ्‍ञाय अत्थं नप्पजानाति। अयं वुच्‍चति, भिक्खु – ‘भिक्खु वितक्कबहुलो, नो धम्मविहारी’’’।

‘‘इध, भिक्खु, भिक्खु धम्मं परियापुणाति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं; उत्तरि चस्स पञ्‍ञाय अत्थं पजानाति। एवं खो, भिक्खु, भिक्खु धम्मविहारी होति।

‘‘इति खो, भिक्खु, देसितो मया परियत्तिबहुलो, देसितो पञ्‍ञत्तिबहुलो, देसितो सज्झायबहुलो, देसितो वितक्कबहुलो, देसितो धम्मविहारी। यं खो, भिक्खु, सत्थारा करणीयं सावकानं हितेसिना अनुकम्पकेन अनुकम्पं उपादाय, कतं वो तं मया। एतानि, भिक्खु, रुक्खमूलानि, एतानि सुञ्‍ञागारानि। झायथ भिक्खु, मा पमादत्थ, मा पच्छा विप्पटिसारिनो अहुवत्थ। अयं वो अम्हाकं अनुसासनी’’ति। चतुत्थं।

५. पठमयोधाजीवसुत्तं

७५. ‘‘पञ्‍चिमे, भिक्खवे, योधाजीवा सन्तो संविज्‍जमाना लोकस्मिं। कतमे पञ्‍च? इध, भिक्खवे, एकच्‍चो योधाजीवो रजग्गञ्‍ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति न सन्थम्भति न सक्‍कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवरूपोपि [एवरूपो (सी॰) पु॰ प॰ १९३], भिक्खवे, इधेकच्‍चो [एकच्‍चो (सी॰)] योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो योधाजीवो सन्तो संविज्‍जमानो लोकस्मिं।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्‍चो योधाजीवो सहति रजग्गं; अपि च खो धजग्गञ्‍ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्‍कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्‍चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, दुतियो योधाजीवो सन्तो संविज्‍जमानो लोकस्मिं।

"पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो सहति रजग्गं सहति धजग्गं; अपि च खो उस्सारणञ्ञेव [उस्सादनंयेव (सी॰ पी॰)] सुत्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, ततियो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

"पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं; अपि च खो सम्पहारे हञ्ञति [आहञ्ञति (सी॰)] ब्यापज्जति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

"पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं, सहति सम्पहारं। सो तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अज्झावसति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च योधाजीवा सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं।

"एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे योधाजीवूपमा पुग्गला सन्तो संविज्जमाना भिक्खूसु। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु रजग्गञ्ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं [सन्तानेतुं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)]। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। किमस्स रजग्गस्मिं? इध, भिक्खवे, भिक्खु सुणाति – 'अमुकस्मिं नाम गामे वा निगमे वा इत्थी वा कुमारी वा अभिरूपा दस्सनीया पासादिका परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागता'ति। सो तं सुत्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। इदमस्स रजग्गस्मिं।

"सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो रजग्गञ्ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

"पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सहति रजग्गं; अपि च खो धजग्गञ्ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। किमस्स धजग्गस्मिं? इध, भिक्खवे, भिक्खु न हेव खो सुणाति – 'अमुकस्मिं नाम गामे वा निगमे वा इत्थी वा कुमारी वा अभिरूपा दस्सनीया पासादिका परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागता'ति; अपि च खो सामं पस्सति इत्थिं वा कुमारिं वा अभिरूपं दस्सनीयं पासादिकं परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतं। सो तं दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। इदमस्स धजग्गस्मिं।

"सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो सहति रजग्गं; अपि च खो धजग्गञ्ञेव दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, दुतियो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

"पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सहति रजग्गं, सहति धजग्गं; अपि च खो उस्सारणञ्ञेव सुत्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। किमस्स

उस्सारणाय? इध, भिक्खवे, भिक्खुं अरञ्ञगतं वा रुक्खमूलगतं वा सुञ्ञागारगतं वा मातुगामो उपसङ्कमित्वा ऊहसति [उहसति (क॰), ओहसति (स्या॰ कं॰) पु॰ प॰ १९६] उल्लपति उज्जग्घति उप्पण्डेति। सो मातुगामेन ऊहसियमानो उल्लपियमानो उज्जग्घियमानो उप्पण्डियमानो संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं। सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति। इदमस्स उस्सारणाय।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो सहति रजग्गं, सहति धजग्गं; अपि च खो उस्सारणञ्ञेव सुत्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति, न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, ततियो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं; अपि च खो सम्पहारे हञ्ञति ब्यापज्जति। किमस्स सम्पहारस्मिं? इध, भिक्खवे, भिक्खुं अरञ्ञगतं वा रुक्खमूलगतं वा सुञ्ञागारगतं वा मातुगामो उपसङ्कमित्वा अभिनिसीदति अभिनिपज्जति अज्झोत्थरति। सो मातुगामेन अभिनिसीदियमानो अभिनिपज्जियमानो अज्झोत्थरियमानो सिक्खं अपच्चक्खाय दुब्बल्यं अनाविकत्वा मेथुनं धम्मं पटिसेवति। इदमस्स सम्पहारस्मिं।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं, अपि च खो सम्पहारे हञ्ञति ब्यापज्जति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं, सहति सम्पहारं, सो तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अज्झावसति। किमस्स सङ्गामविजयस्मिं? इध, भिक्खवे, भिक्खु अरञ्ञगतं वा रुक्खमूलगतं वा सुञ्ञागारगतं वा मातुगामो उपसङ्कमित्वा अभिनिसीदति अभिनिपज्जति अज्झोत्थरति। सो मातुगामेन अभिनिसीदियमानो अभिनिपज्जियमानो अज्झोत्थरियमानो विनिवेठेत्वा विनिमोचेत्वा येन कामं पक्कमति। सो विवित्तं सेनासनं भजति अरञ्ञं रुक्खमूलं पब्बतं कन्दरं गिरिगुहं सुसानं वनपत्थं अब्भोकासं पलालपुञ्जं।

''सो अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा निसीदति पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा। सो अभिज्झं लोके पहाय विगताभिज्झेन चेतसा विहरति, अभिज्झाय चित्तं परिसोधेति; ब्यापादपदोसं पहाय अब्यापन्नचित्तो विहरति, सब्बपाणभूतहितानुकम्पी ब्यापादपदोसा चित्तं परिसोधेति; थिनमिद्धं पहाय विगतथिनमिद्धो विहरति आलोकसञ्ञी सतो सम्पजानो, थिनमिद्धा चित्तं परिसोधेति; उद्धच्चकुक्कुच्चं पहाय अनुद्धतो विहरति अज्झत्तं वूपसन्तचित्तो, उद्धच्चकुक्कुच्चा चित्तं परिसोधेति; विचिकिच्छं पहाय तिण्णविचिकिच्छो विहरति अकथंकथी कुसलेसु धम्मेसु, विचिकिच्छाय चित्तं परिसोधेति। सो इमे पञ्च नीवरणे पहाय चेतसो उपक्किलेसे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे विविच्चेव कामेहि...पे॰... पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति सतो सम्पजानो, सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति यं तं अरिया आचिक्खन्ति – 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी'ति ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना, पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति।

''सो एवं समाहिते चित्ते परिसुद्धे परियोदाते अनङ्गणे विगतूपक्किलेसे मुदुभूते कम्मनिये ठिते आनेञ्जप्पत्ते आसवानं खयञाणाय चित्तं अभिनिन्नामेति। सो 'इदं दुक्ख'न्ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खसमुदयो'ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधो'ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा'ति यथाभूतं पजानाति, 'इमे आसवा'ति यथाभूतं

पजानाति, 'अयं आसवसमुदयो'ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं आसवनिरोधो'ति यथाभूतं पजानाति, 'अयं आसवनिरोधगामिनी पटिपदा'ति यथाभूतं पजानाति। तस्स एवं जानतो एवं पस्सतो कामासवापि चित्तं विमुच्चति, भवासवापि चित्तं विमुच्चति, अविज्जासवापि चित्तं विमुच्चति, विमुत्तस्मिं विमुत्तमिति ञाणं होति। 'खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया'ति पजानाति। इदमस्स सङ्गामविजयस्मिं।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो सहति रजग्गं, सहति धजग्गं, सहति उस्सारणं, सहति सम्पहारं, सो तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अज्झावसति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च योधाजीवूपमा पुग्गला सन्तो संविज्जमाना भिक्खूसू''ति। पञ्चमं।

६. दुतिययोधाजीवसुत्तं

७६. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, योधाजीवा सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, एकच्चो योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति। सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति। तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे हनन्ति परियापादेन्ति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति। सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति। तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति [उपलिखन्ति (क०)], तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति। सो ञातकेहि नीयमानो अप्पत्वाव ञातके अन्तरामग्गे कालं करोति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, दुतियो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति। सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति। तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति, तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति। तमेनं ञातका उपट्ठहन्ति परिचरन्ति। सो ञातकेहि उपट्ठहियमानो परिचरियमानो तेनेव आबाधेन कालं करोति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, ततियो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति। सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति। तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति, तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति। तमेनं ञातका उपट्ठहन्ति परिचरन्ति। सो ञातकेहि उपट्ठहियमानो परिचरियमानो वुट्ठाति तम्हा आबाधा। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति। सो तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अज्झावसति। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो योधाजीवो होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो योधाजीवो सन्तो संविज्जमानो लोकस्मिं। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च योधाजीवा सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे योधाजीवूपमा पुग्गला सन्तो संविज्जमाना भिक्खूसु। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे,

भिक्खु अञ्ञतरं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति। सो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय तमेव गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति अरक्खितेनेव कायेन अरक्खिताय वाचाय अरक्खितेन चित्तेन अनुपट्ठिताय सतिया असंवुतेहि इन्द्रियेहि। सो तत्थ पस्सति मातुगामं दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा। तस्स तं मातुगामं दिस्वा दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा रागो चित्तं अनुद्धंसेति। सो रागानुद्धंसितेन चित्तेन सिक्खं अपच्चक्खाय दुब्बल्यं अनाविकत्वा मेथुनं धम्मं पटिसेवति।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति, सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति, तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे हनन्ति परियापादेन्ति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु अञ्ञतरं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति। सो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय तमेव गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति अरक्खितेनेव कायेन अरक्खिताय वाचाय अरक्खितेन चित्तेन अनुपट्ठिताय सतिया असंवुतेहि इन्द्रियेहि। सो तत्थ पस्सति मातुगामं दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा। तस्स तं मातुगामं दिस्वा दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा रागो चित्तं अनुद्धंसेति। सो रागानुद्धंसितेन चित्तेन परिडय्हतेव कायेन परिडय्हति चेतसा। तस्स एवं होति – 'यंनूनाहं आरामं गन्त्वा भिक्खूनं आरोचेय्यं – रागपरियुट्ठितोम्हि [रागायितोम्हि (सी॰ स्या॰ कं॰)], आवुसो, रागपरेतो, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं; सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी'ति। सो आरामं गच्छन्तो अप्पत्वाव आरामं अन्तरामग्गे सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति, सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति, तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति, तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति। सो ञातकेहि नीयमानो अप्पत्वाव ञातके अन्तरामग्गे कालं करोति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, दुतियो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु अञ्ञतरं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति। सो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय तमेव गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति अरक्खितेनेव कायेन अरक्खिताय वाचाय अरक्खितेन चित्तेन अनुपट्ठिताय सतिया असंवुतेहि इन्द्रियेहि। सो तत्थ पस्सति मातुगामं दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा। तस्स तं मातुगामं दिस्वा दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा रागो चित्तं अनुद्धंसेति। सो रागानुद्धंसितेन चित्तेन परिडय्हतेव कायेन परिडय्हति चेतसा। तस्स एवं होति – 'यंनूनाहं आरामं गन्त्वा भिक्खूनं आरोचेय्यं – रागपरियुट्ठितोम्हि, आवुसो, रागपरेतो, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं; सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी'ति। सो आरामं गन्त्वा भिक्खूनं आरोचेति – 'रागपरियुट्ठितोम्हि, आवुसो, रागपरेतो, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं; सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी''ति।

''तमेनं सब्रह्मचारी ओवदन्ति अनुसासन्ति – 'अप्पस्सादा, आवुसो, कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा [बहूपायासा (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰) पाचि॰ ४१७; चूळव॰ ६५; म॰ नि॰ १.२३४], आदीनवो एत्थ भिय्यो। अट्ठिकङ्कलूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। मंसपेसूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। तिणुक्कूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अङ्गारकासूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। सुपिनकूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। याचितकूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो।

रुक्खफलूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। असिसूनूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। सत्तिसूलूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। सप्पसिरूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अभिरमतायस्मा ब्रह्मचरिये; मायस्मा सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्ती''ति।

''सो सब्रह्मचारीहि एवं ओवदियमानो एवं अनुसासियमानो एवमाह – 'किञ्चापि, आवुसो, अप्पस्सादा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो; अथ खो नेवाहं सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं, सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी''ति। सो सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति, सो तस्मिं सङ्गामे उस्सहति वायमति, तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति, तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति, तमेनं ञातका उपट्ठहन्ति परिचरन्ति। सो ञातकेहि उपट्ठहियमानो परिचरियमानो तेनेव आबाधेन कालं करोति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, ततियो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु अञ्ञतरं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति। सो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय तमेव गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति अरक्खितेनेव कायेन अरक्खिताय वाचाय अरक्खितेन चित्तेन अनुपट्ठिताय सतिया असंवुतेहि इन्द्रियेहि। सो तत्थ पस्सति मातुगामं दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा। तस्स तं मातुगामं दिस्वा दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा रागो चित्तं अनुद्धंसेति। सो रागानुद्धंसितेन चित्तेन परिडय्हतेव कायेन परिडय्हति चेतसा। तस्स एवं होति – 'यंनूनाहं आरामं गन्त्वा भिक्खूनं आरोचेय्यं – रागपरियुट्ठितोम्हि, आवुसो, रागपरेतो, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं; सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी'ति। सो आरामं गन्त्वा भिक्खूनं आरोचेति – 'रागपरियुट्ठितोम्हि, आवुसो, रागपरेतो, न सक्कोमि ब्रह्मचरियं सन्धारेतुं; सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी''ति।

''तमेनं सब्रह्मचारी ओवदन्ति अनुसासन्ति – 'अप्पस्सादा, आवुसो, कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अट्ठिकङ्कलूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। मंसपेसूपमा कामा वुत्ता भगवता...पे०... तिणुक्कूपमा कामा वुत्ता भगवता... अङ्गारकासूपमा कामा वुत्ता भगवता... सुपिनकूपमा कामा वुत्ता भगवता... याचितकूपमा कामा वुत्ता भगवता... रुक्खफलूपमा कामा वुत्ता भगवता... असिसूनूपमा कामा वुत्ता भगवता... सत्तिसूलूपमा कामा वुत्ता भगवता... सप्पसिरूपमा कामा वुत्ता भगवता बहुदुक्खा बहुपायासा, आदीनवो एत्थ भिय्यो। अभिरमतायस्मा ब्रह्मचरिये; मायस्मा सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्ती''ति।

''सो सब्रह्मचारीहि एवं ओवदियमानो एवं अनुसासियमानो एवमाह – 'उस्सहिस्सामि, आवुसो, वायमिस्सामि, आवुसो, अभिरमिस्सामि, आवुसो! न दानाहं, आवुसो, सिक्खादुब्बल्यं आविकत्वा सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी''ति।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति, सो तस्मिं

सङ्गामे उस्सहति वायमति, तमेनं उस्सहन्तं वायमन्तं परे उपलिक्खन्ति, तमेनं अपनेन्ति; अपनेत्वा ञातकानं नेन्ति, तमेनं ञातका उपट्ठहन्ति परिचरन्ति। सो ञातकेहि उपट्ठहियमानो परिचरियमानो वुट्ठाति तम्हा आबाधा; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु अञ्ञतरं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति। सो पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय तमेव गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति रक्खितेनेव कायेन रक्खिताय वाचाय रक्खितेन चित्तेन उपट्ठिताय सतिया संवुतेहि इन्द्रियेहि। सो चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति; रक्खति चक्खुन्द्रियं; चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जति। सोतेन सद्दं सुत्वा... घानेन गन्धं घायित्वा ... जिव्हाय रसं सायित्वा... कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा... मनसा धम्मं विञ्ञाय न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं मनिन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति; रक्खति मनिन्द्रियं; मनिन्द्रिये संवरं आपज्जति। सो पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो विवित्तं सेनासनं भजति अरञ्ञं रुक्खमूलं पब्बतं कन्दरं गिरिगुहं सुसानं वनपत्थं अब्भोकासं पलालपुञ्जं। सो अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा निसीदति पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा। सो अभिज्झं लोके पहाय...पे०... सो इमे पञ्च नीवरणे पहाय चेतसो उपक्किलेसे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे विविच्चेव कामेहि...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति।

''सो एवं समाहिते चित्ते परिसुद्धे परियोदाते अनङ्गणे विगतूपक्किलेसे मुदुभूते कम्मनिये ठिते आनेञ्जप्पत्ते आसवानं खयञाणाय चित्तं अभिनिन्नामेति। सो 'इदं दुक्ख'न्ति यथाभूतं पजानाति...पे०... नापरं इत्थत्तायाति पजानाति''।

''सेय्यथापि सो, भिक्खवे, योधाजीवो असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा वियूळ्हं सङ्गामं ओतरति, सो तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अज्झावसति; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। एवरूपोपि, भिक्खवे, इधेकच्चो पुग्गलो होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो योधाजीवूपमो पुग्गलो सन्तो संविज्जमानो भिक्खूसु। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च योधाजीवूपमा पुग्गला सन्तो संविज्जमाना भिक्खूसू''ति। छट्ठं।

७. पठमअनागतभयसुत्तं

७७. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, अनागतभयानि सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन [आरञ्ञकेन (सब्बत्थ अ० नि० ५.१८१; परि० ४४३)] भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, आरञ्ञिको भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि एकको अरञ्ञे विहरामि। एककं खो पन मं [एककं खो पन (स्या० कं०)] अरञ्ञे विहरन्तं अहि वा मं डंसेय्य, विच्छिको [विच्छिका (स्या०)] वा मं डंसेय्य, सतपदी वा मं डंसेय्य, तेन मे अस्स कालङ्किरिया, सो ममस्स अन्तरायो; हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया'ति। इदं, भिक्खवे, पठमं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, आरञ्ञिको भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि एकको अरञ्ञे विहरामि। एकको खो पनाहं अरञ्ञे विहरन्तो उपक्खलित्वा वा पपतेय्यं, भत्तं वा भुत्तं मे ब्यापज्जेय्य, पित्तं वा मे कुप्पेय्य, सेम्हं वा मे कुप्पेय्य, सत्थका वा मे वाता कुप्पेय्युं, तेन मे अस्स कालङ्किरिया, सो ममस्स अन्तरायो; हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया'ति। इदं, भिक्खवे, दुतियं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, आरञ्ञिको भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि एकको अरञ्ञे विहरामि। एकको खो पनाहं अरञ्ञे विहरन्तो वाळेहि समागच्छेय्यं, सीहेन वा ब्यग्घेन वा दीपिना वा अच्छेन वा तरच्छेन वा, ते मं जीविता वोरोपेय्युं, तेन मे अस्स कालङ्किरिया, सो ममस्स अन्तरायो; हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया'ति। इदं, भिक्खवे, ततियं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, आरञ्ञिको भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि एकको अरञ्ञे विहरामि। एकको खो पनाहं अरञ्ञे विहरन्तो माणवेहि समागच्छेय्यं कतकम्मेहि वा अकतकम्मेहि वा, ते मं जीविता वोरोपेय्युं, तेन मे अस्स कालङ्किरिया, सो ममस्स अन्तरायो; हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया'ति। इदं, भिक्खवे, चतुत्थं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, आरञ्ञिको भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि एकको अरञ्ञे विहरामि। सन्ति खो पनारञ्ञे वाळा अमनुस्सा, ते मं जीविता वोरोपेय्युं, तेन मे अस्स कालङ्किरिया, सो ममस्स अन्तरायो; हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया'ति। इदं, भिक्खवे, पञ्चमं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अनागतभयानि सम्पस्समानेन अलमेव आरञ्ञिकेन भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया''ति। सत्तमं।

८. दुतियअनागतभयसुत्तं

७८. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, अनागतभयानि सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि दहरो युवा सुसुकाळकेसो भद्रेन योब्बनेन समन्नागतो पठमेन वयसा। होति खो पन सो समयो यं इमं कायं जरा फुसति। जिण्णेन खो पन जराय अभिभूतेन न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसि कातुं, न सुकरानि अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो; हन्दाहं पटिकच्चेव [पटिगच्चेव (सी॰)] वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स

सच्छिकिरियाय, येनाहं धम्मेन समन्नागतो जिण्णकोपि फासुं [फासु (पी० क०)] विहरिस्सामी'ति। इदं, भिक्खवे, पठमं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'अहं खो एतरहि अप्पाबाधो अप्पातङ्को समवेपाकिनिया गहणिया समन्नागतो नातिसीताय नाच्चुण्हाय मज्झिमाय पधानक्खमाय। होति खो पन सो समयो यं इमं कायं ब्याधि फुसति। ब्याधितेन खो पन ब्याधिना अभिभूतेन [ब्याधाभिभूतेन (सी० पी० क०)] न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसि कातुं, न सुकरानि अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो; हन्दाहं पटिकच्चेव वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय, येनाहं धम्मेन समन्नागतो ब्याधितोपि फासुं विहरिस्सामी'ति। इदं, भिक्खवे, दुतियं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'एतरहि खो सुभिक्खं सुसस्सं सुलभपिण्डं, सुकरं उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। होति खो पन सो समयो यं दुब्भिक्खं होति दुस्सस्सं दुल्लभपिण्डं, न सुकरं उञ्छेन पग्गहेन यापेतुं। दुब्भिक्खे खो पन मनुस्सा येन सुभिक्खं तेन सङ्कमन्ति [तेनुपसङ्कमन्ति (क०)]। तत्थ सङ्गणिकविहारो होति आकिण्णविहारो। सङ्गणिकविहारे खो पन सति आकिण्णविहारे न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसि कातुं, न सुकरानि अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो; हन्दाहं पटिकच्चेव वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय, येनाहं धम्मेन समन्नागतो दुब्भिक्खेपि फासु विहरिस्सामी'ति। इदं, भिक्खवे, ततियं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'एतरहि खो मनुस्सा समग्गा सम्मोदमाना अविवदमाना खीरोदकीभूता अञ्ञमञ्ञं पियचक्खूहि सम्पस्सन्ता विहरन्ति। होति खो पन सो समयो यं भयं होति अटविसङ्कोपो, चक्कसमारूळ्हा जानपदा परियायन्ति। भये खो पन सति मनुस्सा येन खेमं तेन सङ्कमन्ति। तत्थ सङ्गणिकविहारो होति आकिण्णविहारो। सङ्गणिकविहारे खो पन सति आकिण्णविहारे न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसि कातुं, न सुकरानि अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो; हन्दाहं पटिकच्चेव वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय, येनाहं धम्मेन समन्नागतो भयेपि फासुं विहरिस्सामी'ति। इदं, भिक्खवे, चतुत्थं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु इति पटिसञ्चिक्खति – 'एतरहि खो सङ्घो समग्गो सम्मोदमानो अविवदमानो एकुद्देसो फासु विहरति। होति खो पन सो समयो यं सङ्घो भिज्जति। सङ्घे खो पन भिन्ने न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसि कातुं, न सुकरानि अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो; हन्दाहं पटिकच्चेव वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय, येनाहं धम्मेन समन्नागतो भिन्नेपि सङ्घे फासुं विहरिस्सामी'ति। इदं, भिक्खवे, पञ्चमं अनागतभयं सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स

सच्छिकिरियाय।

‘‘इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अनागतभयानि सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया’’ति। अट्ठमं।

९. ततियअनागतभयसुत्तं

७९. ‘‘पञ्चिमानि, भिक्खवे, अनागतभयानि एतरहि असमुप्पन्नानि आयतिं समुप्पज्जिस्सन्ति। तानि वो [खो (कत्थचि)] पटिबुज्झितब्बानि; पटिबुज्झित्वा च तेसं पहानाय वायमितब्बं।

‘‘कतमानि पञ्च? भविस्सन्ति, भिक्खवे, भिक्खू अनागतमद्धानं अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा अञ्ञे उपसम्पादेस्सन्ति। तेपि [ते (सी॰)] न सक्खिस्सन्ति विनेतुं अधिसीले अधिचित्ते अधिपञ्ञाय। तेपि भविस्सन्ति अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा अञ्ञे उपसम्पादेस्सन्ति। तेपि [ते (?)] न सक्खिस्सन्ति विनेतुं अधिसीले अधिचित्ते अधिपञ्ञाय। तेपि भविस्सन्ति अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। इति खो, भिक्खवे, धम्मसन्दोसा विनयसन्दोसो; विनयसन्दोसा धम्मसन्दोसो। इदं, भिक्खवे, पठमं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा अञ्ञेसं निस्सयं दस्सन्ति। तेपि न सक्खिस्सन्ति विनेतुं अधिसीले अधिचित्ते अधिपञ्ञाय। तेपि भविस्सन्ति अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा अञ्ञेसं निस्सयं दस्सन्ति। तेपि न सक्खिस्सन्ति विनेतुं अधिसीले अधिचित्ते अधिपञ्ञाय। तेपि भविस्सन्ति अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। इति खो, भिक्खवे, धम्मसन्दोसा विनयसन्दोसो; विनयसन्दोसा धम्मसन्दोसो। इदं, भिक्खवे, दुतियं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा अभिधम्मकथं वेदल्लकथं कथेन्ता कण्हधम्मं ओक्कममाना न बुज्झिस्सन्ति। इति खो, भिक्खवे, धम्मसन्दोसा विनयसन्दोसो; विनयसन्दोसा धम्मसन्दोसो। इदं, भिक्खवे, ततियं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा ये ते सुत्तन्ता तथागतभासिता गम्भीरा गम्भीरत्था लोकुत्तरा सुञ्ञताप्पटिसंयुत्ता, तेसु भञ्ञमानेसु न सुस्सूसिस्सन्ति, न सोतं ओदहिस्सन्ति, न अञ्ञा

चित्तं उपट्ठपेस्सन्ति, न च ते धम्मे उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं मञ्ञिस्सन्ति। ये पन ते सुत्तन्ता कविता [कविकता (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰, सं॰ नि॰ २.२२९) टीका ओलोकेतब्बा] कावेय्या चित्तक्खरा चित्तब्यञ्जना बाहिरका सावकभासिता, तेसु भञ्ञमानेसु सुस्सूसिस्सन्ति, सोतं ओदहिस्सन्ति, अञ्ञा चित्तं उपट्ठपेस्सन्ति, ते च धम्मे उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं मञ्ञिस्सन्ति। इति खो, भिक्खवे, धम्मसन्दोसा विनयसन्दोसो; विनयसन्दोसा धम्मसन्दोसो। इदं, भिक्खवे, चतुत्थं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा। ते अभावितकाया समाना अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा थेरा भिक्खू बाहुलिका [बाहुल्लिका (स्या॰ कं॰) अ॰ नि॰ २.४९; ३.९६] भविस्सन्ति साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा, न वीरियं आरभिस्सन्ति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। तेसं पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जिस्सति। सापि भविस्सति बाहुलिका साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा, न वीरियं आरभिस्सति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। इति खो, भिक्खवे, धम्मसन्दोसा विनयसन्दोसो; विनयसन्दोसा धम्मसन्दोसो। इदं, भिक्खवे, पञ्चमं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं। ''इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अनागतभयानि एतरहि असमुप्पन्नानि आयतिं समुप्पज्जिस्सन्ति। तानि वो पटिबुज्झितब्बानि; पटिबुज्झित्वा च तेसं पहानाय वायमितब्ब''न्ति। नवमं।

१०. चतुत्थअनागतभयसुत्तं

८०. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, अनागतभयानि एतरहि असमुप्पन्नानि आयतिं समुप्पज्जिस्सन्ति। तानि वो पटिबुज्झितब्बानि; पटिबुज्झित्वा च तेसं पहानाय वायमितब्बं।

''कतमानि पञ्च? भविस्सन्ति, भिक्खवे, भिक्खू अनागतमद्धानं चीवरे कल्याणकामा। ते चीवरे कल्याणकामा समाना रिञ्चिस्सन्ति पंसुकूलिकत्तं, रिञ्चिस्सन्ति अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि; गामनिगमराजधानीसु ओसरित्वा वासं कप्पेस्सन्ति, चीवरहेतु च अनेकविहितं अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जिस्सन्ति। इदं, भिक्खवे, पठमं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं पिण्डपाते कल्याणकामा। ते पिण्डपाते कल्याणकामा समाना रिञ्चिस्सन्ति पिण्डपातिकत्तं, रिञ्चिस्सन्ति अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि; गामनिगमराजधानीसु ओसरित्वा वासं कप्पेस्सन्ति जिव्हग्गेन रसग्गानि परियेसमाना, पिण्डपातहेतु च अनेकविहितं अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जिस्सन्ति। इदं, भिक्खवे, दुतियं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं सेनासने कल्याणकामा। ते सेनासने कल्याणकामा समाना रिञ्चिस्सन्ति रुक्खमूलिकत्तं [आरञ्ञकत्तं (स्या॰ कं॰)], रिञ्चिस्सन्ति अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि;

गामनिगमराजधानीसु ओसरित्वा वासं कप्पेस्सन्ति, सेनासनहेतु च अनेकविहितं अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जिस्सन्ति। इदं, भिक्खवे, ततियं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं भिक्खुनीसिक्खमानासमणुद्देसेहि संसट्ठा विहरिस्सन्ति। भिक्खुनीसिक्खमानासमणुद्देसेहि संसग्गे खो पन, भिक्खवे, सति एतं पाटिकङ्खं – 'अनभिरता वा ब्रह्मचरियं चरिस्सन्ति, अञ्ञतरं वा संकिलिट्ठं आपत्तिं आपज्जिस्सन्ति, सिक्खं वा पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सन्ति'। इदं, भिक्खवे, चतुत्थं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं आरामिकसमणुद्देसेहि संसट्ठा विहरिस्सन्ति। आरामिकसमणुद्देसेहि संसग्गे खो पन, भिक्खवे, सति एतं पाटिकङ्खं – 'अनेकविहितं सन्निधिकारपरिभोगं अनुयुत्ता विहरिस्सन्ति, ओळारिकम्पि निमित्तं करिस्सन्ति, पथवियापि हरितग्गेपि'। इदं, भिक्खवे, पञ्चमं अनागतभयं एतरहि असमुप्पन्नं आयतिं समुप्पज्जिस्सति। तं वो पटिबुज्झितब्बं; पटिबुज्झित्वा च तस्स पहानाय वायमितब्बं।

''इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अनागतभयानि एतरहि असमुप्पन्नानि आयतिं समुप्पज्जिस्सन्ति। तानि वो पटिबुज्झितब्बानि; पटिबुज्झित्वा च तेसं पहानाय वायमितब्ब''न्ति। दसमं।

योधाजीववग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

द्वे चेतोविमुत्तिफला, द्वे च धम्मविहारिनो।
योधाजीवा च द्वे वुत्ता, चत्तारो च अनागताति॥

(९) ४. थेरवग्गो

१. रजनीयसुत्तं

८१. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? रजनीये रज्जति, दुस्सनीये [दुसनीये (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] दुस्सति, मोहनीये मुय्हति, कुप्पनीये [कुपनीये (सी॰ स्या॰ कं॰), कोपनीये (पी॰)] कुप्पति, मदनीये मज्जति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? रजनीये न रज्जति, दुस्सनीये न दुस्सति, मोहनीये न मुय्हति, कुप्पनीये न कुप्पति, मदनीये न मज्जति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। पठमं।

२. वीतरागसुत्तं

८२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? अवीतरागो होति, अवीतदोसो होति, अवीतमोहो होति, मक्खी च, पळासी च – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? वीतरागो होति, वीतदोसो होति, वीतमोहो होति, अमक्खी च, अपळासी च – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। दुतियं।

३. कुहकसुत्तं

८३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? कुहको च होति, लपको च, नेमित्तिको [निमित्तिको (स्या० कं०), निमित्तको (क०)] च, निप्पेसिको च, लाभेन च लाभं निजिगीसिता [निजिगिंसिता (सी० स्या० कं० पी०)] – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? न च कुहको होति, न च लपको, न च नेमित्तिको, न च निप्पेसिको, न च लाभेन लाभं निजिगीसिता – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। ततियं।

४. अस्सद्धसुत्तं

८४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति, अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? अस्सद्धो होति, अहिरिको होति, अनोत्तप्पी होति, कुसीतो होति, दुप्पञ्ञो होति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो होति, हिरीमा होति, ओत्तप्पी होति, आरद्धवीरियो होति, पञ्ञवा होति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। चतुत्थं।

५. अक्खमसुत्तं

८५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो

फोट्ठब्बानं – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? खमो होति रूपानं, खमो सद्दानं, खमो गन्धानं, खमो रसानं, खमो फोट्ठब्बानं – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। पञ्चमं।

६. पटिसम्भिदापत्तसुत्तं

८६. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? अत्थपटिसम्भिदापत्तो होति, धम्मपटिसम्भिदापत्तो होति, निरुत्तिपटिसम्भिदापत्तो होति, पटिभानपटिसम्भिदापत्तो होति, यानि तानि सब्रह्मचारीनं उच्चावचानि किंकरणीयानि तत्थ दक्खो होति अनलसो तत्रुपायाय वीमंसाय समन्नागतो अलं कातुं अलं संविधातुं – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। छट्ठं।

७. सीलवन्तसुत्तं

८७. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति। आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं [सात्था सब्यञ्जना (सी॰)] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता [धता (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो पोरिया वाचाय समन्नागतो विस्सट्ठाय अनेलगळाय अत्थस्स विञ्ञापनिया; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। सत्तमं।

८. थेरसुत्तं

८८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु बहुजनअहिताय पटिपन्नो होति बहुजनअसुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं।

''कतमेहि पञ्चहि? थेरो होति रत्तञ्ञू चिरपब्बजितो; ञातो होति यसस्सी सगहट्ठपब्बजितानं [गहट्ठपब्बजितानं (सी॰)] बहुजनपरिवारो; लाभी होति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया अप्पटिविद्धा; मिच्छादिट्ठिको होति विपरीतदस्सनो, सो बहुजनं सद्धम्मा वुट्ठापेत्वा असद्धम्मे पतिट्ठापेति। थेरो भिक्खु रत्तञ्ञू

चिरपब्बजितो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, ञातो थेरो भिक्खु यसस्सी सगहट्ठपब्बजितानं बहुजनपरिवारो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, लाभी थेरो भिक्खु चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, बहुस्सुतो थेरो भिक्खु सुतधरो सुतसन्निचयो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु बहुजनअहिताय पटिपन्नो होति बहुजनअसुखाय बहुनो जनस्स अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु बहुजनहिताय पटिपन्नो होति बहुजनसुखाय बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं।

''कतमेहि पञ्चहि? थेरो होति रत्तञ्ञू चिरपब्बजितो; ञातो होति यसस्सी सगहट्ठपब्बजितानं बहुजनपरिवारो; लाभी होति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; सम्मादिट्ठिको होति अविपरीतदस्सनो, सो बहुजनं असद्धम्मा वुट्ठापेत्वा सद्धम्मे पतिट्ठापेति। थेरो भिक्खु रत्तञ्ञू चिरपब्बजितो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, ञातो थेरो भिक्खु यसस्सी सगहट्ठपब्बजितानं बहुजनपरिवारो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, लाभी थेरो भिक्खु चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति, बहुस्सुतो थेरो भिक्खु सुतधरो सुतसन्निचयो इतिपिस्स दिट्ठानुगतिं आपज्जन्ति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु बहुजनहिताय पटिपन्नो होति बहुजनसुखाय बहुनो जनस्स अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सान''न्ति। अट्ठमं।

९. पठमसेखसुत्तं

८९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? कम्मारामता, भस्सारामता, निद्दारामता, सङ्गणिकारामता, यथाविमुत्तं चित्तं न पच्चवेक्खति – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? न कम्मारामता, न भस्सारामता, न निद्दारामता, न सङ्गणिकारामता, यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खति – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ती''ति। नवमं।

१०. दुतियसेखसुत्तं

९०. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, सेखो भिक्खु बहुकिच्चो होति बहुकरणीयो वियत्तो किंकरणीयेसु; रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु अप्पमत्तकेन कम्मेन दिवसं अतिनामेति; रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु संसट्ठो विहरति गहट्ठपब्बजितेहि अननुलोमिकेन गिहिसंसग्गेन; रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु अकालेन गामं पविसति, अतिदिवा पटिक्कमति; रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु यायं कथा आभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया, सेय्यथिदं – अप्पिच्छकथा सन्तुट्ठिकथा पविवेककथा असंसग्गकथा वीरियारम्भकथा सीलकथा समाधिकथा पञ्ञाकथा विमुत्तिकथा विमुत्तिञाणदस्सनकथा, एवरूपिया कथाय न निकामलाभी होति न अकिच्छलाभी न अकसिरलाभी [किच्छलाभी कसिरलाभी (सी॰ स्या॰ कं॰ पी)]; रिञ्चति पटिसल्लानं, नानुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सेखस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, सेखो भिक्खु न बहुकिच्चो होति न बहुकरणीयो वियत्तो किंकरणीयेसु; न रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु न अप्पमत्तकेन कम्मेन दिवसं अतिनामेति; न रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु असंसट्ठो विहरति गहट्ठपब्बजितेहि अननुलोमिकेन गिहिसंसग्गेन; न रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु न अतिकालेन गामं पविसति, नातिदिवा पटिक्कमति; न रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सेखो भिक्खु यायं कथा आभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया, सेय्यथिदं – अप्पिच्छकथा सन्तुट्ठिकथा पविवेककथा असंसग्गकथा वीरियारम्भकथा सीलकथा समाधिकथा पञ्ञाकथा विमुत्तिकथा विमुत्तिञाणदस्सनकथा, एवरूपिया कथाय निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; न रिञ्चति पटिसल्लानं, अनुयुञ्जति अज्झत्तं चेतोसमथं। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ती''ति। दसमं।

थेरवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

रजनीयो वीतरागो, कुहकास्सद्धअक्खमा।
पटिसम्भिदा च सीलेन, थेरो सेखा परे दुवेति॥

(१०) ५. ककुधवग्गो

१. पठमसम्पदासुत्तं

९१. ''पञ्चिमा, भिक्खवे, सम्पदा। कतमा पञ्च? सद्धासम्पदा, सीलसम्पदा, सुतसम्पदा, चागसम्पदा, पञ्ञासम्पदा – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सम्पदा''ति। पठमं।

२. दुतियसम्पदासुत्तं

९२. ''पञ्चिमा, भिक्खवे, सम्पदा। कतमा पञ्च? सीलसम्पदा, समाधिसम्पदा, पञ्ञासम्पदा, विमुत्तिसम्पदा, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदा – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सम्पदा''ति। दुतियं।

३. ब्याकरणसुत्तं

९३. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, अञ्ञाब्याकरणानि। कतमानि पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता अञ्ञं ब्याकरोति; पापिच्छो इच्छापकतो अञ्ञं ब्याकरोति; उम्मादा चित्तक्खेपा अञ्ञं ब्याकरोति; अधिमानेन अञ्ञं ब्याकरोति; सम्मदेव अञ्ञं ब्याकरोति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च अञ्ञाब्याकरणानी''ति। ततियं।

४. फासुविहारसुत्तं

९४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, फासुविहारा। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति; वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं... ततियं झानं... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति; आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च फासुविहारा''ति। चतुत्थं।

५. अकुप्पसुत्तं

९५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अत्थपटिसम्भिदापत्तो होति, धम्मपटिसम्भिदापत्तो होति, निरुत्तिपटिसम्भिदापत्तो होति, पटिभानपटिसम्भिदापत्तो होति, यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झती''ति। पञ्चमं।

६. सुतधरसुत्तं

९६. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं आसेवन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अप्पट्ठो होति अप्पकिच्चो सुभरो सुसन्तोसो जीवितपरिक्खारेसु; अप्पाहारो होति अनोदरिकत्तं अनुयुत्तो; अप्पमिद्धो होति जागरियं अनुयुत्तो; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; यथाविमुत्तं चित्तं

पच्चवेक्खति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं आसेवन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झती''ति। छट्ठं।

७. कथासुत्तं

९७. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं भावेन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अप्पट्ठो होति अप्पकिच्चो सुभरो सुसन्तोसो जीवितपरिक्खारेसु; अप्पाहारो होति अनोदरिकत्तं अनुयुत्तो; अप्पमिद्धो होति जागरियं अनुयुत्तो; यायं कथा आभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया, सेय्यथिदं – अप्पिच्छकथा…पे॰… विमुत्तिञाणदस्सनकथा, एवरूपिया कथाय निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं भावेन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झती''ति। सत्तमं।

८. आरञ्ञकसुत्तं

९८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं बहुलीकरोन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अप्पट्ठो होति अप्पकिच्चो सुभरो सुसन्तोसो जीवितपरिक्खारेसु; अप्पाहारो होति अनोदरिकत्तं अनुयुत्तो; अप्पमिद्धो होति जागरियं अनुयुत्तो; आरञ्ञको होति पन्तसेनासनो; यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आनापानस्सतिं बहुलीकरोन्तो नचिरस्सेव अकुप्पं पटिविज्झती''ति। अट्ठमं।

९. सीहसुत्तं

९९. ''सीहो, भिक्खवे, मिगराजा सायन्हसमयं आसया निक्खमति; आसया निक्खमित्वा विजम्भति; विजम्भित्वा समन्ता चतुद्दिसं [चतुद्दिसा (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰) अ॰ नि॰ ४.३३; सं॰ नि॰ ३.७८ पस्सितब्बं] अनुविलोकेति; समन्ता चतुद्दिसं [चतुद्दिसा (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰) अ॰ नि॰ ४.३३; सं॰ नि॰ ३.७८ पस्सितब्बं] अनुविलोकेत्वा तिक्खत्तुं सीहनादं नदति; तिक्खत्तुं सीहनादं नदित्वा गोचराय पक्कमति। सो हत्थिस्स चेपि पहारं देति, सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति, नो असक्कच्चं; महिंसस्स [महिसस्स (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] चेपि पहारं देति, सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति, नो असक्कच्चं; गवस्स चेपि पहारं देति, सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति, नो असक्कच्चं; दीपिस्स चेपि पहारं देति, सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति, नो असक्कच्चं; खुद्दकानञ्चेपि पाणानं पहारं देति अन्तमसो ससबिळारानम्पि [ससबिळारानं (क॰)], सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति, नो असक्कच्चं। तं किस्स हेतु? 'मा मे योग्गपथो नस्सा'ति।

''सीहोति खो, भिक्खवे, तथागतस्सेतं अधिवचनं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। यं खो, भिक्खवे, तथागतो परिसाय धम्मं देसेति, इदमस्स होति सीहनादस्मिं। भिक्खूनञ्चेपि, भिक्खवे, तथागतो धम्मं देसेति, सक्कच्चञ्ञेव तथागतो धम्मं देसेति, नो असक्कच्चं; भिक्खुनीनञ्चेपि, भिक्खवे, तथागतो धम्मं देसेति, सक्कच्चञ्ञेव तथागतो धम्मं देसेति, नो असक्कच्चं; उपासकानञ्चेपि, भिक्खवे, तथागतो धम्मं देसेति, सक्कच्चञ्ञेव तथागतो धम्मं देसेति, नो असक्कच्चं; उपासिकानञ्चेपि, भिक्खवे, तथागतो धम्मं देसेति, सक्कच्चञ्ञेव तथागतो धम्मं देसेति, नो असक्कच्चं; पुथुज्जनानञ्चेपि, भिक्खवे, तथागतो धम्मं देसेति अन्तमसो अन्नभारनेसादानम्पि [अन्नभारनेसादानं (क॰)],

सक्कच्चञ्ञेव तथागतो धम्मं देसेति, नो असक्कच्चं। तं किस्स हेतु? धम्मगरु, भिक्खवे, तथागतो धम्मगारवो''ति। नवमं।

१०. ककुधथेरसुत्तं

१००. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। [चूळव० ३३३, ३४१] तेन खो पन समयेन ककुधो नाम कोलियपुत्तो [कोळीयपुत्तो (सी० स्या० क०)] आयस्मतो महामोग्गल्लानस्स उपट्ठाको अधुनाकालङ्कतो अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो। तस्स एवरूपो अत्तभावपटिलाभो होति – सेय्यथापि नाम द्वे वा तीणि वा मागधकानि [मागधिकानि (सी० पी० क०)] गामक्खेत्तानि। सो तेन अत्तभावपटिलाभेन नेव अत्तानं [नेवत्तानं ब्याबाधेति (सी०)] नो परं ब्याबाधेति।

अथ खो ककुधो देवपुत्तो येनायस्मा महामोग्गल्लानो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं महामोग्गल्लानं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितो खो ककुधो देवपुत्तो आयस्मन्तं महामोग्गल्लानं एतदवोच – ''देवदत्तस्स, भन्ते, एवरूपं इच्छागतं उप्पज्जि – 'अहं भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सामी'ति। सहचित्तुप्पादा च, भन्ते, देवदत्तो तस्सा इद्धिया परिहीनो''ति। इदमवोच ककुधो देवपुत्तो। इदं वत्वा आयस्मन्तं महामोग्गल्लानं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायि।

अथ खो आयस्मा महामोग्गल्लानो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा महामोग्गल्लानो भगवन्तं एतदवोच –

''ककुधो नाम, भन्ते, कोलियपुत्तो ममं उपट्ठाको अधुनाकालङ्कतो अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो होति। तस्स एवरूपो अत्तभावपटिलाभो – सेय्यथापि नाम द्वे वा तीणि वा मागधकानि गामक्खेत्तानि। सो तेन अत्तभावपटिलाभेन नेव अत्तानं नो परं ब्याबाधेति। अथ खो, भन्ते, ककुधो देवपुत्तो येनाहं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा मं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितो खो, भन्ते, ककुधो देवपुत्तो मं एतदवोच – 'देवदत्तस्स, भन्ते, एवरूपं इच्छागतं उप्पज्जि – अहं भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सामीति। सहचित्तुप्पादा च, भन्ते, देवदत्तो तस्सा इद्धिया परिहीनो'ति। इदमवोच, भन्ते, ककुधो देवपुत्तो। इदं वत्वा मं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायी''ति।

''किं पन ते, मोग्गल्लान, ककुधो देवपुत्तो चेतसा चेतो परिच्च विदितो – 'यं किञ्चि ककुधो देवपुत्तो भासति सब्बं तं तथेव होति, नो अञ्ञथा'''ति? ''चेतसा चेतो परिच्च विदितो मे, भन्ते, ककुधो देवपुत्तो – 'यं किञ्चि ककुधो देवपुत्तो भासति सब्बं तं तथेव होति, नो अञ्ञथा'''ति। ''रक्खस्सेतं, मोग्गल्लान, वाचं! (रक्खस्सेतं, मोग्गल्लान, वाचं) [( ) सी० स्या० कं० पी० पोत्थकेसु नत्थि चूळव० ३३३ पन सब्बत्थपि दिस्सतियेव]! इदानि सो मोघपुरिसो अत्तनाव अत्तानं पातुकरिस्सति।

''पञ्चिमे, मोग्गल्लान, सत्थारो सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे पञ्च? इध, मोग्गल्लान, एकच्चो सत्था अपरिसुद्धसीलो समानो 'परिसुद्धसीलोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे सीलं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। तमेनं सावका एवं जानन्ति – 'अयं खो भवं सत्था अपरिसुद्धसीलो समानो परिसुद्धसीलोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे सीलं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम, नास्सस्स मनापं। यं खो पनस्स अमनापं, कथं नं [कथं नु तं

(सी॰), कथं नु (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰), कथं तं (कत्थचि)] मयं तेन समुदाचरेय्याम – 'सम्मन्नति खो पन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; यं तुमो करिस्सति तुमोव तेन पञ्ञायिस्सती'ति। एवरूपं खो, मोग्गल्लान, सत्थारं सावका सीलतो रक्खन्ति; एवरूपो च पन सत्था सावकेहि सीलतो रक्खं पच्चासीसति [पच्चासिंसति (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)]।

''पुन चपरं, मोग्गल्लान, इधेकच्चो सत्था अपरिसुद्धाजीवो समानो 'परिसुद्धाजीवोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धो मे आजीवो परियोदातो असंकिलिट्ठो'ति। तमेनं सावका एवं जानन्ति – 'अयं खो भवं सत्था अपरिसुद्धाजीवो समानो परिसुद्धाजीवोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धो मे आजीवो परियोदातो असंकिलिट्ठो'ति। मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम, नास्सस्स मनापं। यं खो पनस्स अमनापं, कथं नं मयं तेन समुदाचरेय्याम – 'सम्मन्नति खो पन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; यं तुमो करिस्सति तुमोव तेन पञ्ञायिस्सती'ति। एवरूपं खो, मोग्गल्लान, सत्थारं सावका आजीवतो रक्खन्ति; एवरूपो च पन सत्था सावकेहि आजीवतो रक्खं पच्चासीसति।

''पुन चपरं, मोग्गल्लान, इधेकच्चो सत्था अपरिसुद्धधम्मदेसनो समानो 'परिसुद्धधम्मदेसनोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धा मे धम्मदेसना परियोदाता असंकिलिट्ठा'ति। तमेनं सावका एवं जानन्ति – 'अयं खो भवं सत्था अपरिसुद्धधम्मदेसनो समानो परिसुद्धधम्मदेसनोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धा मे धम्मदेसना परियोदाता असंकिलिट्ठा'ति। मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम, नास्सस्स मनापं। यं खो पनस्स अमनापं, कथं नं मयं तेन समुदाचरेय्याम – 'सम्मन्नति खो पन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; यं तुमो करिस्सति तुमोव तेन पञ्ञायिस्सती'ति। एवरूपं खो, मोग्गल्लान, सत्थारं सावका धम्मदेसनतो रक्खन्ति; एवरूपो च पन सत्था सावकेहि धम्मदेसनतो रक्खं पच्चासीसति।

''पुन चपरं, मोग्गल्लान, इधेकच्चो सत्था अपरिसुद्धवेय्याकरणो समानो 'परिसुद्धवेय्याकरणोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे वेय्याकरणं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। तमेनं सावका एवं जानन्ति – 'अयं खो भवं सत्था अपरिसुद्धवेय्याकरणो समानो परिसुद्धवेय्याकरणोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे वेय्याकरणं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम, नास्सस्स मनापं। यं खो पनस्स अमनापं, कथं नं मयं तेन समुदाचरेय्याम – 'सम्मन्नति खो पन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; यं तुमो करिस्सति तुमोव तेन पञ्ञायिस्सती'ति। एवरूपं खो, मोग्गल्लान, सत्थारं सावका वेय्याकरणतो रक्खन्ति; एवरूपो च पन सत्था सावकेहि वेय्याकरणतो रक्खं पच्चासीसति।

''पुन चपरं, मोग्गल्लान, इधेकच्चो सत्था अपरिसुद्धञाणदस्सनो समानो 'परिसुद्धञाणदस्सनोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे ञाणदस्सनं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। तमेनं सावका एवं जानन्ति – 'अयं खो भवं सत्था अपरिसुद्धञाणदस्सनो समानो परिसुद्धञाणदस्सनोम्ही'ति पटिजानाति 'परिसुद्धं मे ञाणदस्सनं परियोदातं असंकिलिट्ठ'न्ति। मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम, नास्सस्स मनापं। यं खो पनस्स अमनापं, कथं नं मयं तेन समुदाचरेय्याम – 'सम्मन्नति खो पन चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; यं तुमो करिस्सति तुमोव तेन पञ्ञायिस्सती'ति। एवरूपं खो, मोग्गल्लान, सत्थारं सावका ञाणदस्सनतो रक्खन्ति; एवरूपो च पन सत्था सावकेहि ञाणदस्सनतो रक्खं पच्चासीसति। इमे खो, मोग्गल्लान, पञ्च सत्थारो सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं।

''अहं खो पन, मोग्गल्लान, परिसुद्धसीलो समानो 'परिसुद्धसीलोम्ही'ति पटिजानामि 'परिसुद्धं मे सीलं परियोदातं

असंकिलिट्ठ’न्ति। न च मं सावका सीलतो रक्खन्ति, न चाहं सावकेहि सीलतो रक्खं पच्चासीसामि। परिसुद्धाजीवो समानो ‘परिसुद्धाजीवोम्ही’ति पटिजानामि ‘परिसुद्धो मे आजीवो परियोदातो असंकिलिट्ठो’ति। न च मं सावका आजीवतो रक्खन्ति, न चाहं सावकेहि आजीवतो रक्खं पच्चासीसामि। परिसुद्धधम्मदेसनो समानो ‘परिसुद्धधम्मदेसनोम्ही’ति पटिजानामि ‘परिसुद्धा मे धम्मदेसना परियोदाता असंकिलिट्ठा’ति। न च मं सावका धम्मदेसनतो रक्खन्ति, न चाहं सावकेहि धम्मदेसनतो रक्खं पच्चासीसामि। परिसुद्धवेय्याकरणो समानो ‘परिसुद्धवेय्याकरणोम्ही’ति पटिजानामि ‘परिसुद्धं मे वेय्याकरणं परियोदातं असंकिलिट्ठ’न्ति। न च मं सावका वेय्याकरणतो रक्खन्ति, न चाहं सावकेहि वेय्याकरणतो रक्खं पच्चासीसामि। परिसुद्धञाणदस्सनो समानो ‘परिसुद्धञाणदस्सनोम्ही’ति पटिजानामि ‘परिसुद्धं मे ञाणदस्सनं परियोदातं असंकिलिट्ठ’न्ति। न च मं सावका ञाणदस्सनतो रक्खन्ति, न चाहं सावकेहि ञाणदस्सनतो रक्खं पच्चासीसामी’’ति। दसमं।

ककुधवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

द्वे सम्पदा ब्याकरणं, फासु अकुप्पपञ्चमं।
सुतं कथा आरञ्ञको, सीहो च ककुधो दसाति॥

दुतियपण्णासकं समत्तं।

३. ततियपण्णासकं

(११) १. फासुविहारवग्गो

१. सारज्जसुत्तं

१०१. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, सेखवेसारज्जकरणा धम्मा। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, सीलवा होति, बहुस्सुतो होति, आरद्धवीरियो होति, पञ्ञवा होति।

‘‘यं, भिक्खवे, अस्सद्धस्स सारज्जं होति, सद्धस्स तं सारज्जं न होति। तस्मायं धम्मो सेखवेसारज्जकरणो।

‘‘यं, भिक्खवे, दुस्सीलस्स सारज्जं होति, सीलवतो तं सारज्जं न होति। तस्मायं धम्मो सेखवेसारज्जकरणो।

‘‘यं, भिक्खवे, अप्पस्सुतस्स सारज्जं होति, बहुस्सुतस्स तं सारज्जं न होति। तस्मायं धम्मो सेखवेसारज्जकरणो।

‘‘यं, भिक्खवे, कुसीतस्स सारज्जं होति, आरद्धवीरियस्स तं सारज्जं न होति। तस्मायं धम्मो सेखवेसारज्जकरणो।

‘‘यं, भिक्खवे, दुप्पञ्ञस्स सारज्जं होति, पञ्ञवतो तं सारज्जं न होति। तस्मायं धम्मो सेखवेसारज्जकरणो। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च सेखवेसारज्जकरणा धम्मा’’ति। पठमं।

२. उस्सङ्कितसुत्तं

१०२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु उस्सङ्कितपरिसङ्कितो होति पापभिक्खूति अपि अकुप्पधम्मोपि [अपि अकुप्पधम्मो (सी॰ स्या॰ कं॰)]।

कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु वेसियागोचरो वा होति, विधवागोचरो वा होति, थुल्लकुमारिकागोचरो वा होति, पण्डकगोचरो वा होति, भिक्खुनीगोचरो वा होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु उस्सङ्कितपरिसङ्कितो होति पापभिक्खूति अपि अकुप्पधम्मोपी''ति। दुतियं।

३. महाचोरसुत्तं

१०३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो महाचोरो सन्धिम्पि छिन्दति, निल्लोपम्पि हरति, एकागारिकम्पि करोति, परिपन्थेपि तिट्ठति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, महाचोरो विसमनिस्सितो च होति, गहननिस्सितो च, बलवनिस्सितो च, भोगचागी च, एकचारी च।

''कथञ्च, भिक्खवे, महाचोरो विसमनिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, महाचोरो नदीविदुग्गं वा निस्सितो होति पब्बतविसमं वा। एवं खो, भिक्खवे, महाचोरो विसमनिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, महाचोरो गहननिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, महाचोरो तिणगहनं वा निस्सितो होति रुक्खगहनं वा रोधं [गेधं (सी॰) अ॰ नि॰ ३.५१] वा महावनसण्डं वा। एवं खो, भिक्खवे, महाचोरो गहननिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, महाचोरो बलवनिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, महाचोरो राजानं वा राजमहामत्तानं वा निस्सितो होति। तस्स एवं होति – 'सचे मं कोचि किञ्चि वक्खति, इमे मे राजानो वा राजमहामत्ता वा परियोधाय अत्थं भणिस्सन्ती'ति। सचे नं कोचि किञ्चि आह, त्यस्स राजानो वा राजमहामत्ता वा परियोधाय अत्थं भणन्ति। एवं खो, भिक्खवे, महाचोरो बलवनिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, महाचोरो भोगचागी होति? इध, भिक्खवे, महाचोरो अड्ढो होति महद्धनो महाभोगो। तस्स एवं होति – 'सचे मं कोचि किञ्चि वक्खति, इतो भोगेन पटिसन्थरिस्सामी'ति। सचे नं कोचि किञ्चि आह, ततो भोगेन पटिसन्थरति। एवं खो, भिक्खवे, महाचोरो भोगचागी होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, महाचोरो एकचारी होति? इध, भिक्खवे, महाचोरो एककोव गहणानि [निग्गहणानि (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] कत्ता होति। तं किस्स हेतु? 'मा मे गुय्हमन्ता बहिद्धा सम्भेदं अगमंसू'ति। एवं खो, भिक्खवे, महाचोरो एकचारी होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहङ्गेहि समन्नागतो महाचोरो सन्धिम्पि छिन्दति निल्लोपम्पि हरति एकागारिकम्पि करोति परिपन्थेपि तिट्ठति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो पापभिक्खु खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो विञ्ञूनं, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु विसमनिस्सितो च होति, गहननिस्सितो च, बलवनिस्सितो च, भोगचागी च, एकचारी च।

''कथञ्च, भिक्खवे, पापभिक्खु विसमनिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु विसमेन कायकम्मेन समन्नागतो होति, विसमेन वचीकम्मेन समन्नागतो होति, विसमेन मनोकम्मेन समन्नागतो होति। एवं खो, भिक्खवे, पापभिक्खु विसमनिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पापभिक्खु गहननिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु मिच्छादिट्ठिको होति अन्तग्गाहिकाय दिट्ठिया समन्नागतो। एवं खो, भिक्खवे, पापभिक्खु गहननिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पापभिक्खु बलवनिस्सितो होति? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु राजानं वा राजमहामत्तानं वा निस्सितो होति। तस्स एवं होति – 'सचे मं कोचि किञ्चि वक्खति, इमे मे राजानो वा राजमहामत्ता वा परियोधाय अत्थं भणिस्सन्ती'ति। सचे नं कोचि किञ्चि आह, त्यस्स राजानो वा राजमहामत्ता वा परियोधाय अत्थं भणन्ति। एवं खो, भिक्खवे, पापभिक्खु बलवनिस्सितो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पापभिक्खु भोगचागी होति? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु लाभी होति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं। तस्स एवं होति – 'सचे मं कोचि किञ्चि वक्खति, इतो लाभेन पटिसन्थरिस्सामी'ति। सचे नं कोचि किञ्चि आह, ततो लाभेन पटिसन्थरति। एवं खो, भिक्खवे, पापभिक्खु भोगचागी होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पापभिक्खु एकचारी होति? इध, भिक्खवे, पापभिक्खु एककोव पच्चन्तिमेसु जनपदेसु निवासं कप्पेति। सो तत्थ कुलानि उपसङ्कमन्तो लाभं लभति। एवं खो, भिक्खवे, पापभिक्खु एकचारी होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो पापभिक्खु खतं उपहतं अत्तानं परिहरति, सावज्जो च होति सानुवज्जो विञ्ञूनं, बहुञ्च अपुञ्ञं पसवती''ति। ततियं।

४. समणसुखुमालसुत्तं

१०४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु समणेसु समणसुखुमालो होति।

''कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु याचितोव बहुलं चीवरं परिभुञ्जति, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं पिण्डपातं परिभुञ्जति, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं सेनासनं परिभुञ्जति, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं परिभुञ्जति, अप्पं अयाचितो। येहि खो पन सब्रह्मचारीहि सद्धिं विहरति, त्यस्स [त्यास्स (क॰) अ॰ नि॰ ४.८७] मनापेनेव बहुलं कायकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापेनेव बहुलं वचीकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापेनेव बहुलं मनोकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापंयेव उपहारं उपहरन्ति, अप्पं अमनापं। यानि खो पन तानि वेदयितानि पित्तसमुट्ठानानि वा सेम्हसमुट्ठानानि वा वातसमुट्ठानानि वा सन्निपातिकानि वा उतुपरिणामजानि वा विसमपरिहारजानि वा ओपक्कमिकानि वा कम्मविपाकजानि वा, तानिस्स न बहुदेव उप्पज्जन्ति।

अप्पाबाधो होति, चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु समणेसु समणसुखुमालो होति।

''यञ्हि तं, भिक्खवे, सम्मा वदमानो वदेय्य – 'समणेसु समणसुखुमालो'ति, ममेव तं, भिक्खवे, सम्मा [ममेव तं सम्मा (?)] वदमानो वदेय्य – 'समणेसु समणसुखुमालो'ति। अहञ्हि, भिक्खवे, याचितोव बहुलं चीवरं परिभुञ्जामि, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं पिण्डपातं परिभुञ्जामि, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं सेनासनं परिभुञ्जामि, अप्पं अयाचितो; याचितोव बहुलं गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं परिभुञ्जामि, अप्पं अयाचितो। येहि खो पन भिक्खूहि सद्धिं विहरामि, ते मं मनापेनेव बहुलं कायकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापेनेव बहुलं वचीकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापेनेव बहुलं मनोकम्मेन समुदाचरन्ति, अप्पं अमनापेन; मनापंयेव उपहारं उपहरन्ति, अप्पं अमनापं। यानि खो पन तानि वेदयितानि – पित्तसमुट्ठानानि वा सेम्हसमुट्ठानानि वा वातसमुट्ठानानि वा सन्निपातिकानि वा उतुपरिणामजानि वा विसमपरिहारजानि वा ओपक्कमिकानि वा कम्मविपाकजानि वा – तानि मे न बहुदेव उप्पज्जन्ति। अप्पाबाधोहमस्मि, चतुन्नं खो पनस्मि [चतुन्नं खो पन (सी॰), चतुन्नं (स्या॰ पी॰)] झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी [निकामलाभी होमि (सी॰ क॰)] अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, आसवानं खया...पे॰... सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरामि।

''यञ्हि तं, भिक्खवे, सम्मा वदमानो वदेय्य – 'समणेसु समणसुखुमालो'ति, ममेव तं, भिक्खवे, सम्मा वदमानो वदेय्य – 'समणेसु समणसुखुमालो'''ति। चतुत्थं।

५. फासुविहारसुत्तं

१०५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, फासुविहारा। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो मेत्तं कायकम्मं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु आवि चेव रहो च, मेत्तं वचीकम्मं...पे॰... मेत्तं मनोकम्मं पच्चुपट्ठितं होति सब्रह्मचारीसु आवि चेव रहो च। यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि, तथारूपेहि सीलेहि सीलसामञ्ञगतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवि चेव रहो च। यायं दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय, तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरति सब्रह्मचारीहि आवि चेव रहो च। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च फासुविहारा''ति। पञ्चमं।

६. आनन्दसुत्तं

१०६. एकं समयं भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। अथ खो आयस्मा आनन्दो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच –

''कित्तावता नु खो, भन्ते, भिक्खु सङ्घे [भिक्खुंसंघो (स्या॰ पी॰)] विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति? ''यतो खो, आनन्द, भिक्खु अत्तना [अत्तना च (पी॰ क॰)] सीलसम्पन्नो होति, नो [नो च (क॰)] परं अधिसीले सम्पवत्ता [सम्पवत्ता होति (क॰)]; एत्तावतापि खो, आनन्द, भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति।

''सिया पन, भन्ते, अञ्ञोपि परियायो यथा भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति? ''सिया, आनन्द [आनन्दाति

भगवा आवोच (स्या० पी०)]! यतो खो, आनन्द, भिक्खु अत्तना सीलसम्पन्नो होति, नो परं अधिसीले सम्पवत्ता; अत्तानुपेक्खी च होति, नो परानुपेक्खी; एत्तावतापि खो, आनन्द, भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति।

''सिया पन, भन्ते, अञ्ञोपि परियायो यथा भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति? ''सिया, आनन्द! यतो खो, आनन्द, भिक्खु अत्तना सीलसम्पन्नो होति, नो परं अधिसीले सम्पवत्ता; अत्तानुपेक्खी च होति, नो परानुपेक्खी; अपञ्ञातो च होति, तेन च अपञ्ञातकेन नो परितस्सति; एत्तावतापि खो, आनन्द, भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति।

''सिया पन, भन्ते, अञ्ञोपि परियायो यथा भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति? ''सिया, आनन्द! यतो खो, आनन्द, भिक्खु अत्तना सीलसम्पन्नो होति, नो परं अधिसीले सम्पवत्ता; अत्तानुपेक्खी च होति, नो परानुपेक्खी; अपञ्ञातो च होति, तेन च अपञ्ञातकेन नो परितस्सति; चतुन्नञ्च [चतुन्नं (पी० क०)] झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; एत्तावतापि खो, आनन्द, भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति।

''सिया पन, भन्ते, अञ्ञोपि परियायो यथा भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्या''ति? ''सिया, आनन्द! यतो खो, आनन्द, भिक्खु अत्तना सीलसम्पन्नो होति, नो परं अधिसीले सम्पवत्ता; अत्तानुपेक्खी च होति, नो परानुपेक्खी; अपञ्ञातो च होति, तेन च अपञ्ञातकेन नो परितस्सति; चतुन्नञ्च झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानञ्च [आसवानं (सी० पी० क०)] खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति; एत्तावतापि खो, आनन्द, भिक्खु सङ्घे विहरन्तो फासुं विहरेय्य।

''इमम्हा चाहं, आनन्द, फासुविहारा अञ्ञो फासुविहारो उत्तरितरो वा पणीततरो वा नत्थीति वदामी''ति। छट्ठं।

७. सीलसुत्तं

१०७. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स।

''कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलसम्पन्नो होति, समाधिसम्पन्नो होति, पञ्ञासम्पन्नो होति, विमुत्तिसम्पन्नो होति, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा''ति। सत्तमं।

८. असेखसुत्तं

१०८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो...पे०... अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स।

''कतमेहि, पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु असेखेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन पञ्ञाक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति, असेखेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति... पे०... अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा''ति। अट्ठमं।

९. चातुद्दिससुत्तं

१०९. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु चातुद्दिसो होति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; सन्तुट्ठो होति इतरीतरचीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि, खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु चातुद्दिसो होती''ति। नवमं।

१०. अरञ्ञसुत्तं

११०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितुं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलवा होति...पे०... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति...पे०... दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; आरद्धवीरियो विहरति थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवितु''न्ति। दसमं।

फासुविहारवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

सारज्जं सङ्कितो चोरो, सुखुमालं फासु पञ्चमं।
आनन्द सीलासेखा च, चातुद्दिसो अरञ्ञेन चाति॥

(१२) २. अन्धकविन्दवग्गो

१. कुलूपकसुत्तं

१११. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो कुलूपको भिक्खु कुलेसु अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? असन्थवविस्सासी [असन्थुतविस्सासी (सी०), असन्धवविस्सासी (क०)] च होति,

अनिस्सरविकप्पी च, विस्सट्ठुपसेवी [वियत्थुपसेवी (सी॰), ब्यत्थुपसेवी (स्या॰ कं॰), व्यत्तूपसेवी (पी॰)] च, उपकण्णकजप्पी च, अतियाचनको च। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो कुलूपको भिक्खु कुलेसु अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो कुलूपको भिक्खु कुलेसु पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? न असन्थवविस्सासी च होति, न अनिस्सरविकप्पी च, न विस्सट्ठुपसेवी च, न उपकण्णकजप्पी च, न अतियाचनको च। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो कुलूपको भिक्खु कुलेसु पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। पठमं।

२. पच्छासमणसुत्तं

११२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो पच्छासमणो न आदातब्बो। कतमेहि पञ्चहि? अतिदूरे वा गच्छति अच्चासन्ने वा, न पत्तपरियापन्नं गण्हति, आपत्तिसामन्ता भणमानं न निवारेति, भणमानस्स अन्तरन्तरा कथं ओपातेति, दुप्पञ्ञो होति जळो एळमूगो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो पच्छासमणो न आदातब्बो।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो पच्छासमणो आदातब्बो। कतमेहि पञ्चहि? नातिदूरे गच्छति न अच्चासन्ने, पत्तपरियापन्नं गण्हति, आपत्तिसामन्ता भणमानं निवारेति, भणमानस्स न अन्तरन्तरा कथं ओपातेति, पञ्ञवा होति अजळो अनेळमूगो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो पच्छासमणो आदातब्बो''ति। दुतियं।

३. सम्मासमाधिसुत्तं

११३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अभब्बो सम्मासमाधिं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो फोट्ठब्बानं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अभब्बो सम्मासमाधिं उपसम्पज्ज विहरितुं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु भब्बो सम्मासमाधिं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रूपानं, खमो सद्दानं, खमो गन्धानं, खमो रसानं, खमो फोट्ठब्बानं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु भब्बो सम्मासमाधिं उपसम्पज्ज विहरितु''न्ति। ततियं।

४. अन्धकविन्दसुत्तं

११४. एकं समयं भगवा मगधेसु विहरति अन्धकविन्दे। अथ खो आयस्मा आनन्दो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो आयस्मन्तं आनन्दं भगवा एतदवोच –

''ये ते, आनन्द, भिक्खू नवा अचिरपब्बजिता अधुनागता इमं धम्मविनयं, ते वो, आनन्द, भिक्खू पञ्चसु धम्मेसु समादपेतब्बा [समादापेतब्बा (?)] निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा। कतमेसु पञ्चसु? 'एथ तुम्हे, आवुसो, सीलवा होथ, पातिमोक्खसंवरसंवुता विहरथ आचारगोचरसम्पन्ना अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्साविनो, समादाय सिक्खथ सिक्खापदेसू'ति – इति पातिमोक्खसंवरे समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा।

‘‘‘एथ तुम्हे, आवुसो, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा विहरथ आरक्खसतिनो निपक्कसतिनो [निपकसतिनो (सी॰ स्या॰), नेपक्कसतिनो (?)], सारक्खितमानसा सतारक्खेन चेतसा समन्नागता’ति – इति इन्द्रियसंवरे समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा।

‘‘‘एथ तुम्हे, आवुसो, अप्पभस्सा होथ, भस्से परियन्तकारिनो’ति – इति भस्सपरियन्ते समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा।

‘‘‘एथ तुम्हे, आवुसो, आरञ्ञिका होथ, अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवथा’ति – इति कायवूपकासे समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा।

‘‘‘एथ तुम्हे, आवुसो, सम्मादिट्ठिका होथ सम्मादस्सनेन समन्नागता’ति – इति सम्मादस्सने समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा। ये ते, आनन्द, भिक्खू नवा अचिरपब्बजिता अधुनागता इमं धम्मविनयं, ते वो, आनन्द, भिक्खू इमेसु पञ्चसु धम्मेसु समादपेतब्बा निवेसेतब्बा पतिट्ठापेतब्बा’’ति। चतुत्थं।

५. मच्छरिनीसुत्तं

११५. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? आवासमच्छरिनी होति, कुलमच्छरिनी होति, लाभमच्छरिनी होति, वण्णमच्छरिनी होति, धम्ममच्छरिनी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न आवासमच्छरिनी होति, न कुलमच्छरिनी होति, न लाभमच्छरिनी होति, न वण्णमच्छरिनी होति, न धम्ममच्छरिनी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे’’ति। पञ्चमं।

६. वण्णनासुत्तं

११६. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अप्पसादनीये ठाने पसादं उपदंसेति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा पसादनीये ठाने अप्पसादं उपदंसेति, सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा अप्पसादनीये ठाने अप्पसादं उपदंसेति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा पसादनीये ठाने पसादं उपदंसेति, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे’’ति। छट्ठं।

७. इस्सुकिनीसुत्तं

११७. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति, इस्सुकिनी च होति, मच्छरिनी च, सद्धादेय्यं [सद्धादेय्यञ्च (स्या०)] विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति, अनिस्सुकिनी च होति, अमच्छरिनी च, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे''ति। सत्तमं।

८. मिच्छादिट्ठिकसुत्तं

११८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति, मिच्छादिट्ठिका च होति, मिच्छासङ्कप्पा च, सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति, सम्मादिट्ठिका च, होति, सम्मासङ्कप्पा च, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे''ति। अट्ठमं।

९. मिच्छावाचासुत्तं

११९. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति, मिच्छावाचा च होति, मिच्छाकम्मन्ता च, सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति, सम्मावाचा च होति, सम्माकम्मन्ता च, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे''ति। नवमं।

१०. मिच्छावायामसुत्तं

१२०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति, अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति,

मिच्छावायामा च होति, मिच्छासतिनी च [मिच्छासति च (स्या॰)], सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति, अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति, सम्मावायामा च होति, सम्मासतिनी च, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे''ति। दसमं।

अन्धकविन्दवग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

कुलूपको पच्छासमणो, समाधिअन्धकविन्दं।
मच्छरी वण्णना इस्सा, दिट्ठिवाचाय वायमाति॥

(१३) ३. गिलानवग्गो

१. गिलानसुत्तं

१२१. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। अथ खो भगवा सायन्हसमयं पटिसल्लाना वुट्ठितो येन गिलानसाला तेनुपसङ्कमि। अद्दसा खो भगवा अञ्ञतरं भिक्खुं दुब्बलं गिलानकं; दिस्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि –

''यं किञ्चि [यं किञ्चि (स्या॰ कं॰)], भिक्खवे, भिक्खुं दुब्बलं [भिक्खवे दुब्बलं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] गिलानकं पञ्च धम्मा न विजहन्ति, तस्सेतं पाटिकङ्खं – 'नचिरस्सेव आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सती'''ति।

''कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु असुभानुपस्सी काये विहरति, आहारे पटिकूलसञ्ञी, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञी [सब्बत्थपि एवमेव दिस्सति], सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी, मरणसञ्ञा खो पनस्स अज्झत्तं सूपट्ठिता होति। यं किञ्चि, भिक्खवे, भिक्खुं दुब्बलं गिलानकं इमे पञ्च धम्मा न विजहन्ति, तस्सेतं पाटिकङ्खं – 'नचिरस्सेव आसवानं खया...पे॰... सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सती'''ति। पठमं।

२. सतिसूपट्ठितसुत्तं

१२२. ''यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा पञ्च धम्मे भावेति पञ्च धम्मे बहुलीकरोति, तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं – दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता।

''कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो अज्झत्तञ्ञेव सति सूपट्ठिता होति धम्मानं उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय,

असुभानुपस्सी काये विहरति, आहारे पटिकूलसञ्ञी, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञी, सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी। यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा इमे पञ्च धम्मे भावेति इमे पञ्च धम्मे बहुलीकरोति, तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं – दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता''ति। दुतियं।

३. पठमउपट्ठाकसुत्तं

१२३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो गिलानो दूपट्ठाको [दुपट्ठाको (स्या॰ कं॰ पी॰ क॰) महाव॰ ३६६] होति। कतमेहि पञ्चहि? असप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं न जानाति, भेसज्जं नप्पटिसेविता होति, अत्थकामस्स गिलानुपट्ठाकस्स न यथाभूतं आबाधं आविकत्ता होति अभिक्कमन्तं वा अभिक्कमतीति पटिक्कमन्तं वा पटिक्कमतीति ठितं वा ठितोति, उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं [तिप्पानं (सी॰) महाव॰ ३६६] खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिको होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो गिलानो दूपट्ठाको होति।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो गिलानो सूपट्ठाको होति। कतमेहि पञ्चहि? सप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं जानाति, भेसज्जं पटिसेविता होति, अत्थकामस्स गिलानुपट्ठाकस्स यथाभूतं आबाधं आविकत्ता होति अभिक्कमन्तं वा अभिक्कमतीति पटिक्कमन्तं वा पटिक्कमतीति ठितं वा ठितोति, उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अधिवासकजातिको होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो गिलानो सूपट्ठाको होती''ति। ततियं।

४. दुतियउपट्ठाकसुत्तं

१२४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो गिलानुपट्ठाको नालं गिलानं उपट्ठातुं। कतमेहि पञ्चहि? नप्पटिबलो होति भेसज्जं संविधातुं; सप्पायासप्पायं न जानाति, असप्पायं उपनामेति, सप्पायं अपनामेति; आमिसन्तरो गिलानं उपट्ठाति, नो मेत्तचित्तो; जेगुच्छी होति उच्चारं वा पस्सावं वा वन्तं वा खेळं वा नीहरितुं; नप्पटिबलो होति गिलानं कालेन कालं धम्मिया कथाय सन्दस्सेतुं समादपेतुं [समादापेतुं (?) महाव॰ ३६६] समुत्तेजेतुं सम्पहंसेतुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो गिलानुपट्ठाको नालं गिलानं उपट्ठातुं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो गिलानुपट्ठाको अलं गिलानं उपट्ठातुं। कतमेहि पञ्चहि? पटिबलो होति भेसज्जं संविधातुं; सप्पायासप्पायं जानाति, असप्पायं अपनामेति, सप्पायं उपनामेति; मेत्तचित्तो गिलानं उपट्ठाति, नो आमिसन्तरो; अजेगुच्छी होति उच्चारं वा पस्सावं वा वन्तं वा खेळं वा नीहरितुं; पटिबलो होति गिलानं कालेन कालं धम्मिया कथाय सन्दस्सेतुं समादपेतुं समुत्तेजेतुं सम्पहंसेतुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो गिलानुपट्ठाको अलं गिलानं उपट्ठातु''न्ति। चतुत्थं।

५. पठमअनायुस्सासुत्तं

१२५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा अनायुस्सा। कतमे पञ्च? असप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं न जानाति, अपरिणतभोजी च होति, अकालचारी च होति, अब्रह्मचारी च। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा अनायुस्सा।

"पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा आयुस्सा। कतमे पञ्च? सप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं जानाति, परिणतभोजी च होति, कालचारी च होति, ब्रह्मचारी च। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा आयुस्सा"ति। पञ्चमं।

६. दुतियअनायुस्सासुत्तं

१२६. "पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा अनायुस्सा। कतमे पञ्च? असप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं न जानाति, अपरिणतभोजी च होति, दुस्सीलो च, पापमित्तो च। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा अनायुस्सा।

"पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा आयुस्सा। कतमे पञ्च? सप्पायकारी होति, सप्पाये मत्तं जानाति, परिणतभोजी च होति, सीलवा च, कल्याणमित्तो च। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा आयुस्सा"ति। छट्ठं।

७. वपकाससुत्तं

१२७. "पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नालं सङ्घम्हा वपकासितुं [वि + अप + कासितुं = वपकासितुं]। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन चीवरेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन सेनासनेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन, कामसङ्कप्पबहुलो च विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु नालं सङ्घम्हा वपकासितुं।

"पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं सङ्घम्हा वपकासितुं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन चीवरेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन सेनासनेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन, नेक्खम्मसङ्कप्पबहुलो [न कामसङ्कप्पबहुलो (क॰)] च विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं सङ्घम्हा वपकासितु"न्ति। सत्तमं।

८. समणसुखसुत्तं

१२८. "पञ्चिमानि, भिक्खवे, समणदुक्खानि। कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन चीवरेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन सेनासनेन, असन्तुट्ठो होति इतरीतरेन गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन, अनभिरतो च ब्रह्मचरियं चरति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च समणदुक्खानि।

"पञ्चिमानि, भिक्खवे, समणसुखानि। कतमानि पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन चीवरेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन सेनासनेन, सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन गिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन, अभिरतो च ब्रह्मचरियं चरति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च समणसुखानी"ति। अट्ठमं।

९. परिकुप्पसुत्तं

१२९. "पञ्चिमे, भिक्खवे, आपायिका नेरयिका परिकुप्पा अतेकिच्छा। कतमे पञ्च? माता [मातरं (क॰)] जीविता वोरोपिता होति, पिता [पितरं (क॰)] जीविता वोरोपितो [वोरोपिता (क॰)] होति, अरहं [अरहन्तं (क॰), अरहा (स्या॰)] जीविता वोरोपितो होति, तथागतस्स दुट्ठेन चित्तेन लोहितं उप्पादितं होति, सङ्घो भिन्नो होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आपायिका नेरयिका परिकुप्पा अतेकिच्छा"ति। नवमं।

१०. ब्यसनसुत्तं

१३०. ‘‘पञ्चिमानि, भिक्खवे, ब्यसनानि। कतमानि पञ्च? ञातिब्यसनं, भोगब्यसनं, रोगब्यसनं, सीलब्यसनं, दिट्ठिब्यसनं। न, भिक्खवे, सत्ता ञातिब्यसनहेतु वा भोगब्यसनहेतु वा रोगब्यसनहेतु वा कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जन्ति। सीलब्यसनहेतु वा, भिक्खवे, सत्ता दिट्ठिब्यसनहेतु वा कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जन्ति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च ब्यसनानि।

‘‘पञ्चिमा, भिक्खवे, सम्पदा। कतमा पञ्च? ञातिसम्पदा, भोगसम्पदा, आरोग्यसम्पदा, सीलसम्पदा, दिट्ठिसम्पदा। न, भिक्खवे, सत्ता ञातिसम्पदाहेतु वा भोगसम्पदाहेतु वा आरोग्यसम्पदाहेतु वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्ति। सीलसम्पदाहेतु वा, भिक्खवे, सत्ता दिट्ठिसम्पदाहेतु वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जन्ति। इमा खो, भिक्खवे, पञ्च सम्पदा’’ति। दसमं।

गिलानवग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

गिलानो सतिसूपट्ठि, द्वे उपट्ठाका दुवायुसा।
वपकाससमणसुखा, परिकुप्पं ब्यसनेन चाति॥

(१४) ४. राजवग्गो

१. पठमचक्कानुवत्तनसुत्तं

१३१. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो राजा चक्कवत्ती धम्मेनेव चक्कं वत्तेति [पवत्तेति (स्या॰ पी॰ क॰)]; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं [अप्पतिवत्तियं (सी॰)] केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पाणिना।

‘‘कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, राजा चक्कवत्ती अत्थञ्ञू च होति, धम्मञ्ञू च, मत्तञ्ञू च, कालञ्ञू च, परिसञ्ञू च। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो राजा चक्कवत्ती धम्मेनेव चक्कं पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पाणिना।

‘‘एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो धम्मेनेव अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं।

‘‘कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो अत्थञ्ञू, धम्मञ्ञू, मत्तञ्ञू, कालञ्ञू, परिसञ्ञू। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो धम्मेनेव अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तेति; तं होति धम्मचक्कं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि’’न्ति। पठमं।

२. दुतियचक्कानुवत्तनसुत्तं

१३२. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो चक्कवत्तिस्स जेट्ठो पुत्तो पितरा पवत्तितं चक्कं धम्मेनेव अनुप्पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पाणिना।

‘‘कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स जेट्ठो पुत्तो अत्थञ्ञू च होति, धम्मञ्ञू च, मत्तञ्ञू च, कालञ्ञू च, परिसञ्ञू च। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो चक्कवत्तिस्स जेट्ठो पुत्तो पितरा पवत्तितं चक्कं धम्मेनेव अनुप्पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पाणिना।

‘‘एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सारिपुत्तो तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं सम्मदेव अनुप्पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं।

‘‘कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, सारिपुत्तो अत्थञ्ञू, धम्मञ्ञू, मत्तञ्ञू, कालञ्ञू, परिसञ्ञू। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सारिपुत्तो तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं सम्मदेव अनुप्पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि’’न्ति। दुतियं।

३. धम्मराजासुत्तं

१३३. ‘‘योपि सो [योपि खो (सी॰ स्या॰ पी॰)], भिक्खवे, राजा चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा, सोपि न अराजकं चक्कं वत्तेती’’ति। एवं वुत्ते अञ्ञतरो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ‘‘को पन, भन्ते, रञ्ञो चक्कवत्तिस्स धम्मिकस्स धम्मरञ्ञो राजा’’ति? ‘‘धम्मो, भिक्खू’’ति भगवा अवोच।

‘‘इध, भिक्खु, राजा चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहति अन्तोजनस्मिं।

‘‘पुन चपरं, भिक्खु, राजा चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहति खत्तियेसु अनुयन्तेसु [अनुयुत्तेसु (सी॰) अ॰ नि॰ ३.१४] ...पे॰... बलकायस्मिं ब्राह्मणगहपतिकेसु नेगमजानपदेसु समणब्राह्मणेसु मिगपक्खीसु। स खो सो, भिक्खु, राजा चक्कवत्ती धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा अन्तोजनस्मिं धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा खत्तियेसु अनुयन्तेसु बलकायस्मिं ब्राह्मणगहपतिकेसु नेगमजानपदेसु समणब्राह्मणेसु मिगपक्खीसु धम्मेनेव चक्कं पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पाणिना।

‘‘एवमेवं खो, भिक्खु, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहति भिक्खूसु – ‘एवरूपं कायकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं कायकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपं वचीकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं वचीकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपं मनोकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं मनोकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपो आजीवो सेवितब्बो, एवरूपो आजीवो न सेवितब्बो; एवरूपो गामनिगमो सेवितब्बो, एवरूपो गामनिगमो न सेवितब्बो’ति।

‘‘पुन चपरं, भिक्खु, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं

करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहति भिक्खुनीसु [भिक्खूसु भिक्खुनीसु (सी॰ पी॰)] ...पे॰... उपासकेसु...पे॰... उपासिकासु – 'एवरूपं कायकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं कायकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपं वचीकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं वचीकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपं मनोकम्मं सेवितब्बं, एवरूपं मनोकम्मं न सेवितब्बं; एवरूपो आजीवो सेवितब्बो, एवरूपो आजीवो न सेवितब्बो; एवरूपो गामनिगमो सेवितब्बो, एवरूपो गामनिगमो न सेवितब्बो''ति।

''स खो सो, भिक्खु, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो धम्मिको धम्मराजा धम्मञ्ञेव निस्साय धम्मं सक्करोन्तो धम्मं गरुं करोन्तो धम्मं अपचायमानो धम्मद्धजो धम्मकेतु धम्माधिपतेय्यो धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा भिक्खूसु, धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा भिक्खुनीसु, धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा उपासकेसु, धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहित्वा उपासिकासु धम्मेनेव अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तेति; तं होति चक्कं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि''न्ति। ततियं।

४. यस्संदिसंसुत्तं

१३४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो राजा खत्तियो मुद्धावसित्तो यस्सं यस्सं दिसायं विहरति, सकस्मिंयेव विजिते विहरति।

''कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, राजा खत्तियो मुद्धावसित्तो उभतो सुजातो होति मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन; अड्ढो होति महद्धनो महाभोगो परिपुण्णकोसकोट्ठागारो; बलवा खो पन होति चतुरङ्गिनिया सेनाय समन्नागतो अस्सवाय ओवादपटिकराय; परिणायको खो पनस्स होति पण्डितो वियत्तो मेधावी पटिबलो अतीतानागतपच्चुप्पन्ने अत्थे चिन्तेतुं; तस्सिमे चत्तारो धम्मा यसं परिपाचेन्ति। सो इमिना यसपञ्चमेन [यसेन पञ्चमेन (क॰), पञ्चमेन (सी॰)] धम्मेन समन्नागतो यस्सं यस्सं दिसायं विहरति, सकस्मिंयेव विजिते विहरति। तं किस्स हेतु? एवञ्हेतं, भिक्खवे, होति विजितावीनं।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यस्सं यस्सं दिसायं विहरति, विमुत्तचित्तोव [विमुत्तचित्तो (सी॰ पी॰), विमुत्तचित्तो च (क॰)] विहरति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु – राजाव खत्तियो मुद्धावसित्तो जातिसम्पन्नो; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा – राजाव खत्तियो मुद्धावसित्तो अड्ढो महद्धनो महाभोगो परिपुण्णकोसकोट्ठागारो; आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु – राजाव खत्तियो मुद्धावसित्तो बलसम्पन्नो; पञ्ञवा होति उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया – राजाव खत्तियो मुद्धावसित्तो परिणायकसम्पन्नो; तस्सिमे चत्तारो धम्मा विमुत्तिं परिपाचेन्ति। सो इमिना विमुत्तिपञ्चमेन धम्मेन समन्नागतो यस्सं यस्सं दिसायं विहरति विमुत्तचित्तोव विहरति। तं किस्स हेतु? एवञ्हेतं, भिक्खवे, होति विमुत्तचित्तान''न्ति। चतुत्थं।

५. पठमपत्थनासुत्तं

१३५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो रज्जं पत्थेति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो उभतो सुजातो होति मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन; अभिरूपो होति दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो; मातापितूनं पियो होति मनापो; नेगमजानपदस्स पियो होति मनापो; यानि तानि रञ्ञं खत्तियानं मुद्धावसित्तानं सिप्पट्ठानानि हत्थिस्मिं वा अस्सस्मिं वा रथस्मिं वा धनुस्मिं वा थरुस्मिं वा तत्थ सिक्खितो होति अनवयो।

''तस्स एवं होति – 'अहं खोम्हि उभतो सुजातो मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। कस्माहं रज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो। कस्माहं रज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि मातापितूनं पियो मनापो। कस्माहं रज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि नेगमजानपदस्स पियो मनापो। कस्माहं रज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि यानि तानि रञ्ञं खत्तियानं मुद्धावसित्तानं सिप्पट्ठानानि हत्थिस्मिं वा अस्सस्मिं वा रथस्मिं वा धनुस्मिं वा थरुस्मिं वा, तत्थ [तत्थम्हि (सी॰), तत्थपि (क॰)] सिक्खितो अनवयो। कस्माहं रज्जं न पत्थेय्य'न्ति! इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो रज्जं पत्थेति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आसवानं खयं पत्थेति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, सद्दहति तथागतस्स बोधिं – 'इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। अप्पाबाधो होति अप्पातङ्को, समवेपाकिनिया गहणिया समन्नागतो नातिसीताय नाच्चुण्हाय मज्झिमाय पधानक्खमाय; असठो होति अमायावी, यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु; आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय, कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु; पञ्ञवा होति उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया।

''तस्स एवं होति – 'अहं खोम्हि सद्धो, सद्दहामि तथागतस्स बोधिं – इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो...पे॰... सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। 'कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि अप्पाबाधो अप्पातङ्को समवेपाकिनिया गहणिया समन्नागतो नातिसीताय नाच्चुण्हाय मज्झिमाय पधानक्खमाय। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि असठो अमायावी यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि आरद्धवीरियो विहरामि अकुसलानं धम्मानं पहानाय, कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि पञ्ञवा उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्य'न्ति! इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आसवानं खयं पत्थेती''ति। पञ्चमं।

६. दुतियपत्थनासुत्तं

१३६. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो ओपरज्जं [उपरज्जं (स्या॰ पी॰ क॰)] पत्थेति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो उभतो सुजातो होति मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन; अभिरूपो होति

दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो; मातापितूनं पियो होति मनापो, बलकायस्स पियो होति मनापो; पण्डितो होति वियत्तो मेधावी पटिबलो अतीतानागतपच्चुप्पन्ने अत्थे चिन्तेतुं।

''तस्स एवं होति – 'अहं खोम्हि उभतो सुजातो मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। कस्माहं ओपरज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि अभिरूपो दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो। कस्माहं ओपरज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि मातापितूनं पियो मनापो। कस्माहं ओपरज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि बलकायस्स पियो मनापो। कस्माहं ओपरज्जं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि पण्डितो वियत्तो मेधावी पटिबलो अतीतानागतपच्चुप्पन्ने अत्थे चिन्तेतुं। कस्माहं ओपरज्जं न पत्थेय्य'न्ति! इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो ओपरज्जं पत्थेति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आसवानं खयं पत्थेति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलवा होति...पे॰... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति...पे॰... दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; चतूसु सतिपट्ठानेसु सुप्पतिट्ठितचित्तो [सुपट्ठितचित्तो (सी॰ स्या॰), सूपट्ठितचित्तो (क॰)] होति; आरद्धवीरियो विहरति अकुसलानं धम्मानं पहानाय, कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु; पञ्ञवा होति, उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया।

''तस्स एवं होति – 'अहं खोम्हि सीलवा, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरामि आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खामि सिक्खापदेसु। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि बहुस्सुतो सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं [सत्था ब्यञ्जना (सी॰)] केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपा मे धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि चतूसु सतिपट्ठानेसु सुप्पतिट्ठितचित्तो। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि आरद्धवीरियो विहरामि अकुसलानं धम्मानं पहानाय, कुसलानं धम्मानं उपसम्पदाय, थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्यं! अहं खोम्हि पञ्ञवा उदयत्थगामिनिया पञ्ञाय समन्नागतो अरियाय निब्बेधिकाय सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया। कस्माहं आसवानं खयं न पत्थेय्य'न्ति! इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आसवानं खयं पत्थेती''ति। छट्ठं।

७. अप्पंसुपतिसुत्तं

१३७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, अप्पं रत्तिया सुपन्ति, बहुं जग्गन्ति। कतमे पञ्च? इत्थी, भिक्खवे, पुरिसाधिप्पाया अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति। पुरिसो, भिक्खवे, इत्थाधिप्पायो अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति। चोरो, भिक्खवे, आदानाधिप्पायो अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति। राजा [राजयुत्तो (पी॰ क॰)], भिक्खवे, राजकरणीयेसु युत्तो अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति। भिक्खु, भिक्खवे, विसंयोगाधिप्पायो अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च अप्पं रत्तिया सुपन्ति, बहुं जग्गन्ती''ति। सत्तमं।

८. भत्तादकसुत्तं

१३८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो भत्तादको च होति ओकासफरणो च लण्डसारणो च

सलाकग्गाही च रञ्ञो नागोत्वेव सङ्ख्यं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो फोट्ठब्बानं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो भत्तादको च ओकासफरणो च लण्डसारणो च सलाकग्गाही च, रञ्ञो नागोत्वेव सङ्ख्यं गच्छति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु भत्तादको च होति, ओकासफरणो च मञ्चपीठमद्दनो [पीठमद्दनो (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] च सलाकग्गाही च, भिक्खुत्वेव सङ्ख्यं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो फोट्ठब्बानं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु भत्तादको च होति ओकासफरणो च मञ्चपीठमद्दनो च सलाकग्गाही च, भिक्खुत्वेव सङ्ख्यं गच्छती''ति। अट्ठमं।

९. अक्खमसुत्तं

१३९. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो न राजारहो होति न राजभोग्गो, न रञ्ञो अङ्गंत्वेव सङ्ख्यं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो फोट्ठब्बानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रूपानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो हत्थिकायं वा दिस्वा अस्सकायं वा दिस्वा रथकायं वा दिस्वा पत्तिकायं वा दिस्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रूपानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति सद्दानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो हत्थिसद्दं वा सुत्वा अस्ससद्दं वा सुत्वा रथसद्दं वा सुत्वा पत्तिसद्दं वा सुत्वा भेरिपणवसङ्खतिणवनिन्नादसद्दं वा सुत्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति सद्दानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति गन्धानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो ये ते रञ्ञो नागा अभिजाता सङ्गामावचरा तेसं मुत्तकरीसस्स गन्धं घायित्वा संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति गन्धानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रसानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो एकिस्सा वा तिणोदकदत्तिया विमानितो [विहनीतो (स्या॰), विहानितो (कत्थचि)] द्वीहि वा तीहि वा चतूहि वा पञ्चहि वा तिणोदकदत्तीहि विमानितो संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति रसानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति फोट्ठब्बानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो एकेन वा सरवेगेन विद्धो, द्वीहि वा तीहि वा चतूहि वा पञ्चहि वा सरवेगेहि विद्धो संसीदति विसीदति, न सन्थम्भति न सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो अक्खमो होति फोट्ठब्बानं।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो न राजारहो होति न राजभोग्गो न रञ्ञो अङ्गंत्वेव सङ्ख्यं

गच्छति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो भिक्खु न आहुनेय्यो होति न पाहुनेय्यो न दक्खिणेय्यो न अञ्जलिकरणीयो न अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रूपानं, अक्खमो सद्दानं, अक्खमो गन्धानं, अक्खमो रसानं, अक्खमो फोट्ठब्बानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रूपानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा रजनीये रूपे सारज्जति, न सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रूपानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति सद्दानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु सोतेन सद्दं सुत्वा रजनीये सद्दे सारज्जति, न सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति सद्दानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति गन्धानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु घानेन गन्धं घायित्वा रजनीये गन्धे सारज्जति, न सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति गन्धानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रसानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु जिव्हाय रसं सायित्वा रजनीये रसे सारज्जति, न सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति रसानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति फोट्ठब्बानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा रजनीये फोट्ठब्बे सारज्जति, न सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु अक्खमो होति फोट्ठब्बानं।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु न आहुनेय्यो होति न पाहुनेय्यो न दक्खिणेय्यो न अञ्जलिकरणीयो न अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स।

''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गंत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति रूपानं, खमो सद्दानं, खमो गन्धानं, खमो रसानं, खमो फोट्ठब्बानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति रूपानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो हत्थिकायं वा दिस्वा अस्सकायं वा दिस्वा रथकायं वा दिस्वा पत्तिकायं वा दिस्वा न संसीदति न विसीदति, सन्थम्भति सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति रूपानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति सद्दानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो हत्थिसद्दं वा सुत्वा अस्ससद्दं वा सुत्वा रथसद्दं वा सुत्वा पत्तिसद्दं वा सुत्वा भेरिपणवसङ्खतिणवनिन्नादसद्दं वा सुत्वा न संसीदति न विसीदति, सन्थम्भति सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति सद्दानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति गन्धानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो ये ते रञ्ञो नागा अभिजाता सङ्गामावचरा तेसं मुत्तकरीसस्स गन्धं घायित्वा न संसीदति न विसीदति, सन्थम्भति सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति गन्धानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति रसानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो एकिस्सा वा तिणोदकदत्तिया विमानितो द्वीहि वा तीहि वा चतूहि वा पञ्चहि वा तिणोदकदत्तीहि विमानितो न संसीदति न विसीदति, सन्थम्भति सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति रसानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति फोट्ठब्बानं? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो एकेन वा सरवेगेन विद्धो, द्वीहि वा तीहि वा चतूहि वा पञ्चहि वा सरवेगेहि विद्धो न संसीदति न विसीदति, सन्थम्भति सक्कोति सङ्गामं ओतरितुं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खमो होति फोट्ठब्बानं।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गंत्वेव सङ्खं गच्छति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रूपानं, खमो सद्दानं, खमो गन्धानं, खमो रसानं, खमो फोट्ठब्बानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रूपानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा रजनीये रूपे न सारज्जति, सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रूपानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति सद्दानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु सोतेन सद्दं सुत्वा रजनीये सद्दे न सारज्जति, सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति सद्दानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति गन्धानं। इध, भिक्खवे, भिक्खु घानेन गन्धं घायित्वा रजनीये गन्धे न सारज्जति, सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति गन्धानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रसानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु जिव्हाय रसं सायित्वा रजनीये रसे न सारज्जति, सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति रसानं।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति फोट्ठब्बानं? इध, भिक्खवे, भिक्खु कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा रजनीये फोट्ठब्बे न सारज्जति, सक्कोति चित्तं समादहितुं। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति फोट्ठब्बानं।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा''ति। नवमं।

१०. सोतसुत्तं

१४०. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गंत्वेव सङ्खं गच्छति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सोता च होति, हन्ता च, रक्खिता च, खन्ता च, गन्ता च।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सोता होति? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो यमेनं हत्थिदम्मसारथि [हत्थिदम्मसारथी

(सी॰)] कारणं कारेति – यदि वा कतपुब्बं यदि वा अकतपुब्बं – तं अट्ठिं कत्वा [अट्ठिकत्वा (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰) अ॰ नि॰ ४.११४] मनसि कत्वा सब्बं चेतसा [सब्बचेतसा (?)] समन्नाहरित्वा ओहितसोतो सुणाति। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सोता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो हन्ता होति? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो हत्थिम्पि हनति [हन्ति (सी॰ पी॰)], हत्थारुहम्पि हनति, अस्सम्पि हनति, अस्सारुहम्पि हनति, रथम्पि हनति, रथिकम्पि [रथारुहम्पि (पी॰)] हनति, पत्तिकम्पि हनति। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो हन्ता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो रक्खिता होति? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो रक्खति पुरिमं कायं, रक्खति पच्छिमं कायं, रक्खति पुरिमे पादे, रक्खति पच्छिमे पादे, रक्खति सीसं, रक्खति कण्णे, रक्खति दन्ते, रक्खति सोण्डं, रक्खति वालधिं, रक्खति हत्थारुहं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो रक्खिता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खन्ता होति? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो सङ्गामगतो खमो होति सत्तिप्पहारानं असिप्पहारानं उसुप्पहारानं फरसुप्पहारानं भेरिपणवसङ्खतिणवनिन्नादसद्दानं। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो खन्ता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, रञ्ञो नागो गन्ता होति? इध, भिक्खवे, रञ्ञो नागो यमेनं हत्थिदम्मसारथि दिसं पेसेति – यदि वा गतपुब्बं यदि वा अगतपुब्बं – तं खिप्पमेव गन्ता होति। एवं खो, भिक्खवे, रञ्ञो नागो गन्ता होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो नागो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गन्त्वेव सङ्खं गच्छति।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सोता च होति, हन्ता च, रक्खिता च, खन्ता च, गन्ता च।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु सोता होति? इध, भिक्खवे, भिक्खु तथागतप्पवेदिते धम्मविनये देसियमाने अट्ठिंकत्वा मनसि कत्वा सब्बं चेतसा समन्नाहरित्वा ओहितसोतो धम्मं सुणाति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु सोता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु हन्ता होति? इध, भिक्खवे, भिक्खु उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेति, पजहति विनोदेति (हनति) [( ) नत्थि सी॰ पी॰ पोत्थकेसु अ॰ नि॰ ४.११४] ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति; उप्पन्नं ब्यापादवितक्कं…पे॰… उप्पन्नं विहिंसावितक्कं…पे॰… उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे नाधिवासेति, पजहति विनोदेति (हनति) [( ) नत्थि सी॰ पी॰ पोत्थकेसु अ॰ नि॰ ४.११४] ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु हन्ता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु रक्खिता होति? इध, भिक्खवे, भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति; रक्खति चक्खुन्द्रियं; चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जति। सोतेन सद्दं सुत्वा… घानेन गन्धं घायित्वा… जिव्हाय रसं सायित्वा… कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा… मनसा धम्मं विञ्ञाय न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही। यत्वाधिकरणमेनं मनिन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा

अन्वास्सवेय्युं, तस्स संवराय पटिपज्जति; रक्खति मनिन्द्रियं; मनिन्द्रिये संवरं आपज्जति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु रक्खिता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु खन्ता होति? इध, भिक्खवे, भिक्खु खमो होति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डंसमकसवातातपसरीस [... सिरिंसप (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] पसम्फस्सानं; दुरुत्तानं दुरागतानं वचनपथानं उप्पन्नानं सारीरिकानं वेदनानं दुक्खानं तिब्बानं खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं पाणहरानं अधिवासकजातिको होति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु खन्ता होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु गन्ता होति? इध, भिक्खवे, भिक्खु या सा दिसा अगतपुब्बा इमिना दीघेन अद्धुना, यदिदं सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हाक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं, तं खिप्पञ्ञेव गन्ता होति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु गन्ता होति।

''इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति...पे॰... अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा''ति। दसमं।

राजवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

चक्कानुवत्तना राजा, यस्संदिसं द्वे चेव पत्थना।
अप्पंसुपति भत्तादो, अक्खमो च सोतेन चाति॥

(१५) ५. तिकण्डकीवग्गो

१. अवजानातिसुत्तं

१४१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे पञ्च? दत्वा अवजानाति, संवासेन अवजानाति, आधेय्यमुखो [आदियमुखो (सी॰), आदेय्यमुखो (स्या॰ कं॰), आदियमुखो (पी॰) अट्ठकथाय पठमसंवण्णनानुरूपं। पु॰ प॰ १९३ पस्सितब्बं] होति, लोलो होति, मन्दो मोमूहो होति [मन्दो होति मोमूहो (सी॰)]।

''कथञ्च, भिक्खवे, पुग्गलो दत्वा अवजानाति? इध, भिक्खवे, पुग्गलो पुग्गलस्स देति चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं। तस्स एवं होति – 'अहं देमि; अयं पटिग्गण्हाती'ति। तमेनं दत्वा अवजानाति। एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो दत्वा अवजानाति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पुग्गलो संवासेन अवजानाति? इध, भिक्खवे, पुग्गलो पुग्गलेन सद्धिं संवसति द्वे वा तीणि वा वस्सानि। तमेनं संवासेन अवजानाति। एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो संवासेन अवजानाति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पुग्गलो आधेय्यमुखो होति? इध, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो परस्स वण्णे वा अवण्णे वा

भासियमाने तं खिप्पञ्ञेव अधिमुच्चिता [अधिमुच्चितो (स्या०)] होति। एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो आधेय्यमुखो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पुग्गलो लोलो होति? इध, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती इत्तरपेमो इत्तरप्पसादो। एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो लोलो होति।

''कथञ्च, भिक्खवे, पुग्गलो मन्दो मोमूहो होति? इध, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो कुसलाकुसले धम्मे न जानाति, सावज्जानवज्जे धम्मे न जानाति, हीनप्पणीते धम्मे न जानाति, कण्हसुक्कसप्पटिभागे धम्मे न जानाति। एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो मन्दो मोमूहो होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मि''न्ति। पठमं।

२. आरभतिसुत्तं

१४२. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो आरभति च विप्पटिसारी च होति; तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति।

[पु० प० १९१] ''इध पन, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो आरभति, न विप्पटिसारी होति; तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति।

''इध पन, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो न आरभति, विप्पटिसारी होति; तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति।

''इध पन, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो न आरभति न विप्पटिसारी होति; तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति।

''इध पन, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो न आरभति न विप्पटिसारी होति; तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति।

''तत्र, भिक्खवे, य्वायं पुग्गलो आरभति च विप्पटिसारी च होति, तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सो एवमस्स वचनीयो – 'आयस्मतो खो आरम्भजा [आरब्भजा (पी० क०), आरभजा (स्या० कं०)] आसवा संविज्जन्ति, विप्पटिसारजा आसवा पवड्ढन्ति [संवड्ढन्ति (क०)], साधु वतायस्मा आरम्भजे आसवे पहाय विप्पटिसारजे आसवे पटिविनोदेत्वा चित्तं पञ्ञञ्च भावेतु [भावेतुं (सी० पी०)]; एवमायस्मा अमुना पञ्चमेन पुग्गलेन समसमो भविस्सती'''ति।

''तत्र, भिक्खवे, य्वायं पुग्गलो आरभति न विप्पटिसारी होति, तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सो एवमस्स वचनीयो – 'आयस्मतो खो आरम्भजा आसवा संविज्जन्ति, विप्पटिसारजा आसवा न पवड्ढन्ति, साधु वतायस्मा आरम्भजे आसवे पहाय चित्तं पञ्ञञ्च भावेतु; एवमायस्मा अमुना पञ्चमेन पुग्गलेन समसमो भविस्सती'''ति।

"तत्र, भिक्खवे, य्वायं पुग्गलो न आरभति विप्पटिसारी होति, तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सो एवमस्स वचनीयो – 'आयस्मतो खो आरम्भजा आसवा न संविज्जन्ति, विप्पटिसारजा आसवा पवड्ढन्ति, साधु वतायस्मा विप्पटिसारजे आसवे पटिविनोदेत्वा चित्तं पञ्ञञ्च भावेतु; एवमायस्मा अमुना पञ्चमेन पुग्गलेन समसमो भविस्सती'" ति।

"तत्र, भिक्खवे, य्वायं पुग्गलो न आरभति न विप्पटिसारी होति, तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं यथाभूतं नप्पजानाति यत्थस्स ते उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सो एवमस्स वचनीयो – 'आयस्मतो खो आरम्भजा आसवा न संविज्जन्ति, विप्पटिसारजा आसवा न पवड्ढन्ति, साधु वतायस्मा चित्तं पञ्ञञ्च भावेतु; एवमायस्मा अमुना पञ्चमेन पुग्गलेन समसमो भविस्सती'"ति।

"इति खो, भिक्खवे, इमे चत्तारो पुग्गला अमुना पञ्चमेन पुग्गलेन एवं ओवदियमाना एवं अनुसासियमाना अनुपुब्बेन आसवानं खयं पापुणन्ती"ति [पु॰ प॰ १९१]। दुतियं।

३. सारन्ददसुत्तं

१४३. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय वेसालिं पिण्डाय पाविसि। तेन खो पन समयेन पञ्चमत्तानं लिच्छविसतानं सारन्ददे चेतिये सन्निसिन्नानं सन्निपतितानं अयमन्तराकथा उदपादि – "पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। कतमेसं पञ्चन्नं? हत्थिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, अस्सरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, मणिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, इत्थिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, गहपतिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। इमेसं पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मि"न्ति।

अथ खो ते लिच्छवी मग्गे पुरिसं ठपेसुं [पेसेसुं (स्या॰ क॰)] – "यदा त्वं [यथा त्वं (सी॰ पी॰)], अम्भो पुरिस, पस्सेय्यासि भगवन्तं, अथ अम्हाकं आरोचेय्यासी"ति। अद्दसा खो सो पुरिसो भगवन्तं दूरतोव आगच्छन्तं; दिस्वान येन ते लिच्छवी तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा ते लिच्छवी एतदवोच – "अयं सो, भन्ते, भगवा गच्छति अरहं सम्मासम्बुद्धो; यस्सदानि कालं मञ्ञथा"ति।

अथ खो ते लिच्छवी येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठंसु। एकमन्तं ठिता खो ते लिच्छवी भगवन्तं एतदवोचुं –

"साधु, भन्ते, येन सारन्ददं चेतियं तेनुपसङ्कमतु अनुकम्पं उपादाया"ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन। अथ खो भगवा येन सारन्ददं चेतियं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा ते लिच्छवी एतदवोच – "काय नुत्थ, लिच्छवी, एतरहि कथाय सन्निसिन्ना, का च पन वो अन्तराकथा विप्पकता"ति? "इध, भन्ते, अम्हाकं सन्निसिन्नानं सन्निपतितानं अयमन्तराकथा उदपादि – 'पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। कतमेसं पञ्चन्नं? हत्थिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, अस्सरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, मणिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, इत्थिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, गहपतिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। इमेसं पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मि'"न्ति।

''कामाधिमुत्तानं वत, भो, लिच्छवीनं [कामाधिमुत्तानं वत वो लिच्छवीनं (सी०), कामाधिमुत्तानं वत वो लिच्छवी (स्या०), कामाधिमुत्तानंव वो लिच्छवी (?)] कामंयेव आरब्भ अन्तराकथा उदपादि। पञ्चन्नं, लिच्छवी, रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। कतमेसं पञ्चन्नं? तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं, तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसेता पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं, तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसितस्स विञ्ञाता पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं, तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसितस्स विञ्ञाता [विञ्ञातस्स (सी० पी०) अ० नि० ५.१९५] धम्मानुधम्मप्पटिपन्नो पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं, कतञ्ञू कतवेदी पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं। इमेसं खो, लिच्छवी, पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मि''न्ति। ततियं।

४. तिकण्डकीसुत्तं

१४४. एकं समयं भगवा साकेते विहरति तिकण्डकीवने [कण्डकीवने (सं० नि० ५.९०२)]। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''भिक्खवो''ति। ''भदन्ते''ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –

''साधु, भिक्खवे, भिक्खु कालेन कालं अप्पटिकूले पटिकूलसञ्ञी [अप्पटिक्कूले पटिक्कूलसञ्ञी (सी० स्या० कं० पी०)] विहरेय्य। साधु, भिक्खवे, भिक्खु कालेन कालं पटिकूले अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य। साधु, भिक्खवे, भिक्खु कालेन कालं अप्पटिकूले च पटिकूले च पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य। साधु, भिक्खवे, भिक्खु कालेन कालं पटिकूले च अप्पटिकूले च अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य। साधु, भिक्खवे, भिक्खु कालेन कालं पटिकूलञ्च अप्पटिकूलञ्च तदुभयं अभिनिवज्जेत्वा उपेक्खको विहरेय्य सतो सम्पजानो।

''किञ्च [कथञ्च (सी० पी० क०)], भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च अप्पटिकूले पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य? 'मा मे रजनीयेसु धम्मेसु रागो उदपादी'ति – इदं खो, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च अप्पटिकूले पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य।

''किञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूले अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य? 'मा मे दोसनीयेसु धम्मेसु दोसो उदपादी'ति – इदं खो, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूले अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य।

''किञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च अप्पटिकूले च पटिकूले च पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य? 'मा मे रजनीयेसु धम्मेसु रागो उदपादि, मा मे दोसनीयेसु धम्मेसु दोसो उदपादी'ति – इदं खो, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च अप्पटिकूले च पटिकूले च पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य।

''किञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूले च अप्पटिकूले च अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य? 'मा मे दोसनीयेसु धम्मेसु दोसो उदपादि, मा मे रजनीयेसु धम्मेसु रागो उदपादी'ति – इदं खो, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूले च अप्पटिकूले च अप्पटिकूलसञ्ञी विहरेय्य।

''किञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूलञ्च अप्पटिकूलञ्च तदुभयं अभिनिवज्जेत्वा उपेक्खको विहरेय्य? 'सतो सम्पजानो मा मे क्वचनि [क्वचिनि (सी० स्या० पी०)] कत्थचि किञ्चनं [किञ्चन (सी० पी०)] रजनीयेसु धम्मेसु रागो उदपादि, मा मे क्वचनि कत्थचि किञ्चनं दोसनीयेसु धम्मेसु दोसो उदपादि, मा मे क्वचनि कत्थचि किञ्चनं मोहनीयेसु धम्मेसु मोहो उदपादी'ति – इदं खो, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च पटिकूलञ्च अप्पटिकूलञ्च तदुभयं अभिनिवज्जेत्वा उपेक्खको विहरेय्य सतो सम्पजानो''ति। चतुत्थं।

५. निरयसुत्तं

१४५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति, अदिन्नादायी होति, कामेसुमिच्छाचारी होति, मुसावादी होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरतो होति, अदिन्नादाना पटिविरतो होति, कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतो होति, मुसावादा पटिविरतो होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति। पञ्चमं।

६. मित्तसुत्तं

१४६. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो न सेवितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? कम्मन्तं कारेति, अधिकरणं आदियति, पामोक्खेसु भिक्खूसु पटिविरुद्धो होति, दीघचारिकं अनवत्थचारिकं [अवत्थानचारिकं (स्या॰)] अनुयुत्तो विहरति, नप्पटिबलो होति कालेन कालं धम्मिया कथाय सन्दस्सेतुं समादपेतुं समुत्तेजेतुं सम्पहंसेतुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो न सेवितब्बो।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो सेवितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न कम्मन्तं कारेति, न अधिकरणं आदियति, न पामोक्खेसु भिक्खूसु पटिविरुद्धो होति, न दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तो विहरति, पटिबलो होति कालेन कालं धम्मिया कथाय सन्दस्सेतुं समादपेतुं समुत्तेजेतुं सम्पहंसेतुं। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो सेवितब्बो''ति। छट्ठं।

७. असप्पुरिसदानसुत्तं

१४७. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, असप्पुरिसदानानि। कतमानि पञ्च? असक्कच्चं देति, अचित्तीकत्वा [अचित्तिकत्वा (पी॰), अचितिं कत्वा (स्या॰), अचित्तिं कत्वा (क॰)] देति, असहत्था देति, अपविद्धं [अपविट्टं (स्या॰ कं॰)] देति, अनागमनदिट्ठिको देति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च असप्पुरिसदानानि।

''पञ्चिमानि, भिक्खवे, सप्पुरिसदानानि। कतमानि पञ्च? सक्कच्चं देति, चित्तीकत्वा देति, सहत्था देति, अनपविद्धं देति, आगमनदिट्ठिको देति। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च सप्पुरिसदानानी''ति। सत्तमं।

८. सप्पुरिसदानसुत्तं

१४८. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, सप्पुरिसदानानि। कतमानि पञ्च? सद्धाय दानं देति, सक्कच्चं दानं देति, कालेन दानं देति, अनुग्गहितचित्तो [अनग्गहितचित्तो (सी॰)] दानं देति, अत्तानञ्च परञ्च अनुपहच्च दानं देति।

''सद्धाय खो पन, भिक्खवे, दानं दत्वा यत्थ यत्थ तस्स दानस्स विपाको निब्बत्तति, अड्ढो च होति महद्धनो महाभोगो, अभिरूपो च होति दस्सनीयो पासादिको परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागतो।

“सक्कच्चं खो पन, भिक्खवे, दानं दत्वा यत्थ यत्थ तस्स दानस्स विपाको निब्बत्तति, अड्ढो च होति महद्धनो महाभोगो। येपिस्स ते होन्ति पुत्ताति वा दाराति वा दासाति वा पेस्साति वा कम्मकराति [कम्मकाराति (क॰)] वा, तेपि सुस्सूसन्ति सोतं ओदहन्ति अञ्ञा चित्तं उपट्ठपेन्ति।

“कालेन खो पन, भिक्खवे, दानं दत्वा यत्थ यत्थ तस्स दानस्स विपाको निब्बत्तति, अड्ढो च होति महद्धनो महाभोगो; कालागता चस्स अत्था पचुरा होन्ति।

“अनुग्गहितचित्तो खो पन, भिक्खवे, दानं दत्वा यत्थ यत्थ तस्स दानस्स विपाको निब्बत्तति, अड्ढो च होति महद्धनो महाभोगो; उळारेसु च पञ्चसु कामगुणेसु भोगाय चित्तं नमति।

“अत्तानञ्च परञ्च अनुपहच्च खो पन, भिक्खवे, दानं दत्वा यत्थ यत्थ तस्स दानस्स विपाको निब्बत्तति, अड्ढो च होति महद्धनो महाभोगो; न चस्स कुतोचि भोगानं उपघातो आगच्छति अग्गितो वा उदकतो वा राजतो वा चोरतो वा अप्पियतो वा दायादतो वा [अप्पियतो वा दायादतो वा (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰), अप्पियदायादतो वा (क॰)]। इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च सप्पुरिसदानानी”ति। अट्ठमं।

९. पठमसमयविमुत्तसुत्तं

१४९. “पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? कम्मारामता, भस्सारामता, निद्दारामता, सङ्गणिकारामता, यथाविमुत्तं चित्तं न पच्चवेक्खति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? न कम्मारामता, न भस्सारामता, न निद्दारामता, न सङ्गणिकारामता, यथाविमुत्तं चित्तं पच्चवेक्खति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ती”ति। नवमं।

१०. दुतियसमयविमुत्तसुत्तं

१५०. [कथा॰ २६७] “पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? कम्मारामता, भस्सारामता, निद्दारामता, इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता, भोजने अमत्तञ्ञुता। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? न कम्मारामता, न भस्सारामता, न निद्दारामता, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता, भोजने मत्तञ्ञुता। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ती”ति। दसमं।

तिकण्डकीवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

दत्वा अवजानाति आरभति च, सारन्दद तिकण्ड निरयेन च।
मित्तो असप्पुरिससप्पुरिसेन, समयविमुत्तं अपरे द्वेति॥

ततियपण्णासकं समत्तं।

४. चतुत्थपण्णासकं

(१६) १. सद्धम्मवग्गो

१. पठमसम्मत्तनियामसुत्तं

१५१. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? कथं परिभोति, कथिकं [कथितं (क॰)] परिभोति, अत्तानं परिभोति, विक्खित्तचित्तो धम्मं सुणाति, अनेकग्गचित्तो अयोनिसो च [अयोनिसो (स्या॰ कं॰)] मनसि करोति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? न कथं परिभोति, न कथिकं परिभोति, न अत्तानं परिभोति, अविक्खित्तचित्तो धम्मं सुणाति, एकग्गचित्तो योनिसो च मनसि करोति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्त''न्ति। पठमं।

२. दुतियसम्मत्तनियामसुत्तं

१५२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? कथं परिभोति, कथिकं परिभोति, अत्तानं परिभोति, दुप्पञ्ञो होति जळो एळमूगो, अनञ्ञाते अञ्ञातमानी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? न कथं परिभोति, न कथिकं परिभोति, न अत्तानं परिभोति, पञ्ञवा होति अजळो अनेळमूगो, न अनञ्ञाते अञ्ञातमानी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्त''न्ति। दुतियं।

३. ततियसम्मत्तनियामसुत्तं

१५३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? मक्खी धम्मं सुणाति मक्खपरियुट्ठितो, उपारम्भचित्तो [सउपारम्भचित्तो (स्या॰ कं॰)] धम्मं सुणाति रन्धगवेसी, धम्मदेसके आहतचित्तो होति खीलजातो [खिलजातो (स्या॰ पी॰)], दुप्पञ्ञो होति जळो एळमूगो,

अनञ्ञाते अञ्ञातमानी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तोपि सद्धम्मं अभब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं। कतमेहि पञ्चहि? अमक्खी धम्मं सुणाति न मक्खपरियुट्ठितो, अनुपारम्भचित्तो धम्मं सुणाति न रन्धगवेसी, धम्मदेसके अनाहतचित्तो होति अखीलजातो, पञ्ञवा होति अजळो अनेळमूगो, न अनञ्ञाते अञ्ञातमानी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सुणन्तो सद्धम्मं भब्बो नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्त''न्ति। ततियं।

४. पठमसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू न सक्कच्चं धम्मं सुणन्ति, न सक्कच्चं धम्मं परियापुणन्ति, न सक्कच्चं धम्मं धारेन्ति, न सक्कच्चं धातानं [धतानं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] धम्मानं अत्थं उपपरिक्खन्ति, न सक्कच्चं अत्थमञ्ञाय धम्ममञ्ञाय धम्मानुधम्मं पटिपज्जन्ति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू सक्कच्चं धम्मं सुणन्ति, सक्कच्चं धम्मं परियापुणन्ति, सक्कच्चं धम्मं धारेन्ति, सक्कच्चं धातानं धम्मानं अत्थं उपपरिक्खन्ति, सक्कच्चं अत्थमञ्ञाय धम्ममञ्ञाय धम्मानुधम्मं पटिपज्जन्ति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ती''ति। चतुत्थं।

५. दुतियसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू धम्मं न परियापुणन्ति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं न वित्थारेन परेसं देसेन्ति। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं न वित्थारेन परं [परेसं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰), परे (?)] वाचेन्ति। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं न वित्थारेन सज्झायं करोन्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं न चेतसा अनुवितक्केन्ति अनुविचारेन्ति मनसानुपेक्खन्ति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू धम्मं परियापुणन्ति – सुत्तं, गेय्यं, वेय्याकरणं, गाथं, उदानं, इतिवुत्तकं, जातकं, अब्भुतधम्मं, वेदल्लं। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परेसं देसेन्ति। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन परं वाचेन्ति। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं वित्थारेन सज्झायं करोन्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनुवितक्केन्ति अनुविचारेन्ति मनसानुपेक्खन्ति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ती”ति। पञ्चमं।

६. ततियसद्धम्मसम्मोससुत्तं

१५६. [अ॰ नि॰ ४.१६०] “पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू दुग्गहितं सुत्तन्तं परियापुणन्ति दुन्निक्खित्तेहि पदब्यञ्जनेहि। दुन्निक्खित्तस्स, भिक्खवे, पदब्यञ्जनस्स अत्थोपि दुन्नयो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू दुब्बचा होन्ति, दोवचस्सकरणेहि धम्मेहि समन्नागता, अक्खमा अप्पदक्खिणग्गाहिनो अनुसासनिं। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, ये ते भिक्खू बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा, ते न सक्कच्चं सुत्तन्तं परं वाचेन्ति; तेसं अच्चयेन छिन्नमूलको सुत्तन्तो होति अप्पटिसरणो। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, थेरा भिक्खू बाहुलिका होन्ति साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा, न वीरियं आरभन्ति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। तेसं पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति। सापि होति बाहुलिका साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा, न वीरियं आरभति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति।

“पुन चपरं, भिक्खवे, सङ्घो भिन्नो होति। सङ्घे खो पन, भिक्खवे, भिन्ने अञ्ञमञ्ञं अक्कोसा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिभासा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा च होन्ति, अञ्ञमञ्ञं परिच्चजना [परिच्चजा (स्या॰ कं॰)] च होन्ति। तत्थ

अप्पसन्ना चेव नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खू सुग्गहितं सुत्तन्तं परियापुणन्ति सुनिक्खित्तेहि पदब्यञ्जनेहि। सुनिक्खित्तस्स, भिक्खवे, पदब्यञ्जनस्स अत्थोपि सुनयो होति। अयं, भिक्खवे, पठमो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खू सुवचा होन्ति सोवचस्सकरणेहि धम्मेहि समन्नागता, खमा पदक्खिणग्गाहिनो अनुसासनिं। अयं, भिक्खवे, दुतियो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, ये ते भिक्खू बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा, ते सक्कच्चं सुत्तन्तं परं वाचेन्ति; तेसं अच्चयेन न छिन्नमूलको [अच्छिन्नमूलको (क॰) अ॰ नि॰ ४.१६०] सुत्तन्तो होति सप्पटिसरणो। अयं, भिक्खवे, ततियो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, थेरा भिक्खू न बाहुलिका होन्ति न साथलिका, ओक्कमने निक्खित्तधुरा पविवेके पुब्बङ्गमा; वीरियं आरभन्ति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। तेसं पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति। सापि होति न बाहुलिका न साथलिका, ओक्कमने निक्खित्तधुरा पविवेके पुब्बङ्गमा, वीरियं आरभति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सङ्घो समग्गो सम्मोदमानो अविवदमानो एकुद्देसो फासु विहरति। सङ्घे खो पन, भिक्खवे, समग्गे न चेव अञ्ञमञ्ञं अक्कोसा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिभासा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिक्खेपा होन्ति, न च अञ्ञमञ्ञं परिच्चजना होन्ति। तत्थ अप्पसन्ना चेव पसीदन्ति, पसन्नानञ्च भिय्योभावो होति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो धम्मो सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ती''ति। छट्ठं।

७. दुक्कथासुत्तं

१५७. ''पञ्चन्नं, भिक्खवे, पुग्गलानं कथा दुक्कथा पुग्गले पुग्गलं [पुग्गलं पुग्गलं (सी॰ पी॰)] उपनिधाय। कतमेसं पञ्चन्नं? अस्सद्धस्स, भिक्खवे, सद्धाकथा दुक्कथा; दुस्सीलस्स सीलकथा दुक्कथा; अप्पस्सुतस्स बाहुसच्चकथा दुक्कथा; मच्छरिस्स [मच्छरियस्स (सी॰ पी॰ क॰)] चागकथा दुक्कथा; दुप्पञ्ञस्स पञ्ञाकथा दुक्कथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, अस्सद्धस्स सद्धाकथा दुक्कथा? अस्सद्धो, भिक्खवे, सद्धाकथाय कच्छमानाय अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सद्धासम्पदं अत्तनि न समनुपस्सति [न सम्पस्सति (सी॰)], न च लभति ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा अस्सद्धस्स सद्धाकथा दुक्कथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, दुस्सीलस्स सीलकथा दुक्कथा? दुस्सीलो, भिक्खवे, सीलकथाय कच्छमानाय अभिसज्जति

कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सीलसम्पदं अत्तनि न समनुपस्सति न च लभति ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा दुस्सीलस्स सीलकथा दुक्कथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, अप्पस्सुतस्स बाहुसच्चकथा दुक्कथा? अप्पस्सुतो, भिक्खवे, बाहुसच्चकथाय कच्छमानाय अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सुतसम्पदं अत्तनि न समनुपस्सति, न च लभति ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा अप्पस्सुतस्स बाहुसच्चकथा दुक्कथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, मच्छरिस्स चागकथा दुक्कथा? मच्छरी, भिक्खवे, चागकथाय कच्छमानाय अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, चागसम्पदं अत्तनि न समनुपस्सति न च लभति ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा मच्छरिस्स चागकथा दुक्कथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, दुप्पञ्ञस्स पञ्ञाकथा दुक्कथा? दुप्पञ्ञो, भिक्खवे, पञ्ञाकथाय कच्छमानाय अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, पञ्ञासम्पदं अत्तनि न समनुपस्सति, न च लभति ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा दुप्पञ्ञस्स पञ्ञाकथा दुक्कथा। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं पुग्गलानं कथा दुक्कथा पुग्गले पुग्गलं उपनिधाय।

''पञ्चन्नं, भिक्खवे, पुग्गलानं कथा सुकथा पुग्गले पुग्गलं उपनिधाय। कतमेसं पञ्चन्नं? सद्धस्स, भिक्खवे, सद्धाकथा सुकथा; सीलवतो सीलकथा सुकथा; बहुस्सुतस्स बाहुसच्चकथा सुकथा; चागवतो चागकथा सुकथा; पञ्ञवतो पञ्ञाकथा सुकथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, सद्धस्स सद्धाकथा सुकथा? सद्धो, भिक्खवे, सद्धाकथाय कच्छमानाय नाभिसज्जति न कुप्पति न ब्यापज्जति न पतित्थीयति न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सद्धासम्पदं अत्तनि समनुपस्सति लभति च ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा सद्धस्स सद्धाकथा सुकथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, सीलवतो सीलकथा सुकथा? सीलवा, भिक्खवे, सीलकथाय कच्छमानाय नाभिसज्जति न कुप्पति न ब्यापज्जति न पतित्थीयति न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सीलसम्पदं अत्तनि समनुपस्सति, लभति च ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा सीलवतो सीलकथा सुकथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, बहुस्सुतस्स बाहुसच्चकथा सुकथा? बहुस्सुतो, भिक्खवे, बाहुसच्चकथाय कच्छमानाय नाभिसज्जति न कुप्पति न ब्यापज्जति न पतित्थीयति न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, सुतसम्पदं अत्तनि समनुपस्सति, लभति च ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा बहुस्सुतस्स बाहुसच्चकथा सुकथा।

''कस्मा च, भिक्खवे, चागवतो चागकथा सुकथा? चागवा, भिक्खवे, चागकथाय कच्छमानाय नाभिसज्जति न कुप्पति न ब्यापज्जति न पतित्थीयति न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, चागसम्पदं अत्तनि समनुपस्सति, लभति च ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा चागवतो चागकथा सुकथा।

"कस्मा च, भिक्खवे, पञ्ञवतो पञ्ञाकथा सुकथा? पञ्ञवा, भिक्खवे, पञ्ञाकथाय कच्छमानाय नाभिसज्जति न कुप्पति न ब्यापज्जति न पतित्थीयति न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति। तं किस्स हेतु? तञ्हि सो, भिक्खवे, पञ्ञासम्पदं अत्तनि समनुपस्सति लभति च ततोनिदानं पीतिपामोज्जं। तस्मा पञ्ञवतो पञ्ञाकथा सुकथा। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं पुग्गलानं कथा सुकथा पुग्गले पुग्गलं उपनिधाया"ति। सत्तमं।

८. सारज्जसुत्तं

१५८. "पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सारज्जं ओक्कन्तो [ओक्कमन्तो (क॰)] होति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु अस्सद्धो होति, दुस्सीलो होति, अप्पस्सुतो होति, कुसीतो होति, दुपञ्ञो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु सारज्जं ओक्कन्तो होति।

"पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु विसारदो होति। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सद्धो होति, सीलवा होति, बहुस्सुतो होति, आरद्धवीरियो होति, पञ्ञवा होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु विसारदो होती"ति। अट्ठमं।

९. उदायीसुत्तं

१५९. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी महतिया गिहिपरिसाय परिवुतो धम्मं देसेन्तो निसिन्नो होति। अद्दसा खो आयस्मा आनन्दो आयस्मन्तं उदायिं महतिया गिहिपरिसाय परिवुतं धम्मं देसेन्तं निसिन्नं। दिस्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – "आयस्मा, भन्ते, उदायी महतिया गिहिपरिसाय परिवुतो धम्मं देसेती"ति [देसेन्तो निसिन्नो"ति (स्या॰)]।

"न खो, आनन्द, सुकरं परेसं धम्मं देसेतुं। परेसं, आनन्द, धम्मं देसेन्तेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परेसं धम्मो देसेतब्बो। कतमे पञ्च? 'अनुपुब्बिं कथं [आनुपुब्बिकथं (सी॰), अनुपुब्बिकथं (स्या॰ पी॰ क॰)] कथेस्सामी'ति परेसं धम्मो देसेतब्बो; 'परियायदस्सावी कथं कथेस्सामी'ति परेसं धम्मो देसेतब्बो; 'अनुद्दयतं पटिच्च कथं कथेस्सामी'ति परेसं धम्मो देसेतब्बो; 'न आमिसन्तरो कथं कथेस्सामी'ति परेसं धम्मो देसेतब्बो; 'अत्तानञ्च परञ्च अनुपहच्च कथं कथेस्सामी'ति परेसं धम्मो देसेतब्बो। न खो, आनन्द, सुकरं परेसं धम्मं देसेतुं। परेसं, आनन्द, धम्मं देसेन्तेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परेसं धम्मो देसेतब्बो"ति। नवमं।

१०. दुप्पटिविनोदयसुत्तं

१६०. "पञ्चिमे, भिक्खवे, उप्पन्ना दुप्पटिविनोदया। कतमे पञ्च? उप्पन्नो रागो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नो दोसो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नो मोहो दुप्पटिविनोदयो, उप्पन्नं पटिभानं दुप्पटिविनोदयं, उप्पन्नं गमिकचित्तं दुप्पटिविनोदयं। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च उप्पन्ना दुप्पटिविनोदया"ति। दसमं।

सद्धम्मवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

तयो सम्मत्तनियामा, तयो सद्धम्मसम्मोसा।
दुक्कथा चेव सारज्जं, उदायिदुब्बिनोदयाति॥

(१७) २. आघातवग्गो

१. पठमआघातपटिविनयसुत्तं

१६१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आघातपटिविनया यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो। कतमे पञ्च? यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले आघातो जायेथ, मेत्ता तस्मिं पुग्गले भावेतब्बा; एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले आघातो जायेथ, करुणा तस्मिं पुग्गले भावेतब्बा; एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले आघातो जायेथ, उपेक्खा तस्मिं पुग्गले भावेतब्बा; एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले आघातो जायेथ, असतिअमनसिकारो तस्मिं पुग्गले आपज्जितब्बो; एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले आघातो जायेथ, कम्मस्सकता तस्मिं पुग्गले अधिट्ठातब्बा – 'कम्मस्सको अयमायस्मा कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मप्पटिसरणो, यं कम्मं करिस्सति कल्याणं वा पापकं वा तस्स दायादो भविस्सती'ति; एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आघातपटिविनया, यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो''ति। पठमं।

२. दुतियआघातपटिविनयसुत्तं

१६२. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''आवुसो भिक्खवे''ति। ''आवुसो''ति खो ते भिक्खू आयस्मतो सारिपुत्तस्स पच्चस्सोसुं। आयस्मा सारिपुत्तो एतदवोच –

''पञ्चिमे, आवुसो, आघातपटिविनया यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो। कतमे पञ्च? इधावुसो, एकच्चो पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो होति परिसुद्धवचीसमाचारो; एवरूपेपि, आवुसो, पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। इध पनावुसो, एकच्चो पुग्गलो अपरिसुद्धवचीसमाचारो होति परिसुद्धकायसमाचारो; एवरूपेपि, आवुसो, पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। इध पनावुसो, एकच्चो पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो होति अपरिसुद्धवचीसमाचारो, लभति च कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं; एवरूपेपि, आवुसो, पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। इध पनावुसो, एकच्चो पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो होति अपरिसुद्धवचीसमाचारो, न च लभति कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं; एवरूपेपि, आवुसो, पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। इध पनावुसो, एकच्चो पुग्गलो परिसुद्धकायसमाचारो परिसुद्धवचीसमाचारो, लभति च कालेन वा कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं; एवरूपेपि, आवुसो, पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो।

''तत्रावुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो परिसुद्धवचीसमाचारो, कथं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो? सेय्यथापि, आवुसो, भिक्खु पंसुकूलिको रथियाय नन्तकं दिस्वा वामेन पादेन निग्गण्हित्वा दक्खिणेन पादेन पत्थरित्वा [वित्थारेत्वा (सी॰ पी॰)], यो तत्थ सारो तं परिपातेत्वा आदाय पक्कमेय्य; एवमेवं ख्वावुसो, य्वायं पुग्गलो

अपरिसुद्धकायसमाचारो परिसुद्धवचीसमाचारो, यास्स अपरिसुद्धकायसमाचारता न सास्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा, या च ख्वास्स परिसुद्धवचीसमाचारता सास्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा। एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो।

''तत्रावुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धवचीसमाचारो परिसुद्धकायसमाचारो, कथं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो? सेय्यथापि, आवुसो, पोक्खरणी सेवालपणकपरियोनद्धा। अथ पुरिसो आगच्छेय्य घम्माभितत्तो घम्मपरेतो किलन्तो तसितो पिपासितो। सो तं पोक्खरणिं ओगाहेत्वा उभोहि हत्थेहि इतिचिति च सेवालपणकं अपवियूहित्वा अञ्जलिना पिवित्वा पक्कमेय्य। एवमेवं खो, आवुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धवचीसमाचारो परिसुद्धकायसमाचारो, यास्स अपरिसुद्धवचीसमाचारता न सास्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा, या च ख्वास्स परिसुद्धकायसमाचारता सास्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा। एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो।

''तत्रावुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो अपरिसुद्धवचीसमाचारो लभति च कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, कथं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो? सेय्यथापि, आवुसो, परित्तं गोपदे [गोपदके (सी॰ स्या॰)] उदकं। अथ पुरिसो आगच्छेय्य घम्माभितत्तो घम्मपरेतो किलन्तो तसितो पिपासितो। तस्स एवमस्स – 'इदं खो परित्तं गोपदे उदकं। सचाहं अञ्जलिना वा पिविस्सामि भाजनेन वा खोभेस्सामिपि तं लोळेस्सामिपि तं अपेय्यम्पि तं करिस्सामि। यंनूनाहं चतुक्कुण्डिको [चतुगुण्डिको (सी॰), चतुकुण्डिको (स्या॰ कं॰ पी॰), चतुकोण्डिको (दी॰ नि॰ ३.७)] निपतित्वा गोपीतकं पिवित्वा पक्कमेय्य'न्ति। सो चतुक्कुण्डिको निपतित्वा गोपीतकं पिवित्वा पक्कमेय्य। एवमेवं खो, आवुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो अपरिसुद्धवचीसमाचारो लभति च कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, यास्स अपरिसुद्धकायसमाचारता न सास्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा; यापिस्स अपरिसुद्धवचीसमाचारता न सापिस्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा। यञ्च खो सो लभति कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, तमेवस्स [तदेवस्स (सी॰ स्या॰)] तस्मिं समये मनसि कातब्बं। एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो।

''तत्रावुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो अपरिसुद्धवचीसमाचारो न च लभति कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, कथं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो? सेय्यथापि, आवुसो, पुरिसो आबाधिको दुक्खितो बाळ्हगिलानो अद्धानमग्गप्पटिपन्नो। तस्स पुरतोपिस्स दूरे गामो पच्छतोपिस्स दूरे गामो। सो न लभेय्य सप्पायानि भोजनानि, न लभेय्य सप्पायानि भेसज्जानि, न लभेय्य पतिरूपं उपट्ठाकं, न लभेय्य गामन्तनायकं। तमेनं अञ्ञतरो पुरिसो पस्सेय्य अद्धानमग्गप्पटिपन्नो। सो तस्मिं पुरिसे कारुञ्ञंयेव उपट्ठापेय्य, अनुद्दयंयेव उपट्ठापेय्य, अनुकम्पंयेव उपट्ठापेय्य – 'अहो वतायं पुरिसो लभेय्य सप्पायानि भोजनानि, लभेय्य सप्पायानि भेसज्जानि, लभेय्य पतिरूपं उपट्ठाकं, लभेय्य गामन्तनायकं! तं किस्स हेतु? मायं [अयं (क॰)] पुरिसो इधेव अनयब्यसनं आपज्जी'ति [आपज्जेय्य (क॰)]! एवमेवं खो, आवुसो, य्वायं पुग्गलो अपरिसुद्धकायसमाचारो अपरिसुद्धवचीसमाचारो न च लभति कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, एवरूपेपि [एवरूपे (पी॰)], आवुसो, पुग्गले कारुञ्ञंयेव उपट्ठापेतब्बं अनुद्दयायेव उपट्ठापेतब्बा अनुकम्पायेव उपट्ठापेतब्बा – 'अहो वत अयमायस्मा कायदुच्चरितं पहाय कायसुचरितं भावेय्य, वचीदुच्चरितं पहाय वचीसुचरितं भावेय्य, मनोदुच्चरितं पहाय मनोसुचरितं भावेय्य! तं किस्स हेतु? मायं आयस्मा [अयमायस्मा (क॰)] कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जी'ति [उपपज्जतीति (क॰)]! एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो।

''तत्रावुसो, य्वायं पुग्गलो परिसुद्धकायसमाचारो परिसुद्धवचीसमाचारो लभति च कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो

पसादं, कथं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो? सेय्यथापि, आवुसो, पोक्खरणी अच्छोदका सातोदका सीतोदका [अच्छोदिका सातोदिका सीतोदिका (सी॰)] सेतका [सेतोदका (क॰)] सुपतित्था रमणीया नानारुक्खेहि सञ्छन्ना। अथ पुरिसो आगच्छेय्य घम्माभितत्तो घम्मपरेतो किलन्तो तसितो पिपासितो। सो तं पोक्खरणिं ओगाहेत्वा न्हात्वा च पिवित्वा च पच्चुत्तरित्वा तत्थेव रुक्खच्छायाय निसीदेय्य वा निपज्जेय्य वा।

एवमेवं खो, आवुसो, य्वायं पुग्गलो परिसुद्धकायसमाचारो परिसुद्धवचीसमाचारो लभति च कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, यापिस्स परिसुद्धकायसमाचारता सापिस्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा; यापिस्स परिसुद्धवचीसमाचारता सापिस्स तस्मिं समये मनसि कातब्बा; यम्पि लभति कालेन कालं चेतसो विवरं चेतसो पसादं, तम्पिस्स तस्मिं समये मनसि कातब्बं। एवं तस्मिं पुग्गले आघातो पटिविनेतब्बो। समन्तपासादिकं, आवुसो, पुग्गलं आगम्म चित्तं पसीदति।

''इमे खो, आवुसो, पञ्च आघातपटिविनया, यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो''ति। दुतियं।

३. साकच्छसुत्तं

१६३. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''आवुसो भिक्खवे''ति। ''आवुसो''ति खो ते भिक्खू आयस्मतो सारिपुत्तस्स पच्चस्सोसुं। आयस्मा सारिपुत्तो एतदवोच –

[अ॰ नि॰ ५.६५-६६] ''पञ्चहावुसो, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं साकच्छो सब्रह्मचारीनं। कतमेहि पञ्चहि? इधावुसो, भिक्खु अत्तना च सीलसम्पन्नो होति, सीलसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च समाधिसम्पन्नो होति, समाधिसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च पञ्ञासम्पन्नो होति, पञ्ञासम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिसम्पन्नो होति, विमुत्तिसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति। इमेहि खो, आवुसो, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलं साकच्छो सब्रह्मचारीन''न्ति। ततियं।

४. साजीवसुत्तं

१६४. [अ॰ नि॰ ५.६५] तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि...पे॰... ''पञ्चहि, आवुसो, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाजीवो सब्रह्मचारीनं। कतमेहि पञ्चहि? इधावुसो, भिक्खु अत्तना च सीलसम्पन्नो होति, सीलसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च समाधिसम्पन्नो होति, समाधिसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च पञ्ञासम्पन्नो होति, पञ्ञासम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिसम्पन्नो होति, विमुत्तिसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति; अत्तना च विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्नो होति, विमुत्तिञाणदस्सनसम्पदाकथाय च आगतं पञ्हं ब्याकत्ता होति। इमेहि खो, आवुसो, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाजीवो सब्रह्मचारीन''न्ति। चतुत्थं।

५. पञ्हपुच्छासुत्तं

१६५. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि...पे॰... ''यो हि कोचि, आवुसो, परं पञ्हं पुच्छति, सब्बो सो

पञ्चहि ठानेहि, एतेसं वा अञ्ञतरेन। कतमेहि पञ्चहि? मन्दत्ता मोमूहत्ता [मोमुहत्ता (सी॰)] परं पञ्हं पुच्छति, पापिच्छो इच्छापकतो परं पञ्हं पुच्छति, परिभवं परं पञ्हं पुच्छति, अञ्ञातुकामो परं पञ्हं पुच्छति, अथ वा पनेवंचित्तो [अथ वा पकुप्पन्तो (सी॰ पी॰)] परं पञ्हं पुच्छति – 'सचे मे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति इच्चेतं कुसलं, नो चे [नो च (स्या॰)] मे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति अहमस्स सम्मदेव ब्याकरिस्सामी'ति। यो हि कोचि, आवुसो, परं पञ्हं पुच्छति, सब्बो सो इमेहि पञ्चहि ठानेहि, एतेसं वा अञ्ञतरेन। अहं खो पनावुसो, एवंचित्तो परं पञ्हं पुच्छामि – 'सचे मे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति इच्चेतं कुसलं, नो चे मे पञ्हं पुट्ठो सम्मदेव ब्याकरिस्सति, अहमस्स सम्मदेव ब्याकरिस्सामी''ति। पञ्चमं।

६. निरोधसुत्तं

१६६. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि…पे॰… ''इधावुसो, भिक्खु सीलसम्पन्नो समाधिसम्पन्नो पञ्ञासम्पन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि [समापज्जेय्यपि वुट्ठहेय्यपि (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] – अत्थेतं ठानं। नो चे दिट्ठेव धम्मे अञ्ञं आराधेय्य, अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं [कबळिंकाराहारभक्खानं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठान''न्ति।

एवं वुत्ते आयस्मा उदायी आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच – ''अट्ठानं खो एतं, आवुसो सारिपुत्त, अनवकासो यं सो भिक्खु अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – नत्थेतं ठान''न्ति।

दुतियम्पि खो…पे॰… ततियम्पि खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''इधावुसो, भिक्खु सीलसम्पन्नो समाधिसम्पन्नो पञ्ञासम्पन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठानं। नो चे दिट्ठेव धम्मे अञ्ञं आराधेय्य, अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठान''न्ति।

ततियम्पि खो आयस्मा उदायी आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच – ''अट्ठानं खो एतं, आवुसो सारिपुत्त, अनवकासो यं सो भिक्खु अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – नत्थेतं ठान''न्ति।

अथ खो आयस्मतो सारिपुत्तस्स एतदहोसि – ''यावततियकम्पि [यावततियम्पि (सी॰ स्या॰ पी॰)] खो मे आयस्मा उदायी पटिक्कोसति, न च मे कोचि भिक्खु अनुमोदति। यंनूनाहं येन भगवा तेनुपसङ्कमेय्य''न्ति। अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''इधावुसो, भिक्खु सीलसम्पन्नो समाधिसम्पन्नो पञ्ञासम्पन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठानं। नो चे दिट्ठेव धम्मे अञ्ञं आराधेय्य, अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठान''न्ति।

एवं वुत्ते आयस्मा उदायी आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच – ''अट्ठानं खो एतं, आवुसो सारिपुत्त, अनवकासो यं सो

भिक्खु अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – नत्थेतं ठान''न्ति।

दुतियम्पि खो...पे०... ततियम्पि खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''इधावुसो, भिक्खु सीलसम्पन्नो समाधिसम्पन्नो पञ्ञासम्पन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठानं। नो चे दिट्ठेव धम्मे अञ्ञं आराधेय्य, अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठान''न्ति।

ततियम्पि खो आयस्मा उदायी आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच – ''अट्ठानं खो एतं, आवुसो सारिपुत्त, अनवकासो यं सो भिक्खु अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – नत्थेतं ठान''न्ति।

अथ खो आयस्मतो सारिपुत्तस्स एतदहोसि – ''भगवतोपि खो मे सम्मुखा आयस्मा उदायी यावततियकं पटिक्कोसति, न च मे कोचि भिक्खु अनुमोदति। यंनूनाहं तुण्ही अस्स''न्ति। अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो तुण्ही अहोसि।

अथ खो भगवा आयस्मन्तं उदायिं आमन्तेसि – ''कं पन त्वं, उदायि, मनोमयं कायं पच्चेसी''ति? ''ये ते, भन्ते, देवा अरूपिनो सञ्ञामया''ति। ''किं नु खो तुय्हं, उदायि, बालस्स अब्यत्तस्स भणितेन! त्वम्पि नाम भणितब्बं मञ्ञसी''ति! अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि – ''अत्थि नाम, आनन्द, थेरं भिक्खुं विहेसियमानं अज्झुपेक्खिस्सथ। न हि नाम, आनन्द, कारुञ्ञम्पि भविस्सति थेरम्हि [ब्यत्तम्हि (स्या० कं० क०)] भिक्खुम्हि विहेसियमानम्ही''ति।

अथ खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''इध, भिक्खवे, भिक्खु सीलसम्पन्नो समाधिसम्पन्नो पञ्ञासम्पन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठानं। नो चे दिट्ठेव धम्मे अञ्ञं आराधेय्य, अतिक्कम्मेव कबळीकाराहारभक्खानं देवानं सहब्यतं अञ्ञतरं मनोमयं कायं उपपन्नो सञ्ञावेदयितनिरोधं समापज्जेय्यापि वुट्ठहेय्यापि – अत्थेतं ठान''न्ति। इदमवोच भगवा। इदं वत्वान सुगतो उट्ठायासना विहारं पाविसि।

अथ खो आयस्मा आनन्दो अचिरपक्कन्तस्स भगवतो येनायस्मा उपवाणो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मन्तं उपवाणं एतदवोच – ''इधावुसो उपवाण, अञ्ञे थेरे भिक्खू विहेसेन्ति। मयं तेन न मुच्चाम। अनच्छरियं खो, पनेतं आवुसो उपवाण, यं भगवा सायन्हसमयं पटिसल्लाना वुट्ठितो एतदेव आरब्भ उदाहरेय्य यथा आयस्मन्तंयेवेत्थ उपवाणं पटिभासेय्य। इदानेव अम्हाकं सारज्जं ओक्कन्त''न्ति। अथ खो भगवा सायन्हसमयं पटिसल्लाना वुट्ठितो येन उपट्ठानसाला तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा आयस्मन्तं उपवाणं एतदवोच –

''कतीहि नु खो, उपवाण, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति? ''पञ्चहि, भन्ते, धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। कतमेहि पञ्चहि? इध, भन्ते, थेरो भिक्खु सीलवा होति...पे०... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति...पे०... दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो पोरिया वाचाय समन्नागतो विस्सट्ठाय अनेलगलाय [अनेलगळाय (स्या० कं०)] अत्थस्स विञ्ञापनिया; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानं खया...पे०... सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि खो, भन्ते, पञ्चहि

धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति।

''साधु साधु, उपवाण! इमेहि खो, उपवाण, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो थेरो भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च। इमे चे, उपवाण, पञ्च धम्मा थेरस्स भिक्खुनो न संविज्जेय्युं, तं सब्रह्मचारी न सक्करेय्युं न गरुं करेय्युं न मानेय्युं न पूजेय्युं खण्डिच्चेन पालिच्चेन वलित्तचताय। यस्मा च खो, उपवाण, इमे पञ्च धम्मा थेरस्स भिक्खुनो संविज्जन्ति, तस्मा तं सब्रह्मचारी सक्करोन्ति गरुं करोन्ति मानेन्ति पूजेन्ती''ति। छट्ठं।

७. चोदनासुत्तं

१६७. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''चोदकेन, आवुसो, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो''।

''कतमे पञ्च? कालेन वक्खामि, नो अकालेन; भूतेन वक्खामि, नो अभूतेन; सण्हेन वक्खामि, नो फरुसेन; अत्थसंहितेन वक्खामि, नो अनत्थसंहितेन; मेत्तचित्तो [मेत्तचित्तेन (सी॰ पी॰ क॰) चूळव॰ ४०० पस्सितब्बं] वक्खामि, नो दोसन्तरो [दोसन्तरेन (सी॰ पी॰ क॰)]। चोदकेन, आवुसो, भिक्खुना परं चोदेतुकामेन इमे पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो।

''इधाहं, आवुसो, एकच्चं पुग्गलं पस्सामि अकालेन चोदियमानं नो कालेन कुपितं, अभूतेन चोदियमानं नो भूतेन कुपितं, फरुसेन चोदियमानं नो सण्हेन कुपितं, अनत्थसंहितेन चोदियमानं नो अत्थसंहितेन कुपितं, दोसन्तरेन चोदियमानं नो मेत्तचित्तेन कुपितं।

''अधम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो [उपदहितब्बो (सी॰ स्या॰ पी॰)] – 'अकालेनायस्मा चुदितो नो कालेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; अभूतेनायस्मा चुदितो नो भूतेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; फरुसेनायस्मा चुदितो नो सण्हेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; अनत्थसंहितेनायस्मा चुदितो नो अत्थसंहितेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; दोसन्तरेनायस्मा चुदितो नो मेत्तचित्तेन, अलं ते अविप्पटिसाराया'ति। अधम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो इमेहि पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो।

''अधम्मचोदकस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि विप्पटिसारो उपदहातब्बो – 'अकालेन ते, आवुसो, चोदितो [चुदितो (सी॰ स्या॰ पी॰)] नो कालेन, अलं ते विप्पटिसाराय; अभूतेन ते, आवुसो, चोदितो नो भूतेन, अलं ते विप्पटिसाराय; फरुसेन ते, आवुसो, चोदितो नो सण्हेन, अलं ते विप्पटिसाराय; अनत्थसंहितेन ते, आवुसो, चोदितो नो अत्थसंहितेन, अलं ते विप्पटिसाराय; दोसन्तरेन ते, आवुसो, चोदितो नो मेत्तचित्तेन, अलं ते विप्पटिसाराया'ति। अधम्मचोदकस्स, आवुसो, भिक्खुनो इमेहि पञ्चहाकारेहि विप्पटिसारो उपदहातब्बो। तं किस्स हेतु? यथा न अञ्ञोपि भिक्खु अभूतेन चोदेतब्बं मञ्ञेय्याति।

''इध पनाहं, आवुसो, एकच्चं पुग्गलं पस्सामि कालेन चोदियमानं नो अकालेन कुपितं, भूतेन चोदियमानं नो अभूतेन कुपितं, सण्हेन चोदियमानं नो फरुसेन कुपितं, अत्थसंहितेन चोदियमानं नो अनत्थसंहितेन कुपितं, मेत्तचित्तेन चोदियमानं नो दोसन्तरेन कुपितं।

"धम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि विप्पटिसारो उपदहातब्बो – 'कालेनायस्मा चुदितो नो अकालेन, अलं ते विप्पटिसाराय; भूतेनायस्मा चुदितो नो अभूतेन, अलं ते विप्पटिसाराय; सण्हेनायस्मा चुदितो नो फरुसेन, अलं ते विप्पटिसाराय; अत्थसंहितेनायस्मा चुदितो नो अनत्थसंहितेन, अलं ते विप्पटिसाराय; मेत्तचित्तेनायस्मा चुदितो नो दोसन्तरेन, अलं ते विप्पटिसाराया'ति। धम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो इमेहि पञ्चहाकारेहि विप्पटिसारो उपदहातब्बो।

"धम्मचोदकस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो – 'कालेन ते, आवुसो, चोदितो नो अकालेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; भूतेन ते, आवुसो, चोदितो नो अभूतेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; सण्हेन ते, आवुसो, चोदितो नो फरुसेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; अत्थसंहितेन ते, आवुसो, चोदितो नो अनत्थसंहितेन, अलं ते अविप्पटिसाराय; मेत्तचित्तेन ते, आवुसो, चोदितो नो दोसन्तरेन, अलं ते अविप्पटिसाराया'ति। धम्मचोदकस्स, आवुसो, भिक्खुनो इमेहि पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो। तं किस्स हेतु? यथा अञ्ञोपि भिक्खु भूतेन चोदितब्बं मञ्ञेय्याति।

"चुदितेन, आवुसो, पुग्गलेन द्वीसु धम्मेसु पतिट्ठातब्बं – सच्चे च, अकुप्पे च। मं चेपि [पञ्चहि (स्या॰ क॰)], आवुसो, परे चोदेय्युं कालेन वा अकालेन वा भूतेन वा अभूतेन वा सण्हेन वा फरुसेन वा अत्थसंहितेन वा अनत्थसंहितेन वा मेत्तचित्ता [मेत्तचित्तेन (सी॰ पी॰ क॰) म॰ नि॰ १.२२७ पस्सितब्बं] वा दोसन्तरा [दोसन्तरेन (सी॰ पी॰ क॰)] वा, अहम्पि द्वीसुयेव धम्मेसु पतिट्ठहेय्यं – सच्चे च, अकुप्पे च। सचे जानेय्यं – 'अत्थेसो मयि धम्मो'ति, 'अत्थी'ति नं वदेय्यं – 'संविज्जतेसो मयि धम्मो'ति। सचे जानेय्यं – 'नत्थेसो मयि धम्मो'ति, 'नत्थी'ति नं वदेय्यं – 'नेसो धम्मो मयि संविज्जती'ति।

"एवम्पि खो ते [एवम्पि खो (क॰)], सारिपुत्त, वुच्चमाना अथ च पनिधेकच्चे मोघपुरिसा न पदक्खिणं गण्हन्ती"ति।

"ये ते, भन्ते, पुग्गला अस्सद्धा जीविकत्था न सद्धा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता सठा मायाविनो केतबिनो [केटुभिनो (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] उद्धता उन्नळा चपला मुखरा विकिण्णवाचा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारा भोजने अमत्तञ्ञुनो जागरियं अननुयुत्ता सामञ्ञे अनपेक्खवन्तो सिक्खाय न तिब्बगारवा बाहुलिका साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा कुसीता हीनवीरिया मुट्ठस्सतिनो असम्पजाना असमाहिता विब्भन्तचित्ता दुप्पञ्ञा एळमूगा, ते मया एवं वुच्चमाना न पदक्खिणं गण्हन्ति।

"ये पन ते, भन्ते, कुलपुत्ता सद्धा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता असठा अमायाविनो अकेतबिनो अनुद्धता अनुन्नळा अचपला अमुखरा अविकिण्णवाचा इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा भोजने मत्तञ्ञुनो जागरियं अनुयुत्ता सामञ्ञे अपेक्खवन्तो सिक्खाय तिब्बगारवा न बाहुलिका न साथलिका ओक्कमने निक्खित्तधुरा पविवेके पुब्बङ्गमा आरद्धवीरिया पहितत्ता उपट्ठितस्सतिनो सम्पजाना समाहिता एकग्गचित्ता पञ्ञवन्तो अनेळमूगा, ते मया एवं वुच्चमाना पदक्खिणं गण्हन्तीति।

"ये ते, सारिपुत्त, पुग्गला अस्सद्धा जीविकत्था न सद्धा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता सठा मायाविनो केतबिनो उद्धता उन्नळा चपला मुखरा विकिण्णवाचा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारा भोजने अमत्तञ्ञुनो जागरियं अननुयुत्ता सामञ्ञे अनपेक्खवन्तो सिक्खाय न तिब्बगारवा बाहुलिका साथलिका ओक्कमने पुब्बङ्गमा पविवेके निक्खित्तधुरा कुसीता हीनवीरिया मुट्ठस्सतिनो असम्पजाना असमाहिता विब्भन्तचित्ता दुप्पञ्ञा एळमूगा, तिट्ठन्तु ते।

''ये पन, ते सारिपुत्त, कुलपुत्ता सद्धा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता असठा अमायाविनो अकेतबिनो अनुद्धता अनुन्नळा अचपला अमुखरा अविकिण्णवाचा इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा भोजने मत्तञ्ञुनो जागरियं अनुयुत्ता सामञ्ञे अपेक्खवन्तो सिक्खाय तिब्बगारवा न बाहुलिका न साथलिका ओक्कमने निक्खित्तधुरा पविवेके पुब्बङ्गमा आरद्धवीरिया पहितत्ता उपट्ठितस्सतिनो सम्पजाना समाहिता एकग्गचित्ता पञ्ञवन्तो अनेळमूगा, ते त्वं, सारिपुत्त, वदेय्यासि। ओवद, सारिपुत्त, सब्रह्मचारी; अनुसास, सारिपुत्त, सब्रह्मचारी – 'असद्धम्मा वुट्ठापेत्वा सद्धम्मे पतिट्ठापेस्सामि सब्रह्मचारी'ति। एवञ्हि ते, सारिपुत्त, सिक्खितब्ब''न्ति। सत्तमं।

८. सीलसुत्तं

१६८. तत्र खो आयस्मा सारिपुत्तो भिक्खू आमन्तेसि – ''दुस्सीलस्स, आवुसो, सीलविपन्नस्स हतूपनिसो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि असति सम्मासमाधिविपन्नस्स हतूपनिसं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने असति यथाभूतञाणदस्सनविपन्नस्स हतूपनिसो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे असति निब्बिदाविरागविपन्नस्स हतूपनिसं होति विमुत्तिञाणदस्सनं। सेय्यथापि, आवुसो, रुक्खो साखापलासविपन्नो। तस्स पपटिकापि न पारिपूरिं गच्छति, तचोपि ...पे॰... फेग्गुपि... सारोपि न पारिपूरिं गच्छति। एवमेवं खो, आवुसो, दुस्सीलस्स सीलविपन्नस्स हतूपनिसो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि असति सम्मासमाधिविपन्नस्स हतूपनिसं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने असति यथाभूतञाणदस्सनविपन्नस्स हतूपनिसो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे असति निब्बिदाविरागविपन्नस्स हतूपनिसं होति विमुत्तिञाणदस्सनं।

''सीलवतो, आवुसो, सीलसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि सति सम्मासमाधिसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने सति यथाभूतञाणदस्सनसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे सति निब्बिदाविरागसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति विमुत्तिञाणदस्सनं। सेय्यथापि, आवुसो, रुक्खो, साखापलाससम्पन्नो। तस्स पपटिकापि पारिपूरिं गच्छति, तचोपि...पे॰... फेग्गुपि... सारोपि पारिपूरिं गच्छति। एवमेवं खो, आवुसो, सीलवतो सीलसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति सम्मासमाधि; सम्मासमाधिम्हि सति सम्मासमाधिसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति यथाभूतञाणदस्सनं; यथाभूतञाणदस्सने सति यथाभूतञाणदस्सनसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नो होति निब्बिदाविरागो; निब्बिदाविरागे सति निब्बिदाविरागसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति विमुत्तिञाणदस्सन''न्ति [अ॰ नि॰ ५.१६८; ६.५०; ७.६५]। अट्ठमं।

९. खिप्पनिसन्तिसुत्तं

१६९. अथ खो आयस्मा आनन्दो येनायस्मा सारिपुत्तो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मता सारिपुत्तेन सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं [साराणीयं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच –

''कित्तावता नु खो, आवुसो सारिपुत्त, भिक्खु खिप्पनिसन्ति च होति, कुसलेसु धम्मेसु सुग्गहितग्गाही च, बहुञ्च गण्हाति, गहितञ्चस्स नप्पमुस्सती''ति? ''आयस्मा खो आनन्दो बहुस्सुतो। पटिभातु आयस्मन्तंयेव आनन्द''न्ति। ''तेनहावुसो सारिपुत्त, सुणाहि, साधुकं मनसि करोहि; भासिस्सामी''ति। ''एवमावुसो''ति खो आयस्मा सारिपुत्तो

आयस्मतो आनन्दस्स पच्चस्सोसि। आयस्मा आनन्दो एतदवोच –

''इधावुसो सारिपुत्त, भिक्खु अत्थकुसलो च होति, धम्मकुसलो च, ब्यञ्जनकुसलो च, निरुत्तिकुसलो च, पुब्बापरकुसलो च। एत्तावता खो, आवुसो सारिपुत्त, भिक्खु खिप्पनिसन्ति च होति कुसलेसु धम्मेसु, सुग्गहितग्गाही च, बहुञ्च गण्हाति, गहितञ्चस्स नप्पमुस्सती''ति। ''अच्छरियं, आवुसो! अब्भुतं, आवुसो!! याव सुभासितं चिदं आयस्मता आनन्देन। इमेहि च मयं पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतं आयस्मन्तं आनन्दं धारेम – 'आयस्मा आनन्दो अत्थकुसलो धम्मकुसलो ब्यञ्जनकुसलो निरुत्तिकुसलो पुब्बापरकुसलो'''ति। नवमं।

१०. भद्दजिसुत्तं

१७०. एकं समयं आयस्मा आनन्दो कोसम्बियं विहरति घोसितारामे। अथ खो आयस्मा भद्दजि येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा आयस्मता आनन्देन सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो आयस्मन्तं भद्दजिं आयस्मा आनन्दो एतदवोच – ''किं नु खो, आवुसो भद्दजि, दस्सनानं अग्गं, किं सवनानं अग्गं, किं सुखानं अग्गं, किं सञ्ञानं अग्गं, किं भवानं अग्ग''न्ति?

''अत्थावुसो, ब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती, यो तं ब्रह्मानं पस्सति, इदं दस्सनानं अग्गं। अत्थावुसो, आभस्सरा नाम देवा सुखेन अभिसन्ना परिसन्ना। ते कदाचि करहचि उदानं उदानेन्ति – 'अहो सुखं, अहो सुख'न्ति! यो तं सद्दं सुणाति, इदं सवनानं अग्गं। अत्थावुसो, सुभकिण्हा नाम देवा। ते सन्तंयेव तुसिता सुखं पटिवेदेन्ति, इदं सुखानं अग्गं। अत्थावुसो, आकिञ्चञ्ञायतनूपगा देवा, इदं सञ्ञानं अग्गं। अत्थावुसो, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनूपगा देवा, इदं भवानं अग्ग''न्ति। ''समेति खो इदं आयस्मतो भद्दजिस्स, यदिदं बहुना जनेना''ति?

''आयस्मा खो, आनन्दो, बहुस्सुतो। पटिभातु आयस्मन्तंयेव आनन्द''न्ति। ''तेनहावुसो भद्दजि, सुणाहि, साधुकं मनसि करोहि; भासिस्सामी''ति। ''एवमावुसो''ति खो आयस्मा भद्दजि आयस्मतो आनन्दस्स पच्चस्सोसि। आयस्मा आनन्दो एतदवोच –

''यथा पस्सतो खो, आवुसो, अनन्तरा आसवानं खयो होति, इदं दस्सनानं अग्गं। यथा सुणतो अनन्तरा आसवानं खयो होति, इदं सवनानं अग्गं। यथा सुखितस्स अनन्तरा आसवानं खयो होति, इदं सुखानं अग्गं। यथा सञ्ञिस्स अनन्तरा आसवानं खयो होति, इदं सञ्ञानं अग्गं। यथा भूतस्स अनन्तरा आसवानं खयो होति, इदं भवानं अग्ग''न्ति। दसमं।

आघातवग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

द्वे आघातविनया, साकच्छा साजीवतो पञ्हं।
पुच्छा निरोधो चोदना, सीलं निसन्ति भद्दजीति॥

(१८) ३. उपासकवग्गो

१. सारज्जसुत्तं

१७१. एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि – ''भिक्खवो''ति। ''भदन्ते''ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच –

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको सारज्जं ओक्कन्तो होति। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति, अदिन्नादायी होति, कामेसुमिच्छाचारी होति, मुसावादी होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको सारज्जं ओक्कन्तो होति।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको विसारदो होति। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरतो होति, अदिन्नादाना पटिविरतो होति, कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतो होति, मुसावादा पटिविरतो होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको विसारदो होती''ति। पठमं।

२. विसारदसुत्तं

१७२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको अविसारदो अगारं अज्झावसति। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति…पे०… सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको अविसारदो अगारं अज्झावसति।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको विसारदो अगारं अज्झावसति। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरतो होति…पे०… सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको विसारदो अगारं अज्झावसती''ति। दुतियं।

३. निरयसुत्तं

१७३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति…पे०… सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरतो होति…पे०… सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति। ततियं।

४. वेरसुत्तं

१७४. अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो अनाथपिण्डिकं गहपतिं भगवा एतदवोच –

''पञ्च, गहपति, भयानि वेरानि अप्पहाय 'दुस्सीलो' इति वुच्चति, निरयञ्च उपपज्जति। कतमानि पञ्च?

पाणातिपातं, अदिन्नादानं, कामेसुमिच्छाचारं, मुसावादं, सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं – इमानि खो, गहपति, पञ्च भयानि वेरानि अप्पहाय 'दुस्सीलो' इति वुच्चति, निरयञ्च उपपज्जति।

''पञ्च, गहपति, भयानि वेरानि पहाय 'सीलवा' इति वुच्चति, सुगतिञ्च उपपज्जति। कतमानि पञ्च? पाणातिपातं, अदिन्नादानं, कामेसुमिच्छाचारं, मुसावादं, सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं – इमानि खो, गहपति, पञ्च भयानि वेरानि पहाय 'सीलवा' इति वुच्चति, सुगतिञ्च उपपज्जति।

''यं, गहपति, पाणातिपाती पाणातिपातपच्चया दिट्ठधम्मिकम्पि भयं वेरं पसवति, सम्परायिकम्पि भयं वेरं पसवति, चेतसिकम्पि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति, पाणातिपाता पटिविरतो नेव दिट्ठधम्मिकं भयं वेरं पसवति, न सम्परायिकं भयं वेरं पसवति, न चेतसिकं दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति। पाणातिपाता पटिविरतस्स एवं तं भयं वेरं वूपसन्तं होति।

''यं, गहपति, अदिन्नादायी…पे॰…।

''यं, गहपति, कामेसुमिच्छाचारी…पे॰…।

''यं, गहपति, मुसावादी…पे॰…।

''यं, गहपति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी सुरामेरयमज्जपमादट्ठानपच्चया दिट्ठधम्मिकम्पि भयं वेरं पसवति, सम्परायिकम्पि भयं वेरं पसवति, चेतसिकम्पि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो नेव दिट्ठधम्मिकं भयं वेरं पसवति, न सम्परायिकं भयं वेरं पसवति, न चेतसिकं दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति। सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतस्स एवं तं भयं वेरं वूपसन्तं होती''ति।

''यो पाणमतिपातेति, मुसावादञ्च भासति।
लोके अदिन्नं आदियति, परदारञ्च गच्छति।
सुरामेरयपानञ्च, यो नरो अनुयुञ्जति॥

''अप्पहाय पञ्च वेरानि, दुस्सीलो इति वुच्चति।
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो, निरयं सोपपज्जति॥

''यो पाणं नातिपातेति, मुसावादं न भासति।
लोके अदिन्नं नादियति, परदारं न गच्छति।
सुरामेरयपानञ्च, यो नरो नानुयुञ्जति॥

''पहाय पञ्च वेरानि, सीलवा इति वुच्चति।
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो, सुगतिं सोपपज्जती''ति॥ चतुत्थं।

५. चण्डालसुत्तं

१७५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको उपासकचण्डालो च होति उपासकमलञ्च

उपासकपतिकुट्ठो च [उपासकपतिकिट्ठो च (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)]। कतमेहि पञ्चहि? अस्सद्धो होति; दुस्सीलो होति; कोतूहलमङ्गलिको होति, मङ्गलं पच्चेति नो कम्मं; इतो च बहिद्धा दक्खिणेय्यं गवेसति; तत्थ च पुब्बकारं करोति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको उपासकचण्डालो च होति उपासकमलञ्च उपासकपतिकुट्ठो च।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो उपासको उपासकरतनञ्च होति उपासकपदुमञ्च उपासकपुण्डरीकञ्च [उपासकपुण्डरीको च (पी॰ क॰)]। कतमेहि पञ्चहि? सद्धो होति; सीलवा होति; अकोतूहलमङ्गलिको होति, कम्मं पच्चेति नो मङ्गलं; न इतो बहिद्धा दक्खिणेय्यं गवेसति; इध च पुब्बकारं करोति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो उपासको उपासकरतनञ्च होति उपासकपदुमञ्च उपासकपुण्डरीकञ्चा''ति। पञ्चमं।

६. पीतिसुत्तं

१७६. अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति पञ्चमत्तेहि उपासकसतेहि परिवुतो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो अनाथपिण्डिकं गहपतिं भगवा एतदवोच –

''तुम्हे खो, गहपति, भिक्खुसङ्घं पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन। न खो, गहपति, तावतकेनेव तुट्ठि करणीया – 'मयं भिक्खुसङ्घं पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेना'ति। तस्मातिह, गहपति, एवं सिक्खितब्बं – 'किन्ति मयं कालेन कालं पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरेय्यामा'ति! एवञ्हि वो, गहपति, सिक्खितब्ब''न्ति।

एवं वुत्ते आयस्मा सारिपुत्तो भगवन्तं एतदवोच – ''अच्छरियं, भन्ते, अब्भुतं, भन्ते! याव सुभासितं चिदं, भन्ते, भगवता – 'तुम्हे खो, गहपति, भिक्खुसङ्घं पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेन। न खो, गहपति, तावतकेनेव तुट्ठि करणीया – मयं भिक्खुसङ्घं पच्चुपट्ठिता चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेनाति। तस्मातिह, गहपति, एवं सिक्खितब्बं – किन्ति मयं कालेन कालं पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरेय्यामाति! एवञ्हि वो, गहपति, सिक्खितब्ब'न्ति। यस्मिं, भन्ते, समये अरियसावको पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरति, पञ्चस्स ठानानि तस्मिं समये न होन्ति। यम्पिस्स कामूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स कामूपसंहितं सुखं सोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स अकुसलूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स अकुसलूपसंहितं सुखं सोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स कुसलूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यस्मिं, भन्ते, समये अरियसावको पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरति, इमानिस्स पञ्च [इमानि पञ्चस्स (स्या॰ कं॰)] ठानानि तस्मिं समये न होन्ती''ति।

''साधु साधु, सारिपुत्त! यस्मिं, सारिपुत्त, समये अरियसावको पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरति, पञ्चस्स ठानानि तस्मिं समये न होन्ति। यम्पिस्स कामूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स कामूपसंहितं सुखं सोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स अकुसलूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स अकुसलूपसंहितं सुखं सोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यम्पिस्स कुसलूपसंहितं दुक्खं दोमनस्सं, तम्पिस्स तस्मिं समये न होति। यस्मिं, सारिपुत्त, समये अरियसावको पविवेकं पीतिं उपसम्पज्ज विहरति, इमानिस्स

[इमानेत्थ (सी॰)] पञ्च ठानानि तस्मिं समये न होन्ती''ति। छट्ठं।

७. वणिज्जासुत्तं

१७७. ''पञ्चिमा, भिक्खवे, वणिज्जा उपासकेन अकरणीया। कतमा पञ्च? सत्थवणिज्जा, सत्तवणिज्जा, मंसवणिज्जा, मज्जवणिज्जा, विसवणिज्जा – इमा खो, भिक्खवे, पञ्च वणिज्जा उपासकेन अकरणीया''ति। सत्तमं।

८. राजासुत्तं

१७८. ''तं किं मञ्ञथ, भिक्खवे, अपि नु तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा – 'अयं पुरिसो पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता पटिविरतोति [पटिविरतो होतीति (सी॰), पटिविरतो होति (स्या॰ कं॰ पी॰)]। तमेनं राजानो गहेत्वा पाणातिपाता वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'''ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''साधु, भिक्खवे! मयापि खो एतं, भिक्खवे, नेव दिट्ठं न सुतं – 'अयं पुरिसो पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा पाणातिपाता वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति। अपि च, ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति [तथेव पापकं कम्मं पवेदयन्ति (सी॰), तदेव पापकम्मं पवेदेति (स्या॰ कं॰)] – 'अयं पुरिसो इत्थिं वा पुरिसं वा जीविता वोरोपेसीति [वोरोपेतीति (स्या॰ कं॰)]। तमेनं राजानो गहेत्वा पाणातिपातहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ति। अपि नु तुम्हेहि एवरूपं दिट्ठं वा सुतं वा'''ति? ''दिट्ठञ्च नो, भन्ते, सुतञ्च सुय्यिस्सति [सूयिस्सति (सी॰ पी॰)] चा''ति।

''तं किं मञ्ञथ, भिक्खवे, अपि नु तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा – 'अयं पुरिसो अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा अदिन्नादाना वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'''ति? ''नो हेतं भन्ते''। ''साधु, भिक्खवे! मयापि खो एतं, भिक्खवे, नेव दिट्ठं न सुतं – 'अयं पुरिसो अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा अदिन्नादाना वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति। अपि च ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति – 'अयं पुरिसो गामा वा अरञ्ञा वा अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियीति [आदियति (स्या॰ कं॰)]। तमेनं राजानो गहेत्वा अदिन्नादानहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ति। अपि नु तुम्हेहि एवरूपं दिट्ठं वा सुतं वा'''ति? ''दिट्ठञ्च नो, भन्ते, सुतञ्च सुय्यिस्सति चा''ति।

''तं किं मञ्ञथ, भिक्खवे, अपि नु तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा – 'अयं पुरिसो कामेसुमिच्छाचारं पहाय कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा कामेसुमिच्छाचारा वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'''ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''साधु, भिक्खवे! मयापि खो एतं, भिक्खवे, नेव दिट्ठं न सुतं – 'अयं पुरिसो कामेसुमिच्छाचारं पहाय कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा कामेसुमिच्छाचारा वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति। अपि च ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति – 'अयं पुरिसो परित्थीसु परकुमारीसु चारित्तं आपज्जीति [आपज्जति (स्या॰ कं॰)]। तमेनं राजानो गहेत्वा कामेसुमिच्छाचारहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ति। अपि नु तुम्हेहि एवरूपं दिट्ठं वा सुतं वा'''ति? ''दिट्ठञ्च नो, भन्ते, सुतञ्च सुय्यिस्सति चा''ति।

''तं किं मञ्ञथ, भिक्खवे, अपि नु तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा – 'अयं पुरिसो मुसावादं पहाय मुसावादा पटिविरतोति।

तमेनं राजानो गहेत्वा मुसावादा वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती''ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''साधु, भिक्खवे! मयापि खो एतं, भिक्खवे, नेव दिट्ठं न सुतं – 'अयं पुरिसो मुसावादं पहाय मुसावादा पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा मुसावादा वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति। अपि च ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति – 'अयं पुरिसो गहपतिस्स वा गहपतिपुत्तस्स वा मुसावादेन अत्थं पभञ्जीति [भञ्जतीति (सी०), भञ्जति (स्या० कं०), भञ्जीति (पी०)]। तमेनं राजानो गहेत्वा मुसावादहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ति। अपि नु तुम्हेहि एवरूपं दिट्ठं वा सुतं वा'''ति? ''दिट्ठञ्च नो, भन्ते, सुतञ्च सुय्यिस्सति चा''ति।

''तं किं मञ्ञथ, भिक्खवे, अपि नु तुम्हेहि दिट्ठं वा सुतं वा – 'अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं पहाय सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति? ''नो हेतं, भन्ते''। ''साधु, भिक्खवे! मयापि खो एतं, भिक्खवे, नेव दिट्ठं न सुतं – 'अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं पहाय सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतोति। तमेनं राजानो गहेत्वा सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणिहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ती'ति। अपि च ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति – 'अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं अनुयुत्तो इत्थिं वा पुरिसं वा जीविता वोरोपेसि [वोरोपेति (स्या०)]; अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं अनुयुत्तो गामा वा अरञ्ञा वा अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियि [आदियति (सी० स्या०)]; अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं अनुयुत्तो परित्थीसु परकुमारीसु चारित्तं आपज्जि [आपज्जति (सी० स्या०)]; अयं पुरिसो सुरामेरयमज्जपमादट्ठानं अनुयुत्तो गहपतिस्स वा गहपतिपुत्तस्स वा मुसावादेन अत्थं पभञ्जीति। तमेनं राजानो गहेत्वा सुरामेरयमज्जपमादट्ठानहेतु हनन्ति वा बन्धन्ति वा पब्बाजेन्ति वा यथापच्चयं वा करोन्ति। अपि नु तुम्हेहि एवरूपं दिट्ठं वा सुतं वा'''ति? ''दिट्ठञ्च नो, भन्ते, सुतञ्च सुय्यिस्सति चा''ति। अट्ठमं।

९. गिहिसुत्तं

१७९. अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति पञ्चमत्तेहि उपासकसतेहि परिवुतो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। अथ खो भगवा आयस्मन्तं सारिपुत्तं आमन्तेसि – ''यं कञ्चि [यं किञ्चि (सी० पी०)], सारिपुत्त, जानेय्याथ गिहिं ओदातवसनं पञ्चसु सिक्खापदेसु संवुतकम्मन्तं चतुन्नं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभिं अकिच्छलाभिं अकसिरलाभिं, सो आकङ्खमानो अत्तनाव अत्तानं ब्याकरेय्य – 'खीणनिरयोम्हि खीणतिरच्छानयोनि खीणपेत्तिविसयो खीणापायदुग्गतिविनिपातो, सोतापन्नोहमस्मि अविनिपातधम्मो नियतो सम्बोधिपरायणो'''ति।

''कतमेसु पञ्चसु सिक्खापदेसु संवुतकम्मन्तो होति? इध, सारिपुत्त, अरियसावको पाणातिपाता पटिविरतो होति, अदिन्नादाना पटिविरतो होति, कामेसुमिच्छाचारा पटिविरतो होति, मुसावादा पटिविरतो होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेसु पञ्चसु सिक्खापदेसु संवुतकम्मन्तो होति।

''कतमेसं चतुन्नं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी? इध, सारिपुत्त, अरियसावको बुद्धे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति – 'इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि, सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति। अयमस्स पठमो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति अविसुद्धस्स चित्तस्स विसुद्धिया अपरियोदातस्स चित्तस्स

परियोदपनाय।

''पुन चपरं, सारिपुत्त, अरियसावको धम्मे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति – 'स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति। अयमस्स दुतियो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति अविसुद्धस्स चित्तस्स विसुद्धिया अपरियोदातस्स चित्तस्स परियोदपनाय।

''पुन चपरं, सारिपुत्त, अरियसावको सङ्घे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो होति – 'सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठ पुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसङ्घो आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति। अयमस्स ततियो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति अविसुद्धस्स चित्तस्स विसुद्धिया अपरियोदातस्स चित्तस्स परियोदपनाय।

''पुन चपरं, सारिपुत्त, अरियसावको अरियकन्तेहि सीलेहि समन्नागतो होति अखण्डेहि अच्छिद्देहि असबलेहि अकम्मासेहि भुजिस्सेहि विञ्ञुप्पसत्थेहि अपरामट्ठेहि समाधिसंवत्तनिकेहि। अयमस्स चतुत्थो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति अविसुद्धस्स चित्तस्स विसुद्धिया अपरियोदातस्स चित्तस्स परियोदपनाय। इमेसं चतुन्नं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी।

''यं कञ्चि, सारिपुत्त, जानेय्याथ गिहिं ओदातवसनं – इमेसु पञ्चसु सिक्खापदेसु संवुतकम्मन्तं, इमेसञ्च चतुन्नं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभिं अकिच्छलाभिं अकसिरलाभिं, सो आकङ्खमानो अत्तनाव अत्तानं ब्याकरेय्य – 'खीणनिरयोम्हि खीणतिरच्छानयोनि खीणपेत्तिविसयो खीणापायदुग्गतिविनिपातो, सोतापन्नोहमस्मि अविनिपातधम्मो नियतो सम्बोधिपरायणो'''ति।

''निरयेसु भयं दिस्वा, पापानि परिवज्जये।
अरियधम्मं समादाय, पण्डितो परिवज्जये॥

''न हिंसे पाणभूतानि, विज्जमाने परक्कमे।
मुसा च न भणे जानं, अदिन्नं न परामसे॥

''सेहि दारेहि सन्तुट्ठो, परदारञ्च आरमे [नारमे (सी॰ स्या॰)]।
मेरयं वारुणिं जन्तु, न पिवे चित्तमोहनिं॥

''अनुस्सरेय्य सम्बुद्धं, धम्मञ्चानुवितक्कये।
अब्यापज्जं [अब्यापज्झं (?) अब्यापज्झं (क॰)] हितं चित्तं, देवलोकाय भावये॥

''उपट्ठिते देय्यधम्मे, पुञ्ञत्थस्स जिगीसतो [जिगिंसतो (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)]।
सन्तेसु पठमं दिन्ना, विपुला होति दक्खिणा॥

''सन्तो हवे पवक्खामि, सारिपुत्त सुणोहि मे।

इति कण्हासु सेतासु, रोहिणीसु हरीसु वा॥

‘‘कम्मासासु सरूपासु, गोसु पारेवतासु वा।
यासु कासुचि एतासु, दन्तो जायति पुङ्गवो॥

‘‘धोरय्हो बलसम्पन्नो, कल्याणजवनिक्कमो।
तमेव भारे युञ्जन्ति, नास्स वण्णं परिक्खरे॥

‘‘एवमेवं मनुस्सेसु, यस्मिं किस्मिञ्चि जातिये।
खत्तिये ब्राह्मणे वेस्से, सुद्दे चण्डालपुक्कुसे॥

‘‘यासु कासुचि एतासु, दन्तो जायति सुब्बतो।
धम्मट्ठो सीलसम्पन्नो, सच्चवादी हिरीमनो॥

‘‘पहीनजातिमरणो, ब्रह्मचरियस्स केवली।
पन्नभारो विसंयुत्तो, कतकिच्चो अनासवो॥

‘‘पारगू सब्बधम्मानं, अनुपादाय निब्बुतो।
तस्मिञ्च विरजे खेत्ते, विपुला होति दक्खिणा॥

‘‘बाला च अविजानन्ता, दुम्मेधा अस्सुताविनो।
बहिद्धा ददन्ति दानानि, न हि सन्ते उपासरे॥

‘‘ये च सन्ते उपासन्ति, सप्पञ्ञे धीरसम्मते।
सद्धा च नेसं सुगते, मूलजाता पतिट्ठिता॥

‘‘देवलोकञ्च ते यन्ति, कुले वा इध जायरे।
अनुपुब्बेन निब्बानं, अधिगच्छन्ति पण्डिता’’ति॥ नवमं।

१०. गवेसीसुत्तं

१८०. एकं समयं भगवा कोसलेसु चारिकं चरति महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं। अद्दसा खो भगवा अद्धानमग्गप्पटिपन्नो अञ्ञतरस्मिं पदेसे महन्तं सालवनं; दिस्वान [दिस्वा (सी॰ पी॰)] मग्गा ओक्कम्म [उक्कम्म (कत्थचि)] येन तं सालवनं तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तं सालवनं अज्झोगाहेत्वा अञ्ञतरस्मिं पदेसे सितं पात्वाकासि।

अथ खो आयस्मतो आनन्दस्स एतदहोसि – ‘‘को नु खो हेतु को पच्चयो भगवतो सितस्स पातुकम्माय? न अकारणेन तथागता सितं पातुकरोन्ती’’ति। अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – ‘‘को नु खो, भन्ते, हेतु को पच्चयो भगवतो सितस्स पातुकम्माय? न अकारणेन तथागता सितं पातुकरोन्ती’’ति।

"भूतपुब्बं, आनन्द, इमस्मिं पदेसे नगरं अहोसि इद्धञ्चेव फीतञ्च बहुजनं आकिण्णमनुस्सं। तं खो पनानन्द, नगरं कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो उपनिस्साय विहासि। कस्सपस्स खो पनानन्द, भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स गवेसी नाम उपासको अहोसि सीलेसु अपरिपूरकारी। गवेसिना खो, आनन्द, उपासकेन पञ्चमत्तानि उपासकसतानि पटिदेसितानि समादपितानि [समादापितानि (?)] अहेसुं सीलेसु अपरिपूरकारिनो। अथ खो, आनन्द, गवेसिस्स उपासकस्स एतदहोसि – 'अहं खो इमेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं बहूपकारो [बहुकारो (कत्थचि)] पुब्बङ्गमो समादपेता [समादापेता (?)], अहञ्चम्हि सीलेसु अपरिपूरकारी, इमानि च पञ्च उपासकसतानि सीलेसु अपरिपूरकारिनो। इच्चेतं समसमं, नत्थि किञ्चि अतिरेकं; हन्दाहं अतिरेकाया'"ति।

"अथ खो, आनन्द, गवेसी उपासको येन तानि पञ्च उपासकसतानि तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तानि पञ्च उपासकसतानि एतदवोच – 'अज्जतग्गे मं आयस्मन्तो सीलेसु परिपूरकारिं धारेथा'ति! अथ खो, आनन्द, तेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं एतदहोसि – 'अय्यो खो गवेसी अम्हाकं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अय्यो हि नाम गवेसी सीलेसु परिपूरकारी भविस्सति। किमङ्गं [किमङ्ग (सी॰ पी॰)] पन मय'न्ति [पन न मयन्ति (सी॰) अ॰ नि॰ ४.१५९; चूळव॰ ३३०; सं॰ नि॰ ५.१०२० पाळिया संसन्देतब्बं]! अथ खो, आनन्द, तानि पञ्च उपासकसतानि येन गवेसी उपासको तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा गवेसिं उपासकं एतदवोचुं – 'अज्जतग्गे अय्यो गवेसी इमानिपि पञ्च उपासकसतानि सीलेसु परिपूरकारिनो धारेतू'ति। अथ खो, आनन्द, गवेसिस्स उपासकस्स एतदहोसि – 'अहं खो इमेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता, अहञ्चम्हि सीलेसु परिपूरकारी, इमानिपि पञ्च उपासकसतानि सीलेसु परिपूरकारिनो। इच्चेतं समसमं, नत्थि किञ्चि अतिरेकं; हन्दाहं अतिरेकाया'"ति!

"अथ खो, आनन्द, गवेसी उपासको येन तानि पञ्च उपासकसतानि तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तानि पञ्च उपासकसतानि एतदवोच – 'अज्जतग्गे मं आयस्मन्तो ब्रह्मचारिं धारेथ आराचारिं [अनाचारिं (पी॰)] विरतं मेथुना गामधम्मा'ति। अथ खो, आनन्द, तेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं एतदहोसि – 'अय्यो खो गवेसी अम्हाकं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अय्यो हि नाम गवेसी ब्रह्मचारी भविस्सति आराचारी विरतो मेथुना गामधम्मा। किमङ्गं पन मय'न्ति! अथ खो, आनन्द, तानि पञ्च उपासकसतानि येन गवेसी उपासको तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा गवेसिं उपासकं एतदवोचुं – 'अज्जतग्गे अय्यो गवेसी इमानिपि पञ्च उपासकसतानि ब्रह्मचारिनो धारेतु आराचारिनो विरता मेथुना गामधम्मा'ति। अथ खो, आनन्द, गवेसिस्स उपासकस्स एतदहोसि – 'अहं खो इमेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अहञ्चम्हि सीलेसु परिपूरकारी। इमानिपि पञ्च उपासकसतानि सीलेसु परिपूरकारिनो। अहञ्चम्हि ब्रह्मचारी आराचारी विरतो मेथुना गामधम्मा। इमानिपि पञ्च उपासकसतानि ब्रह्मचारिनो आराचारिनो विरता मेथुना गामधम्मा। इच्चेतं समसमं, नत्थि किञ्चि अतिरेकं; हन्दाहं अतिरेकाया'"ति।

"अथ खो, आनन्द, गवेसी उपासको येन तानि पञ्च उपासकसतानि तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा तानि पञ्च उपासकसतानि एतदवोच – 'अज्जतग्गे मं आयस्मन्तो एकभत्तिकं धारेथ रत्तूपरतं विरतं विकालभोजना'ति। अथ खो, आनन्द, तेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं एतदहोसि – 'अय्यो खो गवेसी बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अय्यो हि नाम गवेसी एकभत्तिको भविस्सति रत्तूपरतो विरतो विकालभोजना। किमङ्गं पन मय'न्ति! अथ खो, आनन्द, तानि पञ्च उपासकसतानि येन गवेसी उपासको तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा गवेसिं उपासकं एतदवोचुं – 'अज्जतग्गे अय्यो गवेसी इमानिपि पञ्च उपासकसतानि एकभत्तिके धारेतु रत्तूपरते विरते विकालभोजना'ति। अथ खो, आनन्द, गवेसिस्स उपासकस्स एतदहोसि – 'अहं खो इमेसं पञ्चन्नं उपासकसतानं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अहञ्चम्हि सीलेसु

परिपूरकारी। इमानिपि पञ्च उपासकसतानि सीलेसु परिपूरकारिनो। अहञ्चम्हि ब्रह्मचारी आराचारी विरतो मेथुना गामधम्मा। इमानिपि पञ्च उपासकसतानि ब्रह्मचारिनो आराचारिनो विरता मेथुना गामधम्मा। अहञ्चम्हि एकभत्तिको रत्तूपरतो विरतो विकालभोजना। इमानिपि पञ्च उपासकसतानि एकभत्तिका रत्तूपरता विरता विकालभोजना। इच्चेतं समसमं, नत्थि किञ्चि अतिरेकं; हन्दाहं अतिरेकाया'''ति।

''अथ खो, आनन्द, गवेसी उपासको येन कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा कस्सपं भगवन्तं अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं एतदवोच – 'लभेय्याहं, भन्ते, भगवतो सन्तिके पब्बज्जं लभेय्यं उपसम्पद'न्ति। अलत्थ खो, आनन्द, गवेसी उपासको कस्सपस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिके पब्बज्जं, अलत्थ उपसम्पदं। अचिरूपसम्पन्नो खो पनानन्द, गवेसी भिक्खु एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो विहरन्तो नचिरस्सेव – यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति, तदनुत्तरं – ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहासि। 'खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया'ति अब्भञ्ञासि। अञ्ञतरो च पनानन्द, गवेसी भिक्खु अरहतं अहोसि।

''अथ खो, आनन्द, तेस पञ्चन्नं उपासकसतानं एतदहोसि – 'अय्यो खो गवेसी अम्हाकं बहूपकारो पुब्बङ्गमो समादपेता। अय्यो हि नाम गवेसी केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिस्सति। किमङ्गं पन मय'न्ति! अथ खो, आनन्द, तानि पञ्च उपासकसतानि येन कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा कस्सपं भगवन्तं अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं एतदवोचुं – 'लभेय्याम मयं, भन्ते, भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्याम उपसम्पद'न्ति। अलभिंसु खो, आनन्द, तानि पञ्च उपासकसतानि कस्सपस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिके पब्बज्जं, अलभिंसु उपसम्पदं।

''अथ खो, आनन्द, गवेसिस्स भिक्खुनो एतदहोसि – 'अहं खो इमस्स अनुत्तरस्स विमुत्तिसुखस्स निकामलाभी होमि अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। अहो वतिमानिपि पञ्च भिक्खुसतानि इमस्स अनुत्तरस्स विमुत्तिसुखस्स निकामलाभिनो अस्सु अकिच्छलाभिनो अकसिरलाभिनो'ति। अथ खो, आनन्द, तानि पञ्च भिक्खुसतानि वूपकट्ठा [भिक्खुसतानि एकेका वूपकट्ठा (स्या० कं०)] अप्पमत्ता आतापिनो पहितत्ता विहरन्ता नचिरस्सेव – यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति, तदनुत्तरं – ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिंसु। 'खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया'ति अब्भञ्ञिंसु''।

''इति खो, आनन्द, तानि पञ्च भिक्खुसतानि गवेसीपमुखानि उत्तरुत्तरि [उत्तरुत्तरिं (सी० स्या० कं० पी०)] पणीतपणीतं वायममाना अनुत्तरं विमुत्तिं सच्छाकंसु। तस्मातिह, आनन्द, एवं सिक्खितब्बं – 'उत्तरुत्तरि पणीतपणीतं वायममाना अनुत्तरं विमुत्तिं सच्छिकरिस्सामा'ति। एवञ्हि वो, आनन्द, सिक्खितब्ब''न्ति। दसमं।

उपासकवग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

सारज्जं विसारदो निरयं, वेरं चण्डालपञ्चमं।
पीति वणिज्जा राजानो, गिही चेव गवेसिनाति॥

(१९) ४. अरञ्ञवग्गो

१. आरञ्ञिकसुत्तं

१८१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आरञ्ञिका [आरञ्ञता (सब्बत्थ) परि० ४४३ पस्सितब्बं]। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता आरञ्ञिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो आरञ्ञिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा आरञ्ञिको होति, वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेहीति आरञ्ञिको होति, अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठिंयेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव [इदमट्ठितंयेव (सी० पी०)] निस्साय आरञ्ञिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आरञ्ञिका। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं आरञ्ञिकानं य्वायं आरञ्ञिको अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठिंयेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव निस्साय आरञ्ञिको होति, अयं इमेसं पञ्चन्नं आरञ्ञिकानं अग्गो च सेट्ठो च मोक्खो [पामोक्खो (अ० नि० ४.९५; १०.९१)] च उत्तमो च पवरो च।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, गवा खीरं, खीरम्हा दधि, दधिम्हा नवनीतं, नवनीतम्हा सप्पि, सप्पिम्हा सप्पिमण्डो, सप्पिमण्डो [सप्पिम्हा सप्पिमण्डो (क०) सं० नि० ३.६६२] तत्थ अग्गमक्खायति; एवमेवं खो, भिक्खवे, इमेसं पञ्चन्नं आरञ्ञिकानं य्वायं आरञ्ञिको अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठिंयेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव निस्साय आरञ्ञिको होति, अयं इमेसं पञ्चन्नं आरञ्ञिकानं अग्गो च सेट्ठो च मोक्खो च उत्तमो च पवरो चा''ति। पठमं।

२. चीवरसुत्तं

१८२. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पंसुकूलिका। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता पंसुकूलिको होति...पे०... इदमत्थितंयेव निस्साय पंसुकूलिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च पंसुकूलिका''ति। दुतियं।

३. रुक्खमूलिकसुत्तं

१८३. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, रुक्खमूलिका। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता रुक्खमूलिको होति...पे०... इदमत्थितंयेव निस्साय रुक्खमूलिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च रुक्खमूलिका''ति। ततियं।

४. सोसानिकसुत्तं

१८४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, सोसानिका। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता सोसानिको होति...पे०... इदमत्थितंयेव निस्साय सोसानिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च सोसानिका''ति। चतुत्थं।

५. अब्भोकासिकसुत्तं

१८५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, अब्भोकासिका...पे०...। पञ्चमं।

६. नेसज्जिकसुत्तं

१८६. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, नेसज्जिका...पे०...। छट्ठं।

७. यथासन्थतिकसुत्तं

१८७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, यथासन्थतिका...पे०...। सत्तमं।

८. एकासनिकसुत्तं

१८८. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, एकासनिका...पे०...। अट्ठमं।

९. खलुपच्छाभत्तिकसुत्तं

१८९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, खलुपच्छाभत्तिका...पे०...। नवमं।

१०. पत्तपिण्डिकसुत्तं

१९०. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पत्तपिण्डिका। कतमे पञ्च? मन्दत्ता मोमूहत्ता पत्तपिण्डिको होति, पापिच्छो इच्छापकतो पत्तपिण्डिको होति, उम्मादा चित्तक्खेपा पत्तपिण्डिको होति, 'वण्णितं बुद्धेहि बुद्धसावकेही'ति पत्तपिण्डिको होति, अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठियेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव निस्साय पत्तपिण्डिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च पत्तपिण्डिका। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं पत्तपिण्डिकानं य्वायं पत्तपिण्डिको अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठियेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव निस्साय पत्तपिण्डिको होति, अयं इमेसं पञ्चन्नं पत्तपिण्डिकानं अग्गो च सेट्ठो च मोक्खो च उत्तमो च पवरो च।

''सेय्यथापि, भिक्खवे, गवा खीरं, खीरम्हा दधि, दधिम्हा नवनीतं, नवनीतम्हा सप्पि, सप्पिम्हा सप्पिमण्डो, सप्पिमण्डो तत्थ अग्गमक्खायति; एवमेवं खो, भिक्खवे, इमेसं पञ्चन्नं पत्तपिण्डिकानं य्वायं पत्तपिण्डिको अप्पिच्छतंयेव निस्साय सन्तुट्ठियेव निस्साय सल्लेखंयेव निस्साय पविवेकंयेव निस्साय इदमत्थितंयेव निस्साय पत्तपिण्डिको होति, अयं इमेसं पञ्चन्नं पत्तपिण्डिकानं अग्गो च सेट्ठो च मोक्खो च उत्तमो च पवरो चा''ति। दसमं।

अरञ्ञवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

अरञ्ञं चीवरं रुक्ख, सुसानं अब्भोकासिकं।
नेसज्जं सन्थतं एकासनिकं, खलुपच्छापिण्डिकेन चाति॥

(२०) ५. ब्राह्मणवग्गो

१. सोणसुत्तं

१९१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, पोराणा ब्राह्मणधम्मा एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सन्ति, नो ब्राह्मणेसु। कतमे पञ्च? पुब्बे सुदं [पुब्बस्सुदं (क०)], भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिंयेव गच्छन्ति, नो अब्राह्मणिं। एतरहि, भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिम्पि

गच्छन्ति, अब्राह्मणिम्पि गच्छन्ति। एतरहि, भिक्खवे, सुनखा सुनखिंयेव गच्छन्ति, नो असुनखिं। अयं, भिक्खवे, पठमो पोराणो ब्राह्मणधम्मो एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सति, नो ब्राह्मणेसु।

''पुब्बे सुदं, भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिं उतुनिंयेव गच्छन्ति, नो अनुतुनिं। एतरहि, भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिं उतुनिम्पि गच्छन्ति, अनुतुनिम्पि गच्छन्ति। एतरहि, भिक्खवे, सुनखा सुनखिं उतुनिंयेव गच्छन्ति, नो अनुतुनिं। अयं, भिक्खवे, दुतियो पोराणो ब्राह्मणधम्मो एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सति, नो ब्राह्मणेसु।

''पुब्बे सुदं, भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिं नेव किणन्ति नो विक्किणन्ति, सम्पियेनेव संवासं संबन्धाय [संसग्गत्थाय (सी॰ पी॰)] संपवत्तेन्ति। एतरहि, भिक्खवे, ब्राह्मणा ब्राह्मणिं किणन्तिपि विक्किणन्तिपि, सम्पियेनपि संवासं संबन्धाय संपवत्तेन्ति। एतरहि, भिक्खवे, सुनखा सुनखिं नेव किणन्ति नो विक्किणन्ति, सम्पियेनेव संवासं संबन्धाय संपवत्तेन्ति। अयं, भिक्खवे, ततियो पोराणो ब्राह्मणधम्मो एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सति, नो ब्राह्मणेसु।

''पुब्बे सुदं, भिक्खवे, ब्राह्मणा न सन्निधिं करोन्ति धनस्सपि धञ्ञस्सपि रजतस्सपि जातरूपस्सपि। एतरहि, भिक्खवे, ब्राह्मणा सन्निधिं करोन्ति धनस्सपि धञ्ञस्सपि रजतस्सपि जातरूपस्सपि। एतरहि, भिक्खवे, सुनखा न सन्निधिं करोन्ति धनस्सपि धञ्ञस्सपि रजतस्सपि जातरूपस्सपि। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो पोराणो ब्राह्मणधम्मो एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सति, नो ब्राह्मणेसु।

''पुब्बे सुदं, भिक्खवे, ब्राह्मणा सायं सायमासाय पातो पातरासाय भिक्खं परियेसन्ति। एतरहि, भिक्खवे, ब्राह्मणा यावदत्थं उदरावदेहकं भुञ्जित्वा अवसेसं आदाय पक्कमन्ति। एतरहि, भिक्खवे, सुनखा सायं सायमासाय पातो पातरासाय भिक्खं परियेसन्ति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो पोराणो ब्राह्मणधम्मो एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सति, नो ब्राह्मणेसु। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च पोराणा ब्राह्मणधम्मा एतरहि सुनखेसु सन्दिस्सन्ति, नो ब्राह्मणेसू''ति। पठमं।

२. दोणब्राह्मणसुत्तं

१९२. अथ खो दोणो ब्राह्मणो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो दोणो ब्राह्मणो भगवन्तं एतदवोच –

''सुतं मेतं, भो गोतम – 'न समणो गोतमो ब्राह्मणे जिण्णे वुड्ढे महल्लके अद्धगते वयोअनुप्पत्ते अभिवादेति वा पच्चुट्ठेति वा आसनेन वा निमन्तेती'ति। तयिदं, भो गोतम, तथेव। न हि भवं गोतमो ब्राह्मणे जिण्णे वुड्ढे महल्लके अद्धगते वयोअनुप्पत्ते अभिवादेति वा पच्चुट्ठेति वा आसनेन वा निमन्तेति। तयिदं, भो गोतम, न सम्पन्नमेवा''ति। ''त्वम्पि नो, दोण, ब्राह्मणो पटिजानासी''ति? ''यञ्हि तं, भो गोतम, सम्मा वदमानो वदेय्य – 'ब्राह्मणो उभतो सुजातो – मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खितो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन, अज्झायको मन्तधरो, तिण्णं वेदानं पारगू सनिघण्डुकेटुभानं साक्खरप्पभेदानं इतिहासपञ्चमानं, पदको वेय्याकरणो लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो'ति, ममेव तं, भो गोतम, सम्मा वदमानो वदेय्य। अहञ्हि, भो गोतम, ब्राह्मणो उभतो सुजातो – मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन, अज्झायको मन्तधरो, तिण्णं वेदानं पारगू सनिघण्डुकेटुभानं साक्खरप्पभेदानं इतिहासपञ्चमानं, पदको वेय्याकरणो लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो''ति।

“ये खो, ते दोण, ब्राह्मणानं पुब्बका इसयो मन्तानं कत्तारो मन्तानं पवत्तारो, येसमिदं एतरहि ब्राह्मणा पोराणं मन्तपदं गीतं पवुत्तं समिहितं तदनुगायन्ति तदनुभासन्ति भासितमनुभासन्ति सज्झायितमनुसज्झायन्ति वाचितमनुवाचेन्ति, सेय्यथिदं – अट्ठको, वामको, वामदेवो, वेस्सामित्तो, यमदग्गि [यमतग्गि (सी०) दी० नि० १.२८४, ५२६, ५३६; म० नि० २.४२७; महाव० ३००; अ० नि० ५.१९२ पस्सितब्बं], अङ्गीरसो, भारद्वाजो, वासेट्ठो, कस्सपो, भगु; त्यास्सु'मे पञ्च ब्राह्मणे पञ्ञापेन्ति – ब्रह्मसमं, देवसमं, मरियादं, सम्भिन्नमरियादं, ब्राह्मणचण्डालंयेव पञ्चमं। तेसं त्वं दोण, कतमो''ति?

“न खो मयं, भो गोतम, पञ्च ब्राह्मणे जानाम, अथ खो मयं ब्राह्मणात्वेव जानाम। साधु मे भवं गोतमो तथा धम्मं देसेतु यथा अहं इमे पञ्च ब्राह्मणे जानेय्य''न्ति। “तेन हि, ब्राह्मण, सुणोहि, साधुकं मनसि करोहि; भासिस्सामी''ति। “एवं भो''ति खो दोणो ब्राह्मणो भगवतो पच्चस्सोसि। भगवा एतदवोच –

“कथञ्च, दोण, ब्राह्मणो ब्रह्मसमो होति? इध, दोण, ब्राह्मणो उभतो सुजातो होति – मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। सो अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं [कोधारं ब्रह्मचरियं (स्या० क०)] चरति मन्ते अधीयमानो। अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा मन्ते अधीयित्वा आचरियस्स आचरियधनं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन।

“तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कसिया न वणिज्जाय न गोरक्खेन न इस्सत्थेन [न इस्सत्तेन (क०)] न राजपोरिसेन न सिप्पञ्ञतरेन, केवलं भिक्खाचरियाय कपालं अनतिमञ्ञमानो। सो आचरियस्स आचरियधनं निय्यादेत्वा [नीय्यादेत्वा (सी०), नीयादेत्वा (पी०), निय्यातेत्वा (कत्थचि)] केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजति। सो एवं पब्बजितो समानो मेत्तासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरति, तथा दुतियं तथा ततियं तथा चतुत्थं [चतुत्थिं (सी०)], इति उद्धमधो तिरियं सब्बधि सब्बत्तताय सब्बावन्तं लोकं मेत्तासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्जेन [अब्यापज्झेन (क०) अब्याबज्झेन (?)] फरित्वा विहरति। करुणा…पे०… मुदिता… उपेक्खासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरति, तथा दुतियं तथा ततियं तथा चतुत्थं, इति उद्धमधो तिरियं सब्बधि सब्बत्तताय सब्बावन्तं लोकं उपेक्खासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्जेन फरित्वा विहरति। सो इमे चत्तारो ब्रह्मविहारे भावेत्वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं ब्रह्मलोकं उपपज्जति। एवं खो, दोण, ब्राह्मणो ब्रह्मसमो होति।

“कथञ्च, दोण, ब्राह्मणो देवसमो होति? इध, दोण, ब्राह्मणो उभतो सुजातो होति – मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। सो अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरति मन्ते अधीयमानो। अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा मन्ते अधीयित्वा आचरियस्स आचरियधनं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन। तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कसिया न वणिज्जाय न गोरक्खेन न इस्सत्थेन न राजपोरिसेन न सिप्पञ्ञतरेन, केवलं भिक्खाचरियाय कपालं अनतिमञ्ञमानो। सो आचरियस्स आचरियधनं निय्यादेत्वा दारं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन।

“तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कयेन न विक्कयेन, ब्राह्मणिंयेव उदकूपस्सट्ठं। सो ब्राह्मणिंयेव गच्छति, न खत्तियिं न वेस्सिं न सुद्दिं न चण्डालिं न नेसादिं न वेनिं [न वेणिं (सी० स्या० कं० पी०)] न रथकारिं न पुक्कुसिं गच्छति, न गब्भिनिं गच्छति, न पायमानं गच्छति, न अनुतुनिं गच्छति। कस्मा च, दोण, ब्राह्मणो न गब्भिनिं गच्छति? सचे, दोण, ब्राह्मणो गब्भिनिं गच्छति, अतिमीळ्हजो नाम सो होति माणवको वा माणविका [माणवकी (क०)] वा। तस्मा, दोण, ब्राह्मणो न

गब्भिनिं गच्छति। कस्मा च, दोण, ब्राह्मणो न पायमानं गच्छति? सचे, दोण, ब्राह्मणो पायमानं गच्छति, असुचिपटिपीळितो नाम सो होति माणवको वा माणविका वा। तस्मा, दोण, ब्राह्मणो न पायमानं गच्छति। तस्स सा होति ब्राह्मणी नेव कामत्था न दवत्था न रतत्था, पजत्थाव ब्राह्मणस्स ब्राह्मणी होति। सो मेथुनं उप्पादेत्वा केसमस्सुं ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजति। सो एवं पब्बजितो समानो विविच्चेव कामेहि...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो इमे चत्तारो झाने भावेत्वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। एवं खो, दोण, ब्राह्मणो देवसमो होति।

''कथञ्च, दोण, ब्राह्मणो मरियादो होति? इध, दोण, ब्राह्मणो उभतो सुजातो होति — मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। सो अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरति मन्ते अधीयमानो। अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा मन्ते अधीयित्वा आचरियस्स आचरियधनं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन। तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कसिया न वणिज्जाय न गोरक्खेन न इस्सत्थेन न राजपोरिसेन न सिप्पञ्ञतरेन, केवलं भिक्खाचरियाय कपालं अनतिमञ्ञमानो। सो आचरियस्स आचरियधनं निय्यादेत्वा दारं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन।

''तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कयेन न विक्कयेन, ब्राह्मणियेव उदकूपस्सट्ठं। सो ब्राह्मणियेव गच्छति, न खत्तियिं न वेस्सिं न सुद्दिं न चण्डालिं न नेसादिं न वेनिं न रथकारिं न पुक्कुसिं गच्छति, न गब्भिनिं गच्छति, न पायमानं गच्छति, न अनुतुनिं गच्छति। कस्मा च, दोण, ब्राह्मणो न गब्भिनिं गच्छति? सचे, दोण, ब्राह्मणो गब्भिनिं गच्छति, अतिमीळ्हजो नाम सो होति माणवको वा माणविका वा। तस्मा, दोण, ब्राह्मणो न गब्भिनिं गच्छति। कस्मा च, दोण, ब्राह्मणो न पायमानं गच्छति? सचे, दोण, ब्राह्मणो पायमानं गच्छति, असुचिपटिपीळितो नाम सो होति माणवको वा माणविका वा। तस्मा, दोण, ब्राह्मणो न पायमानं गच्छति। तस्स सा होति ब्राह्मणी नेव कामत्था न दवत्था न रतत्था, पजत्थाव ब्राह्मणस्स ब्राह्मणी होति। सो मेथुनं उप्पादेत्वा तमेव पुत्तस्सादं निकामयमानो कुटुम्बं अज्झावसति, न अगारस्मा अनगारियं पब्बजति। याव पोराणानं ब्राह्मणानं मरियादो तत्थ तिट्ठति, तं न वीतिक्कमति। 'याव पोराणानं ब्राह्मणानं मरियादो तत्थ ब्राह्मणो ठितो तं न वीतिक्कमती'ति, खो, दोण, तस्मा ब्राह्मणो मरियादोति वुच्चति। एवं खो, दोण, ब्राह्मणो मरियादो होति।

''कथञ्च, दोण, ब्राह्मणो सम्भिन्नमरियादो होति? इध, दोण, ब्राह्मणो उभतो सुजातो होति — मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। सो अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरति मन्ते अधीयमानो। अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा मन्ते अधीयित्वा आचरियस्स आचरियधनं परियेसति धम्मेनेव, नो अधम्मेन।

''तत्थ च, दोण, को धम्मो? नेव कसिया न वणिज्जाय न गोरक्खेन न इस्सत्थेन न राजपोरिसेन न सिप्पञ्ञतरेन, केवलं भिक्खाचरियाय कपालं अनतिमञ्ञमानो। सो आचरियस्स आचरियधनं निय्यादेत्वा दारं परियेसति धम्मेनपि अधम्मेनपि कयेनपि विक्कयेनपि ब्राह्मणिम्पि उदकूपस्सट्ठं। सो ब्राह्मणिम्पि गच्छति खत्तियिम्पि गच्छति वेस्सिम्पि गच्छति सुद्दिम्पि गच्छति चण्डालिम्पि गच्छति नेसादिम्पि गच्छति वेनिम्पि गच्छति रथकारिम्पि गच्छति पुक्कुसिम्पि गच्छति गब्भिनिम्पि गच्छति पायमानम्पि गच्छति उतुनिम्पि गच्छति अनुतुनिम्पि गच्छति। तस्स सा होति ब्राह्मणी कामत्थापि दवत्थापि रतत्थापि पजत्थापि ब्राह्मणस्स ब्राह्मणी होति। याव पोराणानं ब्राह्मणानं मरियादो तत्थ न तिट्ठति, तं वीतिक्कमति। 'याव पोराणानं ब्राह्मणानं मरियादो तत्थ ब्राह्मणो न ठितो तं वीतिक्कमती'ति खो, दोण, तस्मा ब्राह्मणो

सम्भिन्नमरियादोति वुच्चति। एवं खो, दोण, ब्राह्मणो सम्भिन्नमरियादो होति।

''कथञ्च, दोण, ब्राह्मणो ब्राह्मणचण्डालो होति? इध, दोण, ब्राह्मणो उभतो सुजातो होति – मातितो च पितितो च, संसुद्धगहणिको, याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन। सो अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरति मन्ते अधीयमानो। अट्ठचत्तालीसवस्सानि कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा मन्ते अधीयित्वा आचरियस्स आचरियधनं परियेसति धम्मेनपि अधम्मेनपि कसियापि वणिज्जायपि गोरक्खेनपि इस्सत्थेनपि राजपोरिसेनपि सिप्पञ्ञतरेनपि, केवलम्पि भिक्खाचरियाय, कपालं अनतिमञ्ञमानो।

''सो आचरियस्स आचरियधनं निय्यादेत्वा दारं परियेसति धम्मेनपि अधम्मेनपि कयेनपि विक्कयेनपि ब्राह्मणिम्पि उदकूपस्सट्ठं। सो ब्राह्मणिम्पि गच्छति खत्तियिम्पि गच्छति वेस्सिम्पि गच्छति सुद्दिम्पि गच्छति चण्डालिम्पि गच्छति नेसादिम्पि गच्छति वेनिम्पि गच्छति रथकारिम्पि गच्छति पुक्कुसिम्पि गच्छति गब्भिनिम्पि गच्छति पायमानम्पि गच्छति उतुनिम्पि गच्छति अनुतुनिम्पि गच्छति। तस्स सा होति ब्राह्मणी कामत्थापि दवत्थापि रतत्थापि पजत्थापि ब्राह्मणस्स ब्राह्मणी होति। सो सब्बकम्मेहि जीविकं [जीवितं (क॰)] कप्पेति। तमेनं ब्राह्मणा एवमाहंसु – 'कस्मा भवं ब्राह्मणो पटिजानमानो सब्बकम्मेहि जीविकं कप्पेती'ति? सो एवमाह – 'सेय्यथापि, भो, अग्गि सुचिम्पि डहति असुचिम्पि डहति, न च तेन अग्गि उपलिप्पति [उपलिम्पति (क॰)]; एवमेवं खो, भो, सब्बकम्मेहि चेपि ब्राह्मणो जीविकं कप्पेति, न च तेन ब्राह्मणो उपलिप्पति'। 'सब्बकम्मेहि जीविकं कप्पेती'ति खो, दोण, तस्मा ब्राह्मणो ब्राह्मणचण्डालोति वुच्चति। एवं खो, दोण, ब्राह्मणो ब्राह्मणचण्डालो होति।

''ये खो ते, दोण, ब्राह्मणानं पुब्बका इसयो मन्तानं कत्तारो मन्तानं पवत्तारो येसमिदं एतरहि ब्राह्मणा पोराणं मन्तपदं गीतं पवुत्तं समीहितं तदनुगायन्ति तदनुभासन्ति भासितमनुभासन्ति सज्झायितमनुसज्झायन्ति वाचितमनुवाचेन्ति, सेय्यथिदं – अट्ठको, वामको, वामदेवो, वेस्सामित्तो, यमदग्गि, अङ्गीरसो, भारद्वाजो, वासेट्ठो, कस्सपो, भगु; त्यास्सुमे पञ्च ब्राह्मणे पञ्ञापेन्ति – ब्रह्मसमं, देवसमं, मरियादं, सम्भिन्नमरियादं, ब्राह्मणचण्डालंयेव पञ्चमं। तेसं त्वं, दोण, कतमो''ति?

''एवं सन्ते मयं, भो गोतम, ब्राह्मणचण्डालम्पि न पूरेम। अभिक्कन्तं, भो गोतम...पे॰... उपासकं मं भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गत''न्ति। दुतियं।

३. सङ्गारवसुत्तं

१९३. अथ खो सङ्गारवो ब्राह्मणो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सङ्गारवो ब्राह्मणो भगवन्तं एतदवोच – ''को नु खो, भो गोतम, हेतु को पच्चयो, येन कदाचि दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता? को पन, भो गोतम, हेतु को पच्चयो, येन कदाचि दीघरत्तं असज्झायकतापि मन्ता पटिभन्ति, पगेव सज्झायकता''ति?

''यस्मिं, ब्राह्मण, समये कामरागपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति कामरागपरेतेन, उप्पन्नस्स च कामरागस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो संसट्ठो लाखाय वा हलिद्दिया वा नीलिया वा मञ्जिट्ठाय वा। तत्थ चक्खुमा

पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं नप्पजानेय्य न पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये कामरागपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति कामरागपरेतेन, उप्पन्नस्स च कामरागस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये ब्यापादपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति ब्यापादपरेतेन, उप्पन्नस्स च ब्यापादस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो अग्गिना सन्तत्तो उक्कुधितो [उक्कट्ठितो (सी॰ पी॰), उक्कुट्ठितो (स्या॰ कं॰)] उस्सदकजातो [उसुमकजातो (कत्थचि), उस्सुरकजातो (क॰), उस्मुदकजातो (म॰ नि॰ ३ मज्झिमनिकाये)]। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं नप्पजानेय्य न पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये ब्यापादपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति ब्यापादपरेतेन, उप्पन्नस्स च ब्यापादस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये थिनमिद्धपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति थिनमिद्धपरेतेन, उप्पन्नस्स च थिनमिद्धस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो सेवालपणकपरियोनद्धो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं नप्पजानेय्य न पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये थिनमिद्धपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति थिनमिद्धपरेतेन, उप्पन्नस्स च थिनमिद्धस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये उद्धच्चकुक्कुच्चपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति उद्धच्चकुक्कुच्चपरेतेन, उप्पन्नस्स च उद्धच्चकुक्कुच्चस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो वातेरितो चलितो भन्तो ऊमिजातो [उम्मिजातो (पी॰)]। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं नप्पजानेय्य न पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये उद्धच्चकुक्कुच्चपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति उद्धच्चकुक्कुच्चपरेतेन, उप्पन्नस्स च उद्धच्चकुक्कुच्चस्स निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये विचिकिच्छापरियुट्ठितेन चेतसा विहरति विचिकिच्छापरेतेन, उप्पन्नाय च विचिकिच्छाय निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे॰… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव

असज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो आविलो लुळितो कललीभूतो अन्धकारे निक्खित्तो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं नप्पजानेय्य न पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये विचिकिच्छापरियुट्ठितेन चेतसा विहरति विचिकिच्छापरेतेन, उप्पन्नाय च विचिकिच्छाय निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, परत्थम्पि…पे०… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं नप्पजानाति न पस्सति, दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता।

''यस्मिञ्च खो, ब्राह्मण, समये न कामरागपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति न कामरागपरेतेन, उप्पन्नस्स च कामरागस्स निस्सरणं यथाभूतं पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, परत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, दीघरत्तं असज्झायकतापि मन्ता पटिभन्ति, पगेव सज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो असंसट्ठो लाखाय वा हलिद्दिया वा नीलिया वा मञ्जिट्ठाय वा। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं पजानेय्य पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये न कामरागपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०…।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये न ब्यापादपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०… सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो अग्गिना असन्तत्तो अनुक्कुधितो अनुस्सदकजातो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं पजानेय्य पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये न ब्यापादपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०…।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये न थिनमिद्धपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०… सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो न सेवालपणकपरियोनद्धो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं पजानेय्य पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये न थिनमिद्धपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०…।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये न उद्धच्चकुक्कुच्चपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति…पे०… सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो न वातेरितो न चलितो न भन्तो न ऊमिजातो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं पजानेय्य पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये न उद्धच्चकुक्कुच्चपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति …पे०…।

''पुन चपरं, ब्राह्मण, यस्मिं समये न विचिकिच्छापरियुट्ठितेन चेतसा विहरति न विचिकिच्छापरेतेन, उप्पन्नाय च विचिकिच्छाय निस्सरणं यथाभूतं पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, परत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, दीघरत्तं असज्झायकतापि मन्ता पटिभन्ति, पगेव सज्झायकता। सेय्यथापि, ब्राह्मण, उदपत्तो अच्छो विप्पसन्नो अनाविलो आलोके निक्खित्तो। तत्थ चक्खुमा पुरिसो सकं मुखनिमित्तं पच्चवेक्खमानो यथाभूतं पजानेय्य पस्सेय्य। एवमेवं खो, ब्राह्मण, यस्मिं समये न विचिकिच्छापरियुट्ठितेन चेतसा विहरति न विचिकिच्छापरेतेन, उप्पन्नाय च विचिकिच्छाय निस्सरणं यथाभूतं पजानाति, अत्तत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, परत्थम्पि…पे०… उभयत्थम्पि तस्मिं समये यथाभूतं पजानाति पस्सति, दीघरत्तं असज्झायकतापि मन्ता पटिभन्ति, पगेव सज्झायकता।

''अयं खो, ब्राह्मण, हेतु अयं पच्चयो, येन कदाचि दीघरत्तं सज्झायकतापि मन्ता नप्पटिभन्ति, पगेव असज्झायकता। अयं पन, ब्राह्मण, हेतु अयं पच्चयो, येन कदाचि दीघरत्तं असज्झायकतापि मन्ता पटिभन्ति, पगेव सज्झायकता''ति।

"अभिक्कन्तं, भो गोतम...पे०... उपासकं मं भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गत"न्ति। ततियं।

४. कारणपालीसुत्तं

१९४. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन कारणपाली [करणपाली (क०)] ब्राह्मणो लिच्छवीनं कम्मन्तं कारेति। अद्दसा खो कारणपाली ब्राह्मणो पिङ्गियानिं ब्राह्मणं दूरतोव आगच्छन्तं; दिस्वा पिङ्गियानिं ब्राह्मणं एतदवोच –

"हन्द, कुतो नु भवं पिङ्गियानी आगच्छति दिवा दिवस्सा"ति? "इतोहं [इधाहं (स्या० कं०), इतो हि खो अहं (म० नि० १.२८८)], भो, आगच्छामि समणस्स गोतमस्स सन्तिका"ति। "तं किं मञ्ञति भवं, पिङ्गियानी, समणस्स गोतमस्स पञ्ञावेय्यत्तियं? पण्डितो मञ्ञे"ति? "को चाहं, भो, को च समणस्स गोतमस्स पञ्ञावेय्यत्तियं जानिस्सामि! सोपि नूनस्स तादिसोव यो समणस्स गोतमस्स पञ्ञावेय्यत्तियं जानेय्या"ति! "उळाराय खलु भवं, पिङ्गियानी, समणं गोतमं पसंसाय पसंसती"ति। "को चाहं, भो, को च समणं गोतमं पसंसिस्सामि! पसत्थप्पसत्थोव [पसट्ठपसट्ठो च (स्या० कं० क०)] सो भवं गोतमो सेट्ठो देवमनुस्सान"न्ति। "किं पन भवं, पिङ्गियानी, अत्थवसं सम्पस्समानो समणे गोतमे एवं अभिप्पसन्नो"ति?

"सेय्यथापि, भो, पुरिसो अग्गरसपरितित्तो न अञ्ञेसं हीनानं रसानं पिहेति; एवमेवं खो, भो, यतो यतो तस्स भोतो गोतमस्स धम्मं सुणाति – यदि सुत्तसो, यदि गेय्यसो, यदि वेय्याकरणसो, यदि अब्भुतधम्मसो – ततो ततो न अञ्ञेसं पुथुसमणब्राह्मणप्पवादानं पिहेति।

"सेय्यथापि, भो, पुरिसो जिघच्छादुब्बल्यपरेतो मधुपिण्डिकं अधिगच्छेय्य। सो यतो यतो सायेथ, लभतेव [सायेय्य, लभेथेव (म० नि० १.२०५)] सादुरसं असेचनकं; एवमेवं खो, भो, यतो यतो तस्स भोतो गोतमस्स धम्मं सुणाति – यदि सुत्तसो, यदि गेय्यसो, यदि वेय्याकरणसो, यदि अब्भुतधम्मसो – ततो ततो लभतेव अत्तमनतं, लभति चेतसो पसादं।

"सेय्यथापि, भो, पुरिसो चन्दनघटिकं अधिगच्छेय्य – हरिचन्दनस्स वा लोहितचन्दनस्स वा। सो यतो यतो घायेथ – यदि मूलतो, यदि मज्झतो, यदि अग्गतो – अधिगच्छतेव [अधिगच्छेथेव (?)] सुरभिगन्धं असेचनकं; एवमेवं खो, भो, यतो यतो तस्स भोतो गोतमस्स धम्मं सुणाति – यदि सुत्तसो, यदि गेय्यसो, यदि वेय्याकरणसो, यदि अब्भुतधम्मसो – ततो ततो अधिगच्छति पामोज्जं अधिगच्छति सोमनस्सं।

"सेय्यथापि, भो, पुरिसो आबाधिको दुक्खितो बाळ्हगिलानो। तस्स कुसलो भिसक्को ठानसो आबाधं नीहरेय्य; एवमेवं खो, भो, यतो यतो तस्स भोतो गोतमस्स धम्मं सुणाति – यदि सुत्तसो, यदि गेय्यसो, यदि वेय्याकरणसो, यदि अब्भुतधम्मसो – ततो ततो सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा अब्भत्थं गच्छन्ति।

"सेय्यथापि, भो, पोक्खरणी अच्छोदका सातोदका सीतोदका सेतका सुपतित्था रमणीया। अथ पुरिसो आगच्छेय्य घम्माभितत्तो घम्मपरेतो किलन्तो तसितो पिपासितो। सो तं पोक्खरणिं ओगाहेत्वा न्हात्वा च पिवित्वा च सब्बदरथकिलमथपरिळाहं पटिप्पस्सम्भेय्य। एवमेवं खो, भो, यतो यतो तस्स भोतो गोतमस्स धम्मं सुणाति – यदि सुत्तसो, यदि गेय्यसो, यदि वेय्याकरणसो, यदि अब्भुतधम्मसो – ततो ततो सब्बदरथकिलमथपरिळाहा पटिप्पस्सम्भन्ती"ति।

एवं वुत्ते कारणपाली ब्राह्मणो उट्ठायासना एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा दक्खिणं जाणुमण्डलं पथवियं निहन्त्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा तिक्खत्तुं उदानं उदानेसि –

“नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्सा”ति॥

“अभिक्कन्तं, भो पिङ्गियानि, अभिक्कन्तं, भो पिङ्गियानि! सेय्यथापि, भो पिङ्गियानि, निक्कुज्जितं [निकुज्जितं (क॰)] वा उक्कुज्जेय्य पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य – चक्खुमन्तो रूपानि दक्खन्तीति; एवमेवं भोता पिङ्गियानिना अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं, भो पिङ्गियानि, तं भवन्तं गोतमं सरणं गच्छामि धम्मञ्च भिक्खुसङ्घञ्च। उपासकं मं भवं पिङ्गियानी धारेतु, अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गत”न्ति। चतुत्थं।

५. पिङ्गियानीसुत्तं

१९५. एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति महावने कूटागारसालायं। तेन खो पन समयेन पञ्चमत्तानि लिच्छविसतानि भगवन्तं पयिरुपासन्ति। अप्पेकच्चे लिच्छवी नीला होन्ति नीलवण्णा नीलवत्था नीलालङ्कारा, अप्पेकच्चे लिच्छवी पीता होन्ति पीतवण्णा पीतवत्था पीतालङ्कारा, अप्पेकच्चे लिच्छवी लोहितका होन्ति लोहितकवण्णा लोहितकवत्था लोहितकालङ्कारा, अप्पेकच्चे लिच्छवी ओदाता होन्ति ओदातवण्णा ओदातवत्था ओदातालङ्कारा। त्यस्सुदं भगवा अतिरोचति वण्णेन चेव यससा च।

अथ खो पिङ्गियानी ब्राह्मणो उट्ठायासना एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं एतदवोच – “पटिभाति मं, भगवा, पटिभाति मं, सुगता”ति। “पटिभातु तं पिङ्गियानी”ति भगवा अवोच। अथ खो पिङ्गियानी ब्राह्मणो भगवतो सम्मुखा सारुप्पाय गाथाय अभित्थवि –

“पद्मं [पदुमं (क॰) सं॰ नि॰ १.१३२] यथा कोकनदं [कोकनुदं (स्या॰ कं॰)] सुगन्धं,
पातो सिया फुल्लमवीतगन्धं।
अङ्गीरसं पस्स विरोचमानं,
तपन्तमादिच्चमिवन्तलिक्खे”ति॥

अथ खो ते लिच्छवी पञ्चहि उत्तरासङ्गसतेहि पिङ्गियानिं ब्राह्मणं अच्छादेसुं। अथ खो पिङ्गियानी ब्राह्मणो तेहि पञ्चहि उत्तरासङ्गसतेहि भगवन्तं अच्छादेसि।

अथ खो भगवा ते लिच्छवी एतदवोच – “पञ्चन्नं, लिच्छवी, रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। कतमेसं पञ्चन्नं? तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं। तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसेता पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं। तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसितस्स विञ्ञाता पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं। तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसितस्स विञ्ञाता धम्मानुधम्मप्पटिपन्नो पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं। कतञ्ञू कतवेदी पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं। इमेसं खो, लिच्छवी, पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मि”न्ति [अ॰ नि॰ ५.१४३]।

पञ्चमं।

६. महासुपिनसुत्तं

१९६. ''तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो पञ्च महासुपिना पातुरहेसुं। कतमे पञ्च? तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं महापथवी महासयनं अहोसि, हिमवा पब्बतराजा बिब्बोहनं [बिब्बोहनं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰), बिम्ब + ओहनं = इति पदविभागो] अहोसि, पुरत्थिमे समुद्दे वामो हत्थो ओहितो अहोसि, पच्छिमे समुद्दे दक्खिणो हत्थो ओहितो अहोसि, दक्खिणे समुद्दे उभो पादा ओहिता अहेसुं। तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं पठमो महासुपिनो पातुरहोसि।

''पुन चपरं, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो तिरिया नाम तिणजाति नाभिया उग्गन्त्वा नभं आहच्च ठिता अहोसि। तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं दुतियो महासुपिनो पातुरहोसि।

''पुन चपरं, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो सेता किमी कण्हसीसा पादेहि उस्सक्कित्वा ( ) [(अग्गनखतो) कत्थचि दिस्सति] याव जाणुमण्डला पटिच्छादेसुं। तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं ततियो महासुपिनो पातुरहोसि।

''पुन चपरं, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो चत्तारो सकुणा नानावण्णा चतूहि दिसाहि आगन्त्वा पादमूले निपतित्वा सब्बसेता सम्पज्जिंसु। तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं चतुत्थो महासुपिनो पातुरहोसि।

''पुन चपरं, भिक्खवे, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धो बोधिसत्तोव समानो महतो मीळ्हपब्बतस्स उपरूपरि चङ्कमति अलिप्पमानो मीळ्हेन। तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं पञ्चमो महासुपिनो पातुरहोसि।

''यम्पि, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो अयं महापथवी महासयनं अहोसि, हिमवा पब्बतराजा बिब्बोहनं अहोसि, पुरत्थिमे समुद्दे वामो हत्थो ओहितो अहोसि, पच्छिमे समुद्दे दक्खिणो हत्थो ओहितो अहोसि, दक्खिणे समुद्दे उभो पादा ओहिता अहेसुं; तथागतेन, भिक्खवे, अरहता सम्मासम्बुद्धेन अनुत्तरा सम्मासम्बोधि अभिसम्बुद्धा। तस्सा अभिसम्बोधाय अयं पठमो महासुपिनो पातुरहोसि।

''यम्पि, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो तिरिया नाम तिणजाति नाभिया उग्गन्त्वा नभं आहच्च ठिता अहोसि; तथागतेन, भिक्खवे, अरहता सम्मासम्बुद्धेन अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो अभिसम्बुज्झित्वा याव देवमनुस्सेहि सुप्पकासितो। तस्स अभिसम्बोधाय अयं दुतियो महासुपिनो पातुरहोसि।

''यम्पि, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो सेता किमी कण्हसीसा पादेहि उस्सक्कित्वा याव जाणुमण्डला पटिच्छादेसुं; बहू, भिक्खवे, गिही ओदातवसना तथागतं पाणुपेता [पाणुपेतं (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] सरणं गता। तस्स अभिसम्बोधाय अयं ततियो महासुपिनो पातुरहोसि।

''यम्पि, भिक्खवे, तथागतस्स अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो चत्तारो सकुणा नानावण्णा चतूहि दिसाहि आगन्त्वा पादमूले निपतित्वा सब्बसेता सम्पज्जिंसु; चत्तारोमे, भिक्खवे, वण्णा खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा सुद्दा ते तथागतप्पवेदिते धम्मविनये अगारस्मा अनगारियं पब्बजित्वा अनुत्तरं विमुत्तिं सच्छिकरोन्ति। तस्स अभिसम्बोधाय अयं चतुत्थो महासुपिनो पातुरहोसि।

''यम्पि, भिक्खवे, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धो बोधिसत्तोव समानो महतो मीळ्हपब्बतस्स उपरूपरि चङ्कमति अलिप्पमानो मीळ्हेन; लाभी, भिक्खवे, तथागतो चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारानं, तं [तत्थ च (सी॰ स्या॰ कं॰ पी॰)] तथागतो अगथितो [अगधितो (स्या॰ पी॰ क॰)] अमुच्छितो अनज्झोसन्नो [अनज्झापन्नो (क॰) अनज्झोपन्नो (सी॰ स्या॰)] आदीनवदस्सावी निस्सरणपञ्ञो परिभुञ्जति। तस्स अभिसम्बोधाय अयं पञ्चमो महासुपिनो पातुरहोसि।

''तथागतस्स, भिक्खवे, अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पुब्बेव सम्बोधा अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो इमे पञ्च महासुपिना पातुरहेसु''न्ति। छट्ठं।

७. वस्ससुत्तं

१९७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, वस्सस्स अन्तराया, यं नेमित्ता [नेमित्तका (कत्थचि)] न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति। कतमे पञ्च? उपरि, भिक्खवे, आकासे तेजोधातु पकुप्पति। तेन उप्पन्ना मेघा पटिविगच्छन्ति। अयं, भिक्खवे, पठमो वस्सस्स अन्तरायो, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, उपरि आकासे वायोधातु पकुप्पति। तेन उप्पन्ना मेघा पटिविगच्छन्ति। अयं, भिक्खवे, दुतियो वस्सस्स अन्तरायो, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, राहु असुरिन्दो पाणिना उदकं सम्पटिच्छित्वा महासमुद्दे छड्डेति। अयं, भिक्खवे, ततियो वस्सस्स अन्तरायो, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, वस्सवलाहका देवा पमत्ता होन्ति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो वस्सस्स अन्तरायो, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति।

''पुन चपरं, भिक्खवे, मनुस्सा अधम्मिका होन्ति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो वस्सस्स अन्तरायो, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च वस्सस्स अन्तराया, यं नेमित्ता न जानन्ति, यत्थ नेमित्तानं चक्खु न कमती''ति। सत्तमं।

८. वाचासुत्तं

१९८. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, नो दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं [अननुवज्जा विञ्ञूनं (स्या० कं०)]। कतमेहि पञ्चहि? कालेन च भासिता होति, सच्चा च भासिता होति, सण्हा च भासिता होति, अत्थसंहिता च भासिता होति, मेत्तचित्तेन च भासिता होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, नो दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञून''न्ति। अट्ठमं।

९. कुलसुत्तं

१९९. ''यं, भिक्खवे, सीलवन्तो पब्बजिता कुलं उपसङ्कमन्ति, तत्थ मनुस्सा पञ्चहि ठानेहि बहुं पुञ्ञं पसवन्ति। कतमेहि पञ्चहि? यस्मिं, भिक्खवे, समये सीलवन्ते पब्बजिते कुलं उपसङ्कमन्ते मनुस्सा दिस्वा चित्तानि पसादेन्ति [पसीदन्ति (स्या० कं० क०)], सग्गसंवत्तनिकं, भिक्खवे, तं कुलं तस्मिं समये पटिपदं पटिपन्नं होति।

''यस्मिं, भिक्खवे, समये सीलवन्ते पब्बजिते कुलं उपसङ्कमन्ते मनुस्सा पच्चुट्ठेन्ति अभिवादेन्ति आसनं देन्ति, उच्चाकुलीनसंवत्तनिकं, भिक्खवे, तं कुलं तस्मिं समये पटिपदं पटिपन्नं होति।

''यस्मिं, भिक्खवे, समये सीलवन्ते पब्बजिते कुलं उपसङ्कमन्ते मनुस्सा मच्छेरमलं पटिविनेन्ति [पटिविनोदेन्ति (सी० पी०)], महेसक्खसंवत्तनिकं, भिक्खवे, तं कुलं तस्मिं समये पटिपदं पटिपन्नं होति।

''यस्मिं, भिक्खवे, समये सीलवन्ते पब्बजिते कुलं उपसङ्कमन्ते मनुस्सा यथासत्ति यथाबलं संविभजन्ति, महाभोगसंवत्तनिकं, भिक्खवे, तं कुलं तस्मिं समये पटिपदं पटिपन्नं होति।

''यस्मिं, भिक्खवे, समये सीलवन्ते पब्बजिते कुलं उपसङ्कमन्ते मनुस्सा परिपुच्छन्ति परिपञ्हन्ति धम्मं सुणन्ति, महापञ्ञासंवत्तनिकं, भिक्खवे, तं कुलं तस्मिं समये पटिपदं पटिपन्नं होति। यं, भिक्खवे, सीलवन्तो पब्बजिता कुलं उपसङ्कमन्ति, तत्थ मनुस्सा इमेहि पञ्चहि ठानेहि बहुं पुञ्ञं पसवन्ती''ति। नवमं।

१०. निस्सारणीयसुत्तं

२००. ''पञ्चिमा, भिक्खवे, निस्सारणीया [निस्सरणीया (पी०), निस्सरणिया (दी० नि० ३.३२१)] धातुयो। कतमा पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खुनो कामं [कामे (स्या० कं०) दी० नि० ३.३२१] मनसिकरोतो कामेसु चित्तं न पक्खन्दति नप्पसीदति न सन्तिट्ठति न विमुच्चति। नेक्खम्मं खो पनस्स मनसिकरोतो नेक्खम्मे चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति। तस्स तं चित्तं सुगतं [सुकतं (पी० क०)] सुभावितं सुवुट्ठितं सुविमुत्तं सुविसंयुत्तं [विसंयुत्तं (कत्थचि, दी० नि० ३.३२१)] कामेहि; ये च कामपच्चया उप्पज्जन्ति आसवा विघातपरिळाहा, मुत्तो सो तेहि, न सो तं वेदनं वेदियति। इदमक्खातं कामानं निस्सरणं।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो ब्यापादं मनसिकरोतो ब्यापादे चित्तं न पक्खन्दति नप्पसीदति न सन्तिट्ठति न विमुच्चति। अब्यापादं खो पनस्स मनसिकरोतो अब्यापादे चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति। तस्स तं चित्तं सुगतं सुभावितं सुवुट्ठितं सुविमुत्तं सुविसंयुत्तं ब्यापादेन; ये च ब्यापादपच्चया उप्पज्जन्ति आसवा विघातपरिळाहा, मुत्तो सो तेहि, न सो तं वेदनं वेदियति। इदमक्खातं ब्यापादस्स निस्सरणं।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो विहेसं मनसिकरोतो विहेसाय चित्तं न पक्खन्दति नप्पसीदति न सन्तिट्ठति न विमुच्चति। अविहेसं खो पनस्स मनसिकरोतो अविहेसाय चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति। तस्स तं चित्तं सुगतं सुभावितं सुवुट्ठितं सुविमुत्तं सुविसंयुत्तं विहेसाय; ये च विहेसापच्चया उप्पज्जन्ति आसवा विघातपरिळाहा, मुत्तो सो तेहि, न सो तं वेदनं वेदियति। इदमक्खातं विहेसाय निस्सरणं।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो रूपं मनसिकरोतो रूपे चित्तं न पक्खन्दति नप्पसीदति न सन्तिट्ठति न विमुच्चति। अरूपं खो पनस्स मनसिकरोतो अरूपे चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति। तस्स तं चित्तं सुगतं सुभावितं सुवुट्ठितं सुविमुत्तं सुविसंयुत्तं रूपेहि; ये च रूपपच्चया उप्पज्जन्ति आसवा विघातपरिळाहा, मुत्तो सो तेहि, न सो तं वेदनं वेदियति। इदमक्खातं रूपानं निस्सरणं।

“पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खुनो सक्कायं मनसिकरोतो सक्काये चित्तं न पक्खन्दति नप्पसीदति न सन्तिट्ठति न विमुच्चति। सक्कायनिरोधं खो पनस्स मनसिकरोतो सक्कायनिरोधे चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति। तस्स तं चित्तं सुगतं सुभावितं सुवुट्ठितं सुविमुत्तं सुविसंयुत्तं सक्कायेन; ये च सक्कायपच्चया उप्पज्जन्ति आसवा विघातपरिळाहा, मुत्तो सो तेहि, न सो तं वेदनं वेदियति। इदमक्खातं सक्कायस्स निस्सरणं।

“तस्स कामनन्दीपि नानुसेति, ब्यापादनन्दीपि नानुसेति, विहेसानन्दीपि नानुसेति, रूपनन्दीपि नानुसेति, सक्कायनन्दीपि नानुसेति (सो) [( ) कत्थचि नत्थि] कामनन्दियापि अननुसया, ब्यापादनन्दियापि अननुसया, विहेसानन्दियापि अननुसया, रूपनन्दियापि अननुसया, सक्कायनन्दियापि अननुसया। अयं वुच्चति, भिक्खवे, भिक्खु निरनुसयो, अच्छेच्छि [अच्छेज्जि (स्या० कं० क०)] तण्हं, विवत्तयि [वावत्तयि (सी०)] संयोजनं, सम्मा मानाभिसमया अन्तमकासि दुक्खस्स। इमा खो, भिक्खवे, पञ्च निस्सारणीया धातुयो’’ति। दसमं।

ब्राह्मणवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

सोणो दोणो सङ्गारवो, कारणपाली च पिङ्गियानी।
सुपिना च वस्सा वाचा, कुलं निस्सारणीयेन चाति॥

चतुत्थपण्णासकं समत्तो।

५. पञ्चमपण्णासकं

(२१) १. किमिलवग्गो

१. किमिलसुत्तं

२०१. एकं समयं भगवा किमिलायं [किम्बिलायं (सी० पी०) अ० नि० ६.४०; ७.५९] विहरति वेळुवने। अथ खो आयस्मा किमिलो [किम्बिलो (सी० स्या० कं० पी०)] येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा

एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा किमिलो भगवन्तं एतदवोच – ''को नु खो, भन्ते, हेतु को पच्चयो, येन तथागते परिनिब्बुते सद्धम्मो न चिरट्ठितिको होती''ति? ''इध, किमिल, तथागते परिनिब्बुते भिक्खू भिक्खुनियो उपासका उपासिकायो सत्थरि अगारवा विहरन्ति अप्पतिस्सा, धम्मे अगारवा विहरन्ति अप्पतिस्सा, सङ्घे अगारवा विहरन्ति अप्पतिस्सा, सिक्खाय अगारवा विहरन्ति अप्पतिस्सा, अञ्ञमञ्ञं अगारवा विहरन्ति अप्पतिस्सा। अयं खो, किमिल, हेतु अयं पच्चयो, येन तथागते परिनिब्बुते सद्धम्मो न चिरट्ठितिको होती''ति।

''को पन, भन्ते, हेतु को पच्चयो, येन तथागते परिनिब्बुते सद्धम्मो चिरट्ठितिको होती''ति? ''इध, किमिल, तथागते परिनिब्बुते भिक्खू भिक्खुनियो उपासका उपासिकायो सत्थरि सगारवा विहरन्ति सप्पतिस्सा, धम्मे सगारवा विहरन्ति सप्पतिस्सा, सङ्घे सगारवा विहरन्ति सप्पतिस्सा, सिक्खाय सगारवा विहरन्ति सप्पतिस्सा, अञ्ञमञ्ञं सगारवा विहरन्ति सप्पतिस्सा। अयं खो, किमिल, हेतु अयं पच्चयो, येन तथागते परिनिब्बुते सद्धम्मो चिरट्ठितिको होती''ति। पठमं।

२. धम्मस्सवनसुत्तं

२०२. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा धम्मस्सवने। कतमे पञ्च? अस्सुतं सुणाति, सुतं परियोदापेति, कङ्खं वितरति [विहनति (स्या० कं० पी० क०)], दिट्ठिं उजुं करोति, चित्तमस्स पसीदति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा धम्मस्सवने''ति। दुतियं।

३. अस्साजानीयसुत्तं

२०३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो भद्रो [भद्दो (पी०)] अस्साजानीयो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गन्त्वेव सङ्खं गच्छति।

''कतमेहि पञ्चहि? अज्जवेन, जवेन, मद्दवेन, खन्तिया, सोरच्चेन – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो भद्रो अस्साजानीयो राजारहो होति राजभोग्गो, रञ्ञो अङ्गन्त्वेव सङ्खं गच्छति। ''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्स।

''कतमेहि पञ्चहि? अज्जवेन, जवेन, मद्दवेन, खन्तिया, सोरच्चेन – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु आहुनेय्यो होति पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा''ति। ततियं।

४. बलसुत्तं

२०४. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, बलानि। कतमानि पञ्च? सद्धाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं, वीरियबलं, पञ्ञाबलं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च बलानी''ति। चतुत्थं।

५. चेतोखिलसुत्तं

२०५. [अ० नि० ९.७१; म० नि० १.१८५; दी० नि० ३.३१९] ''पञ्चिमे, भिक्खवे, चेतोखिला। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति नाधिमुच्चति न सम्पसीदति। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु सत्थरि कङ्खति विचिकिच्छति नाधिमुच्चति न सम्पसीदति, तस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय। यस्स चित्तं न

नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय, अयं पठमो चेतोखिलो।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु धम्मे कङ्खति...पे०... सङ्घे कङ्खति...पे०... सिक्खाय कङ्खति...पे०... सब्रह्मचारीसु कुपितो होति अनत्तमनो आहतचित्तो खिलजातो। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु सब्रह्मचारीसु कुपितो होति अनत्तमनो आहतचित्तो खिलजातो, तस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय। यस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय, अयं पञ्चमो चेतोखिलो। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च चेतोखिला''ति। पञ्चमं।

६. विनिबन्धसुत्तं

२०६. [अ० नि० ९.७२; दी० नि० ३.३२०] ''पञ्चिमे, भिक्खवे, चेतसोविनिबन्धा [चेतोविनिबद्धा (सारत्थदीपनीटीकायं)]। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, भिक्खु कामेसु अवीतरागो [अविगतरागो (क०)] होति अविगतच्छन्दो अविगतपेमो अविगतपिपासो अविगतपरिळाहो अविगततण्हो। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु कामेसु अवीतरागो होति अविगतच्छन्दो अविगतपेमो अविगतपिपासो अविगतपरिळाहो अविगततण्हो, तस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय। यस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय, अयं पठमो चेतसोविनिबन्धो।

''पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु काये अवीतरागो होति...पे०... रूपे अवीतरागो होति...पे०... यावदत्थं उदरावदेहकं भुञ्जित्वा सेय्यसुखं पस्ससुखं मिद्धसुखं अनुयुत्तो विहरति...पे०... अञ्ञतरं देवनिकायं पणिधाय ब्रह्मचरियं चरति – 'इमिनाहं सीलेन वा वतेन वा तपेन वा ब्रह्मचरियेन वा देवो वा भविस्सामि देवञ्ञतरो वा'ति। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु अञ्ञतरं देवनिकायं पणिधाय ब्रह्मचरियं चरति – 'इमिनाहं सीलेन वा वतेन वा तपेन वा ब्रह्मचरियेन वा देवो वा भविस्सामि देवञ्ञतरो वा'ति, तस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय। यस्स चित्तं न नमति आतप्पाय अनुयोगाय सातच्चाय पधानाय, अयं पञ्चमो चेतसोविनिबन्धो। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च चेतसोविनिबन्धा''ति। छट्ठं।

७. यागुसुत्तं

२०७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा यागुया। कतमे पञ्च? खुद्दं [खुदं (सी० पी०) खुधाति सक्कतानुलोमं। महाव० २८२] पटिहनति, पिपासं पटिविनेति, वातं अनुलोमेति, वत्थिं सोधेति, आमावसेसं पाचेति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा यागुया''ति। सत्तमं।

८. दन्तकट्ठसुत्तं

२०८. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दन्तकट्ठस्स अखादने। कतमे पञ्च? अचक्खुस्सं, मुखं दुग्गन्धं होति, रसहरणियो न विसुज्झन्ति, पित्तं सेम्हं भत्तं परियोनन्धति [परियोनद्धन्ति (सी० पी०), परियोनद्धति (स्या० कं० क०) चूळव० २८२ पस्सितब्बं], भत्तमस्स नच्छादेति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दन्तकट्ठस्स अखादने।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा दन्तकट्ठस्स खादने। कतमे पञ्च? चक्खुस्सं, मुखं न दुग्गन्धं होति, रसहरणियो विसुज्झन्ति, पित्तं सेम्हं भत्तं न परियोनन्धति, भत्तमस्स छादेति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा दन्तकट्ठस्स

खादने''ति। अट्ठमं।

९. गीतस्सरसुत्तं

२०९. [चूळव० २४९] ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं भणन्तस्स। कतमे पञ्च? अत्तनापि तस्मिं सरे सारज्जति, परेपि तस्मिं सरे सारज्जन्ति, गहपतिकापि उज्झायन्ति – 'यथेव मयं गायाम, एवमेवं खो समणा सक्यपुत्तिया गायन्ती'ति, सरकुत्तिम्पि निकामयमानस्स समाधिस्स भङ्गो होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं भणन्तस्सा''ति। नवमं।

१०. मुट्ठस्सतिसुत्तं

२१०. [महाव० ३५३] ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स निद्दं ओक्कमयतो। कतमे पञ्च? दुक्खं सुपति, दुक्खं पटिबुज्झति, पापकं सुपिनं पस्सति, देवता न रक्खन्ति, असुचि मुच्चति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स निद्दं ओक्कमयतो।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा उपट्ठितस्सतिस्स सम्पजानस्स निद्दं ओक्कमयतो। कतमे पञ्च? सुखं सुपति, सुखं पटिबुज्झति, न पापकं सुपिनं पस्सति, देवता रक्खन्ति, असुचि न मुच्चति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा उपट्ठितस्सतिस्स सम्पजानस्स निद्दं ओक्कमयतो''ति। दसमं।

किमिलवग्गो पठमो।

तस्सुद्दानं –

किमिलो धम्मस्सवनं, आजानीयो बलं खिलं।
विनिबन्धं यागु कट्ठं, गीतं मुट्ठस्सतिना चाति॥

(२२) २. अक्कोसकवग्गो

१. अक्कोसकसुत्तं

२११. ''यो सो, भिक्खवे, भिक्खु अक्कोसकपरिभासको अरियूपवादी सब्रह्मचारीनं, तस्स पञ्च आदीनवा पाटिकङ्खा। कतमे पञ्च? पाराजिको वा होति छिन्नपरिपन्थो [छिन्नपरिबन्धो (क०)], अञ्ञतरं वा संकिलिट्ठं आपत्तिं आपज्जति, बाळ्हं वा रोगातङ्कं फुसति, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु अक्कोसकपरिभासको अरियूपवादी सब्रह्मचारीनं, तस्स इमे पञ्च आदीनवा पाटिकङ्खा''ति। पठमं।

२. भण्डनकारकसुत्तं

२१२. ''यो सो, भिक्खवे, भिक्खु भण्डनकारको कलहकारको विवादकारको भस्सकारको सङ्घे अधिकरणकारको,

तस्स पञ्च आदीनवा पाटिकङ्खा। कतमे पञ्च? अनधिगतं नाधिगच्छति, अधिगता [अधिगतं (सब्बत्थ)] परिहायति, पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। यो सो, भिक्खवे, भिक्खु भण्डनकारको कलहकारको विवादकारको भस्सकारको सङ्घे अधिकरणकारको, तस्स इमे पञ्च आदीनवा पाटिकङ्खा''ति। दुतियं।

३. सीलसुत्तं

२१३. [महाव० २०९; दी० नि० ३.३१६] ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, दुस्सीलो सीलविपन्नो पमादाधिकरणं महतिं भोगजानिं निगच्छति। अयं, भिक्खवे, पठमो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया।

''पुन चपरं, भिक्खवे, दुस्सीलस्स सीलविपन्नस्स पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति। अयं, भिक्खवे, दुतियो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया।

''पुन चपरं, भिक्खवे, दुस्सीलो सीलविपन्नो यञ्ञदेव परिसं उपसङ्कमति – यदि खत्तियपरिसं, यदि ब्राह्मणपरिसं, यदि गहपतिपरिसं, यदि समणपरिसं – अविसारदो उपसङ्कमति मङ्कुभूतो। अयं, भिक्खवे, ततियो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया।

''पुन चपरं, भिक्खवे, दुस्सीलो सीलविपन्नो सम्मूळ्हो कालं करोति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया।

''पुन चपरं, भिक्खवे, दुस्सीलो सीलविपन्नो कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा सीलवतो सीलसम्पदाय। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, सीलवा सीलसम्पन्नो अप्पमादाधिकरणं महन्तं भोगक्खन्धं अधिगच्छति। अयं, भिक्खवे, पठमो आनिसंसो सीलवतो सीलसम्पदाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सीलवतो सीलसम्पन्नस्स कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति। अयं, भिक्खवे, दुतियो आनिसंसो सीलवतो सीलसम्पदाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सीलवा सीलसम्पन्नो यञ्ञदेव परिसं उपसङ्कमति – यदि खत्तियपरिसं, यदि ब्राह्मणपरिसं, यदि गहपतिपरिसं, यदि समणपरिसं – विसारदो उपसङ्कमति अमङ्कुभूतो। अयं भिक्खवे, ततियो आनिसंसो सीलवतो सीलसम्पदाय।

''पुन चपरं, भिक्खवे, सीलवा सीलसम्पन्नो असम्मूळ्हो कालं करोति। अयं, भिक्खवे, चतुत्थो आनिसंसो सीलवतो सीलसम्पदाय।

‘‘पुन चपरं, भिक्खवे, सीलवा सीलसम्पन्नो कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो आनिसंसो सीलवतो सीलसम्पदाय। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा सीलवतो सीलसम्पदाया’’ति। ततियं।

४. बहुभाणिसुत्तं

२१४. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा बहुभाणिस्मिं पुग्गले। कतमे पञ्च? मुसा भणति, पिसुणं भणति, फरुसं भणति, सम्फप्पलापं भणति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा बहुभाणिस्मिं पुग्गले।

‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा मन्तभाणिस्मिं पुग्गले। कतमे पञ्च? न मुसा भणति, न पिसुणं भणति, न फरुसं भणति, न सम्फप्पलापं भणति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा मन्तभाणिस्मिं पुग्गले’’ति। चतुत्थं।

५. पठमअक्खन्तिसुत्तं

२१५. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अक्खन्तिया। कतमे पञ्च? बहुनो जनस्स अप्पियो होति अमनापो, वेरबहुलो च होति, वज्जबहुलो च, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अक्खन्तिया।

‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा खन्तिया। कतमे पञ्च? बहुनो जनस्स पियो होति मनापो, न वेरबहुलो होति, न वज्जबहुलो, असम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा खन्तिया’’ति। पञ्चमं।

६. दुतियअक्खन्तिसुत्तं

२१६. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अक्खन्तिया। कतमे पञ्च? बहुनो जनस्स अप्पियो होति अमनापो, लुद्दो च होति, विप्पटिसारी च, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अक्खन्तिया।

‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा खन्तिया। कतमे पञ्च? बहुनो जनस्स पियो होति मनापो, अलुद्दो च होति, अविप्पटिसारी च, असम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा खन्तिया’’ति। छट्ठं।

७. पठमअपासादिकसुत्तं

२१७. ‘‘पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अपासादिके। कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं उपवदति, अनुविच्च विञ्ञू गरहन्ति, पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, सम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अपासादिके।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा पासादिके। कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं न उपवदति, अनुविच्च विञ्ञू पसंसन्ति, कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, असम्मूळ्हो कालं करोति, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा पासादिके”ति। सत्तमं।

८. दुतियअपासादिकसुत्तं

२१८. “पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अपासादिके। कतमे पञ्च? अप्पसन्ना नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं होति, सत्थुसासनं अकतं [न कतं (स्या॰ कं॰ क॰)] होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति, चित्तमस्स नप्पसीदति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अपासादिके।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा पासादिके। कतमे पञ्च? अप्पसन्ना पसीदन्ति, पसन्नानञ्च भिय्योभावो होति, सत्थुसासनं कतं होति, पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति, चित्तमस्स पसीदति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा पासादिके”ति। अट्ठमं।

९. अग्गिसुत्तं

२१९. “पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अग्गिस्मिं। कतमे पञ्च? अचक्खुस्सो, दुब्बण्णकरणो, दुब्बलकरणो, सङ्गणिकापवड्ढनो [सङ्गणिकापवद्धनो (सी॰), सङ्गणिकारामबद्धनो (क॰)], तिरच्छानकथापवत्तनिको होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अग्गिस्मि”न्ति। नवमं।

१०. मधुरासुत्तं

२२०. “पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा मधुरायं। कतमे पञ्च? विसमा, बहुरजा, चण्डसुनखा, वाळयक्खा, दुल्लभपिण्डा – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा मधुराय”न्ति। दसमं।

अक्कोसकवग्गो दुतियो।

तस्सुद्दानं –

अक्कोसभण्डनसीलं, बहुभाणी द्वे अखन्तियो।
अपासादिका द्वे वुत्ता, अग्गिस्मिं मधुरेन चाति॥

(२३) ३. दीघचारिकवग्गो

१. पठमदीघचारिकसुत्तं

२२१. “पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तस्स विहरतो। कतमे पञ्च? अस्सुतं न सुणाति, सुतं न परियोदापेति, सुतेनेकच्चेन अविसारदो होति, गाळ्हं [बाळ्हं (स्या॰)] रोगातङ्कं फुसति, न च मित्तवा होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तस्स विहरतो।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा समवत्थचारे। कतमे पञ्च? अस्सुतं सुणाति, सुतं परियोदापेति, सुतेनेकच्चेन विसारदो होति, न गाळ्हं रोगातङ्कं फुसति, मित्तवा च होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा समवत्थचारे''ति। पठमं।

२. दुतियदीघचारिकसुत्तं

२२२. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तस्स विहरतो। कतमे पञ्च? अनधिगतं नाधिगच्छति, अधिगता परिहायति, अधिगतेनेकच्चेन अविसारदो होति, गाळ्हं रोगातङ्कं फुसति, न च मित्तवा होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तस्स विहरतो।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा समवत्थचारे। कतमे पञ्च? अनधिगतं अधिगच्छति, अधिगता न परिहायति, अधिगतेनेकच्चेन विसारदो होति, न गाळ्हं रोगातङ्कं फुसति, मित्तवा च होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा समवत्थचारे''ति। दुतियं।

३. अतिनिवाससुत्तं

२२३. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अतिनिवासे। कतमे पञ्च? बहुभण्डो होति बहुभण्डसन्निचयो, बहुभेसज्जो होति बहुभेसज्जसन्निचयो, बहुकिच्चो होति बहुकरणीयो ब्यत्तो किंकरणीयेसु, संसट्ठो विहरति गहट्ठपब्बजितेहि अननुलोमिकेन गिहिसंसग्गेन, तम्हा च आवासा पक्कमन्तो सापेक्खो पक्कमति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अतिनिवासे।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा समवत्थवासे। कतमे पञ्च? न बहुभण्डो होति न बहुभण्डसन्निचयो, न बहुभेसज्जो होति न बहुभेसज्जसन्निचयो, न बहुकिच्चो होति न बहुकरणीयो न ब्यत्तो किंकरणीयेसु, असंसट्ठो विहरति गहट्ठपब्बजितेहि अननुलोमिकेन गिहिसंसग्गेन, तम्हा च आवासा पक्कमन्तो अनपेक्खो पक्कमति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा समवत्थवासे''ति। ततियं।

४. मच्छरीसुत्तं

२२४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अतिनिवासे। कतमे पञ्च? आवासमच्छरी होति, कुलमच्छरी होति, लाभमच्छरी होति, वण्णमच्छरी होति, धम्ममच्छरी होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा अतिनिवासे।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा समवत्थवासे। कतमे पञ्च? न आवासमच्छरी होति, न कुलमच्छरी होति, न लाभमच्छरी होति, न वण्णमच्छरी होति, न धम्ममच्छरी होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा समवत्थवासे''ति। चतुत्थं।

५. पठमकुलूपकसुत्तं

२२५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कुलूपके [कुलुपके (स्या० पी०), कुलूपगे (सी०)]। कतमे पञ्च? अनामन्तचारे आपज्जति, रहो निसज्जाय आपज्जति, पटिच्छन्ने आसने आपज्जति, मातुगामस्स उत्तरि छप्पञ्चवाचाहि धम्मं देसेन्तो आपज्जति, कामसङ्कप्पबहुलो विहरति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा कुलूपके''ति। पञ्चमं।

६. दुतियकुलूपकसुत्तं

२२६. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कुलूपकस्स भिक्खुनो अतिवेलं कुलेसु संसट्ठस्स विहरतो। कतमे पञ्च? मातुगामस्स अभिण्हदस्सनं, दस्सने सति संसग्गो, संसग्गे सति विस्सासो, विस्सासे सति ओतारो, ओतिण्णचित्तस्सेतं पाटिकङ्खं – 'अनभिरतो वा ब्रह्मचरियं चरिस्सति अञ्ञतरं वा संकिलिट्ठं आपत्तिं आपज्जिस्सति सिक्खं वा पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सति'। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा कुलूपकस्स भिक्खुनो अतिवेलं कुलेसु संसट्ठस्स विहरतो''ति। छट्ठं।

७. भोगसुत्तं

२२७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा भोगेसु। कतमे पञ्च? अग्गिसाधारणा भोगा, उदकसाधारणा भोगा, राजसाधारणा भोगा, चोरसाधारणा भोगा, अप्पियेहि दायादेहि साधारणा भोगा। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा भोगेसु।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा भोगेसु। कतमे पञ्च? भोगे निस्साय अत्तानं सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति, मातापितरो सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति, पुत्तदारदासकम्मकरपोरिसे सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति, मित्तामच्चे सुखेति पीणेति सम्मा सुखं परिहरति, समणब्राह्मणेसु उद्धग्गिकं दक्खिणं पतिट्ठापेति सोवग्गिकं सुखविपाकं सग्गसंवत्तनिकं। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा भोगेसू''ति। सत्तमं।

८. उस्सूरभत्तसुत्तं

२२८. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा उस्सूरभत्ते कुले। कतमे पञ्च? ये ते अतिथी पाहुना, ते न कालेन पटिपूजेन्ति; या ता बलिपटिग्गाहिका देवता, ता न कालेन पटिपूजेन्ति; ये ते समणब्राह्मणा एकभत्तिका रत्तूपरता विरता विकालभोजना, ते न कालेन पटिपूजेन्ति; दासकम्मकरपोरिसा विमुखा कम्मं करोन्ति; तावतकंयेव असमयेन भुत्तं अनोजवन्तं होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा उस्सूरभत्ते कुले।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा समयभत्ते कुले। कतमे पञ्च? ये ते अतिथी पाहुना, ते कालेन पटिपूजेन्ति; या ता बलिपटिग्गाहिका देवता, ता कालेन पटिपूजेन्ति; ये ते समणब्राह्मणा एकभत्तिका रत्तूपरता विरता विकालभोजना, ते कालेन पटिपूजेन्ति; दासकम्मकरपोरिसा अविमुखा कम्मं करोन्ति; तावतकंयेव समयेन भुत्तं ओजवन्तं होति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा समयभत्ते कुले''ति। अट्ठमं।

९. पठमकण्हसप्पसुत्तं

२२९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कण्हसप्पे। कतमे पञ्च? असुचि, दुग्गन्धो, सभीरु, सप्पटिभयो, मित्तदुब्भी – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा कण्हसप्पे। एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे आदीनवा मातुगामे। कतमे पञ्च? असुचि, दुग्गन्धो, सभीरु, सप्पटिभयो, मित्तदुब्भी – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा मातुगामे''ति। नवमं।

१०. दुतियकण्हसप्पसुत्तं

२३०. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कण्हसप्पे। कतमे पञ्च? कोधनो, उपनाही, घोरविसो, दुज्जिव्हो, मित्तदुब्भी –

इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा कण्हसप्पे।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे आदीनवा मातुगामे। कतमे पञ्च? कोधनो, उपनाही, घोरविसो, दुज्जिव्हो, मित्तदुब्भी। तत्रिदं, भिक्खवे, मातुगामस्स घोरविसता – येभुय्येन, भिक्खवे, मातुगामो तिब्बरागो। तत्रिदं, भिक्खवे, मातुगामस्स दुज्जिव्हता – येभुय्येन, भिक्खवे, मातुगामो पिसुणवाचो। तत्रिदं, भिक्खवे, मातुगामस्स मित्तदुब्भिता – येभुय्येन, भिक्खवे, मातुगामो अतिचारिनी। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा मातुगामे''ति। दसमं।

दीघचारिकवग्गो ततियो।

तस्सुद्दानं –

द्वे दीघचारिका वुत्ता, अतिनिवासमच्छरी।
द्वे च कुलूपका भोगा, भत्तं सप्पापरे दुवेति॥

(२४) ४. आवासिकवग्गो

१. आवासिकसुत्तं

२३१. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु अभावनीयो होति। कतमेहि पञ्चहि? न आकप्पसम्पन्नो होति न वत्तसम्पन्नो; न बहुस्सुतो होति न सुतधरो; न पटिसल्लेखिता [सल्लेखिता (क॰ सी॰)] होति न पटिसल्लानारामो; न कल्याणवाचो होति न कल्याणवाक्करणो; दुप्पञ्ञो होति जळो एळमूगो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु अभावनीयो होति।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु भावनीयो होति। कतमेहि पञ्चहि? आकप्पसम्पन्नो होति वत्तसम्पन्नो; बहुस्सुतो होति सुतधरो; पटिसल्लेखिता होति पटिसल्लानारामो; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो; पञ्ञवा होति अजळो अनेळमूगो। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु भावनीयो होती''ति। पठमं।

२. पियसुत्तं

२३२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च।

''कतमेहि पञ्चहि? सीलवा होति, पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी, समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति सुतधरो सुतसन्निचयो, ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति, तथारूपास्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो पोरिया वाचाय समन्नागतो विस्सट्ठाय अनेलगलाय अत्थस्स विञ्ञापनिया; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं

दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी; आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो चा''ति। दुतियं।

३. सोभनसुत्तं

२३३. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु आवासं सोभेति। कतमेहि पञ्चहि? सीलवा होति...पे०... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति...पे०... दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; कल्याणवाचो होति कल्याणवाक्करणो पोरिया वाचाय समन्नागतो विस्सट्ठाय अनेलगलाय अत्थस्स विञ्ञापनिया; पटिबलो होति उपसङ्कमन्ते धम्मिया कथाय सन्दस्सेतुं समादपेतुं समुत्तेजेतुं सम्पहंसेतुं; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु आवासं सोभेती''ति। ततियं।

४. बहूपकारसुत्तं

२३४. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु आवासस्स बहूपकारो होति। कतमेहि पञ्चहि? सीलवा होति...पे०... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु; बहुस्सुतो होति...पे०... दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा; खण्डफुल्लं पटिसङ्खरोति; महा खो पन भिक्खुसङ्घो अभिक्कन्तो नानावेरज्जका भिक्खू गिहीनं उपसङ्कमित्वा आरोचेति – 'महा खो, आवुसो, भिक्खुसङ्घो अभिक्कन्तो नानावेरज्जका भिक्खू, करोथ पुञ्ञानि, समयो पुञ्ञानि कातु'न्ति; चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु आवासस्स बहूपकारो होती''ति। चतुत्थं।

५. अनुकम्पसुत्तं

२३५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु गिहीनं [गिहिं (स्या०), गिही (कत्थचि)] अनुकम्पति। कतमेहि पञ्चहि? अधिसीले [अधिसीलेसु (स्या०)] समादपेति; धम्मदस्सने निवेसेति; गिलानके उपसङ्कमित्वा सतिं उप्पादेति – 'अरहग्गतं आयस्मन्तो सतिं उपट्ठापेथा'ति; महा खो पन भिक्खुसङ्घो अभिक्कन्तो नानावेरज्जका भिक्खू गिहीनं उपसङ्कमित्वा आरोचेति – 'महा खो, आवुसो, भिक्खुसङ्घो अभिक्कन्तो नानावेरज्जका भिक्खू, करोथ पुञ्ञानि, समयो पुञ्ञानि कातु'न्ति; यं खो पनस्स भोजनं देन्ति लूखं वा पणीतं वा तं अत्तना परिभुञ्जति, सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु गिहीनं अनुकम्पती''ति। पञ्चमं।

६. पठमअवण्णारहसुत्तं

२३६. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति; अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति; अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अप्पसादनीये ठाने पसादं उपदंसेति; अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा पसादनीये ठाने अप्पसादं उपदंसेति; सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो

एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति; अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति; अनुविच्च परियोगाहेत्वा अप्पसादनीये ठाने अप्पसादं उपदंसेति; अनुविच्च परियोगाहेत्वा पसादनीये ठाने पसादं उपदंसेति; सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे’’ति। छट्ठं।

७. दुतियअवण्णारहसुत्तं

२३७. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति; अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति; आवासमच्छरी होति आवासपलिगेधी; कुलमच्छरी होति कुलपलिगेधी; सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति; अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति; न आवासमच्छरी होति न आवासपलिगेधी; न कुलमच्छरी होति न कुलपलिगेधी; सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे’’ति। सत्तमं।

८. ततियअवण्णारहसुत्तं

२३८. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति; अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा वण्णारहस्स अवण्णं भासति; आवासमच्छरी होति; कुलमच्छरी होति; लाभमच्छरी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? अनुविच्च परियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स अवण्णं भासति; अनुविच्च परियोगाहेत्वा वण्णारहस्स वण्णं भासति; न आवासमच्छरी होति; न कुलमच्छरी होति; न लाभमच्छरी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे’’ति। अट्ठमं।

९. पठममच्छरियसुत्तं

२३९. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? आवासमच्छरी होति; कुलमच्छरी होति; लाभमच्छरी होति; वण्णमच्छरी [धम्ममच्छरी (क०)] होति; सद्धादेय्यं विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

“पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न आवासमच्छरी होति; न कुलमच्छरी होति; न लाभमच्छरी होति; न वण्णमच्छरी होति; सद्धादेय्यं न विनिपातेति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे”ति। नवमं।

१०. दुतियमच्छरियसुत्तं

२४०. “पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? आवासमच्छरी होति; कुलमच्छरी होति; लाभमच्छरी होति; वण्णमच्छरी होति; धम्ममच्छरी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

“पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न आवासमच्छरी होति; न कुलमच्छरी होति; न लाभमच्छरी होति; न वण्णमच्छरी होति; न धम्ममच्छरी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे”ति। दसमं।

आवासिकवग्गो चतुत्थो।

तस्सुद्दानं –

आवासिको पियो च सोभनो,
बहूपकारो अनुकम्पको च।
तयो अवण्णारहा चेव,
मच्छरिया दुवेपि चाति [यथाभतं चापि अवण्णगेधा, चतुक्कमच्छेर पञ्चमेन चाति (सी॰ स्या॰) यथाभतं अवण्णञ्च, चतुको मच्छरियेन चाति (क॰)]॥

(२५) ५. दुच्चरितवग्गो

१. पठमदुच्चरितसुत्तं

२४१. “पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दुच्चरिते। कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू गरहन्ति; पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; सम्मूळ्हो कालं करोति; कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दुच्चरिते।

“पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा सुचरिते। कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं न उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू पसंसन्ति; कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; असम्मूळ्हो कालं करोति; कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा सुचरिते”ति। पठमं।

२. पठमकायदुच्चरितसुत्तं

२४२. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कायदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा कायसुचरिते...पे०... । दुतियं ।

३. पठमवचीदुच्चरितसुत्तं

२४३. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा वचीदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा वचीसुचरिते...पे०... । ततियं ।

४. पठममनोदुच्चरितसुत्तं

२४४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा मनोदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा मनोसुचरिते । कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं न उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू पसंसन्ति; कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; असम्मूळ्हो कालं करोति; कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति । इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा मनोसुचरिते''ति । चतुत्थं ।

५. दुतियदुच्चरितसुत्तं

२४५. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दुच्चरिते । कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू गरहन्ति; पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; सद्धम्मा वुट्ठाति; असद्धम्मे पतिट्ठाति । इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा दुच्चरिते ।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, आनिसंसा सुचरिते । कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं न उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू पसंसन्ति; कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; असद्धम्मा वुट्ठाति; सद्धम्मे पतिट्ठाति । इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा सुचरिते''ति । पञ्चमं ।

६. दुतियकायदुच्चरितसुत्तं

२४६. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा कायदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा कायसुचरिते...पे०... । छट्ठं ।

७. दुतियवचीदुच्चरितसुत्तं

२४७. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा वचीदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा वचीसुचरिते...पे०... । सत्तमं ।

८. दुतियमनोदुच्चरितसुत्तं

२४८. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा मनोदुच्चरिते...पे०... आनिसंसा मनोसुचरिते । कतमे पञ्च? अत्तापि अत्तानं न उपवदति; अनुविच्च विञ्ञू पसंसन्ति; कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति; असद्धम्मा वुट्ठाति; सद्धम्मे पतिट्ठाति । इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आनिसंसा मनोसुचरिते''ति । अट्ठमं ।

९. सिवथिकसुत्तं

२४९. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा सिवथिकाय [सीवथिकाय (सी० स्या० कं० पी०)] । कतमे पञ्च? असुचि, दुग्गन्धा, सप्पटिभया, वाळानं अमनुस्सानं आवासो, बहुनो जनस्स आरोदना – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा सिवथिकाय ।

''एवमेवं खो, भिक्खवे, पञ्चिमे आदीनवा सिवथिकूपमे पुग्गले। कतमे पञ्च? इध, भिक्खवे, एकच्चो पुग्गलो असुचिना कायकम्मेन समन्नागतो होति; असुचिना वचीकम्मेन समन्नागतो होति; असुचिना मनोकम्मेन समन्नागतो होति। इदमस्स असुचिताय वदामि। सेय्यथापि सा, भिक्खवे, सिवथिका असुचि; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि।

''तस्स असुचिना कायकम्मेन समन्नागतस्स, असुचिना वचीकम्मेन समन्नागतस्स, असुचिना मनोकम्मेन समन्नागतस्स पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति। इदमस्स दुग्गन्धताय वदामि। सेय्यथापि सा, भिक्खवे, सिवथिका दुग्गन्धा; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि।

''तमेनं असुचिना कायकम्मेन समन्नागतं, असुचिना वचीकम्मेन समन्नागतं, असुचिना मनोकम्मेन समन्नागतं पेसला सब्रह्मचारी आरका परिवज्जन्ति। इदमस्स सप्पटिभयस्मिं वदामि। सेय्यथापि सा, भिक्खवे, सिवथिका सप्पटिभया; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि।

''सो असुचिना कायकम्मेन समन्नागतो, असुचिना वचीकम्मेन समन्नागतो, असुचिना मनोकम्मेन समन्नागतो सभागेहि पुग्गलेहि सद्धिं संवसति। इदमस्स वाळावासस्मिं वदामि। सेय्यथापि सा, भिक्खवे, सिवथिका वाळानं अमनुस्सानं आवासो; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि।

''तमेनं असुचिना कायकम्मेन समन्नागतं, असुचिना वचीकम्मेन समन्नागतं, असुचिना मनोकम्मेन समन्नागतं पेसला सब्रह्मचारी दिस्वा खीयधम्मं [खीयनधम्मं (सी॰)] आपज्जन्ति – 'अहो वत नो दुक्खं ये मयं एवरूपेहि पुग्गलेहि सद्धिं संवसामा'ति! इदमस्स आरोदनाय वदामि। सेय्यथापि सा, भिक्खवे, सिवथिका बहुनो जनस्स आरोदना; तथूपमाहं, भिक्खवे, इमं पुग्गलं वदामि। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा सिवथिकूपमे पुग्गले''ति। नवमं।

१०. पुग्गलप्पसादसुत्तं

२५०. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा पुग्गलप्पसादे। कतमे पञ्च? यस्मिं, भिक्खवे, पुग्गले पुग्गलो अभिप्पसन्नो होति, सो तथारूपं आपत्तिं आपन्नो होति यथारूपाय आपत्तिया सङ्घो उक्खिपति। तस्स एवं होति – 'यो खो म्यायं पुग्गलो पियो मनापो सो सङ्घेन उक्खित्तो'ति। भिक्खूसु अप्पसादबहुलो होति। भिक्खूसु अप्पसादबहुलो समानो अञ्ञे भिक्खू न भजति। अञ्ञे भिक्खू अभजन्तो सद्धम्मं न सुणाति। सद्धम्मं असुणन्तो सद्धम्मा परिहायति। अयं, भिक्खवे, पठमो आदीनवो पुग्गलप्पसादे।

''पुन चपरं, भिक्खवे, यस्मिं पुग्गले पुग्गलो अभिप्पसन्नो होति, सो तथारूपं आपत्तिं आपन्नो होति यथारूपाय आपत्तिया सङ्घो अन्ते निसीदापेति। तस्स एवं होति – 'यो खो म्यायं पुग्गलो पियो मनापो सो सङ्घेन अन्ते निसीदापितो'ति। भिक्खूसु अप्पसादबहुलो होति। भिक्खूसु अप्पसादबहुलो समानो अञ्ञे भिक्खू न भजति। अञ्ञे भिक्खू अभजन्तो सद्धम्मं न सुणाति। सद्धम्मं असुणन्तो सद्धम्मा परिहायति। अयं, भिक्खवे, दुतियो आदीनवो पुग्गलप्पसादे।

''पुन चपरं, भिक्खवे, यस्मिं पुग्गले पुग्गलो अभिप्पसन्नो होति, सो दिसापक्कन्तो होति...पे॰... सो विब्भन्तो होति...पे॰... सो कालङ्कतो होति। तस्स एवं होति – 'यो खो म्यायं पुग्गलो पियो मनापो सो कालङ्कतो'ति। अञ्ञे भिक्खू न भजति। अञ्ञे भिक्खू अभजन्तो सद्धम्मं न सुणाति। सद्धम्मं असुणन्तो सद्धम्मा परिहायति। अयं, भिक्खवे, पञ्चमो आदीनवो पुग्गलप्पसादे। इमे खो, भिक्खवे, पञ्च आदीनवा पुग्गलप्पसादे''ति। दसमं।

दुच्चरितवग्गो पञ्चमो।

तस्सुद्दानं –

दुच्चरितं कायदुच्चरितं, वचीदुच्चरितं मनोदुच्चरितं।
चतूहि परे द्वे सिवथिका, पुग्गलप्पसादेन चाति॥

पञ्चमपण्णासकं समत्तं।

(२६) ६. उपसम्पदावग्गो

१. उपसम्पादेतब्बसुत्तं

२५१. [महाव० ८४] ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्बं। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु असेखेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति; असेखेन समाधिक्खन्धेन समन्नागतो होति; असेखेन पञ्ञाक्खन्धेन समन्नागतो होति; असेखेन विमुत्तिक्खन्धेन समन्नागतो होति; असेखेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतेन भिक्खुना उपसम्पादेतब्ब''न्ति। पठमं।

२. निस्सयसुत्तं

२५२. [महाव० ८४] ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतेन भिक्खुना निस्सयो दातब्बो। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु असेखेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति...पे०... असेखेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति। इमेहि...पे०... निस्सयो दातब्बो''ति। दुतियं।

३. सामणेरसुत्तं

२५३. [महाव० ८४] ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतेन भिक्खुना सामणेरो उपट्ठापेतब्बो। कतमेहि पञ्चहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु असेखेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो होति; असेखेन समाधिक्खन्धेन... असेखेन पञ्ञाक्खन्धेन... असेखेन विमुत्तिक्खन्धेन... असेखेन विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेन समन्नागतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतेन भिक्खुना सामणेरो उपट्ठापेतब्बो''ति। ततियं।

४. पञ्चमच्छरियसुत्तं

२५४. ''पञ्चिमानि, भिक्खवे, मच्छरियानि। कतमानि पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं – इमानि खो, भिक्खवे, पञ्च मच्छरियानि। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं मच्छरियानं एतं पटिकुट्ठं [पतिकिट्ठं (सी० पी०), पटिक्किट्ठं (स्या० कं०), पटिकिट्ठं (क०)], यदिदं धम्ममच्छरिय''न्ति। चतुत्थं।

५. मच्छरियप्पहानसुत्तं

२५५. ''पञ्चन्नं, भिक्खवे, मच्छरियानं पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सति। कतमेसं पञ्चन्नं? आवासमच्छरियस्स पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सति; कुलमच्छरियस्स...पे०... लाभमच्छरियस्स... वण्णमच्छरियस्स... धम्ममच्छरियस्स पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सति। इमेसं खो, भिक्खवे, पञ्चन्नं मच्छरियानं पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सती''ति। पञ्चमं।

६. पठमझानसुत्तं

२५६. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे अप्पहाय अभब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे अप्पहाय अभब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे पहाय भब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे पहाय भब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितु''न्ति। छट्ठं।

७-१३. दुतियझानसुत्तादिसत्तकं

२५७-२६३. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे अप्पहाय अभब्बो दुतियं झानं...पे०... अभब्बो ततियं झानं... अभब्बो चतुत्थं झानं... अभब्बो सोतापत्तिफलं... अभब्बो सकदागामिफलं... अभब्बो अनागामिफलं... अभब्बो अरहत्तं [अरहत्तफलं (सी०)] सच्छिकातुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे अप्पहाय अभब्बो अरहत्तं सच्छिकातुं।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे पहाय भब्बो दुतियं झानं...पे०... भब्बो ततियं झानं... भब्बो चतुत्थं झानं... भब्बो सोतापत्तिफलं... भब्बो सकदागामिफलं... भब्बो अनागामिफलं... भब्बो अरहत्तं सच्छिकातुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे पहाय भब्बो अरहत्तं सच्छिकातु''न्ति। तेरसमं।

१४. अपरपठमझानसुत्तं

२६४. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे अप्पहाय अभब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, अकतञ्ञुतं अकतवेदितं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे अप्पहाय अभब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे पहाय भब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, अकतञ्ञुतं अकतवेदितं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे पहाय भब्बो पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरितु''न्ति। चुद्दसमं।

१५-२१. अपरदुतियझानसुत्तादिसत्तकं

२६५-२७१. ''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे अप्पहाय अभब्बो दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं... चतुत्थं झानं... सोतापत्तिफलं... सकदागामिफलं... अनागामिफलं... अरहत्तं सच्छिकातुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, अकतञ्ञुतं अकतवेदितं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे अप्पहाय अभब्बो अरहत्तं सच्छिकातुं।

''पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मे पहाय भब्बो दुतियं झानं...पे॰... ततियं झानं... चतुत्थं झानं... सोतापत्तिफलं... सकदागामिफलं... अनागामिफलं... अरहत्तं सच्छिकातुं। कतमे पञ्च? आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, अकतञ्ञुतं अकतवेदितं – इमे खो, भिक्खवे, पञ्च धम्मे पहाय भब्बो अरहत्तं सच्छिकातु''न्ति। एकवीसतिमं।

उपसम्पदावग्गो छट्ठो।

१. सम्मुतिपेय्यालं

१. भत्तुद्देसकसुत्तं

२७२. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको न सम्मन्नितब्बो [न सम्मनितब्बो (क॰) चूळव॰ ३२६ पस्सितब्बं]। कतमेहि पञ्चहि? छन्दागतिं गच्छति, दोसागतिं गच्छति, मोहागतिं गच्छति, भयागतिं गच्छति, उद्दिट्ठानुद्दिट्ठं न जानाति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको न सम्मन्नितब्बो।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको सम्मन्नितब्बो। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, उद्दिट्ठानुद्दिट्ठं जानाति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको सम्मन्नितब्बोति।

''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको सम्मतो [सम्मतोपि (सी॰)] न पेसेतब्बो...पे॰... सम्मतो पेसेतब्बो... बालो वेदितब्बो... पण्डितो वेदितब्बो... खतं उपहतं अत्तानं परिहरति... अक्खतं अनुपहतं अत्तानं परिहरति... यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये... यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, उद्दिट्ठानुद्दिट्ठं जानाति – इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भत्तुद्देसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति। पठमं।

२-१४. सेनासनपञ्ञापकसुत्तादितेरसकं

२७३-२८५. ''पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो सेनासनपञ्ञापको न सम्मन्नितब्बो...पे॰... पञ्ञत्तापञ्ञत्तं न जानाति...पे॰... सेनासनपञ्ञापको सम्मन्नितब्बो...पे॰... पञ्ञत्तापञ्ञत्तं जानाति...पे॰...।

सेनासनगाहापको न सम्मन्नितब्बो...पे॰... गहितागहितं [पञ्ञत्तापञ्ञत्तं (सी॰ स्या॰ कं॰)] न जानाति...पे॰... सेनासनगाहापको सम्मन्नितब्बो...पे॰... गहितागहितं [पञ्ञत्तापञ्ञत्तं (सी॰ स्या॰ कं॰)] जानाति...पे॰...।

भण्डागारिको न सम्मन्नितब्बो...पे०... गुत्तागुत्तं न जानाति... भण्डागारिको सम्मन्नितब्बो...पे०... गुत्तागुत्तं जानाति...पे०...।

चीवरपटिग्गाहको न सम्मन्नितब्बो...पे०... गहितागहितं न जानाति... चीवरपटिग्गाहको सम्मन्नितब्बो ...पे०... गहितागहितं जानाति...पे०...।

चीवरभाजको न सम्मन्नितब्बो...पे०... भाजिताभाजितं न जानाति... चीवरभाजको सम्मन्नितब्बो...पे०... भाजिताभाजितं जानाति...पे०...।

यागुभाजको न सम्मन्नितब्बो...पे०... यागुभाजको सम्मन्नितब्बो...पे०...।

फलभाजको न सम्मन्नितब्बो...पे०... फलभाजको सम्मन्नितब्बो...पे०...।

खज्जकभाजको न सम्मन्नितब्बो...पे०... भाजिताभाजितं न जानाति... खज्जकभाजको सम्मन्नितब्बो...पे०... भाजिताभाजितं जानाति...पे०...।

अप्पमत्तकविस्सज्जको न सम्मन्नितब्बो...पे०... विस्सज्जिताविस्सज्जितं न जानाति... अप्पमत्तकविस्सज्जको सम्मन्नितब्बो...पे०... विस्सज्जिताविस्सज्जितं जानाति...।

साटियग्गाहापको न सम्मन्नितब्बो...पे०... गहितागहितं न जानाति ... साटियग्गाहापको सम्मन्नितब्बो...पे०... गहितागहितं जानाति...।

पत्तग्गाहापको न सम्मन्नितब्बो...पे०... गहितागहितं न जानाति... पत्तग्गाहापको सम्मन्नितब्बो...पे०... गहितागहितं जानाति...।

आरामिकपेसको न सम्मन्नितब्बो...पे०... आरामिकपेसको सम्मन्नितब्बो...पे०...।

सामणेरपेसको न सम्मन्नितब्बो...पे०... सामणेरपेसको सम्मन्नितब्बो...पे०...।

सम्मतो न पेसेतब्बो...पे०... सम्मतो पेसेतब्बो...पे०...।

सामणेरपेसको बालो वेदितब्बो...पे०... पण्डितो वेदितब्बो... खतं उपहतं अत्तानं परिहरति... अक्खतं अनुपहतं अत्तानं परिहरति... यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये... यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? न छन्दागतिं गच्छति, न दोसागतिं गच्छति, न मोहागतिं गच्छति, न भयागतिं गच्छति, पेसितापेसितं जानाति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो सामणेरपेसको यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे''ति। चुद्दसमं।

सम्मुतिपेय्यालं निट्ठितं।

२. सिक्खापदपेय्यालं

१. भिक्खुसुत्तं

२८६. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति, अदिन्नादायी होति, अब्रह्मचारी होति, मुसावादी होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरतो होति, अदिन्नादाना पटिविरतो होति, अब्रह्मचरिया पटिविरतो होति, मुसावादा पटिविरतो होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरतो होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु यथाभतं निक्खित्तो एवं सग्गे’’ति। पठमं।

२-७. भिक्खुनीसुत्तादिछक्कं

२८७-२९२. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता भिक्खुनी…पे०… सिक्खमाना… सामणेरो… सामणेरी… उपासको… उपासिका यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपातिनी होति, अदिन्नादायिनी होति, कामेसुमिच्छाचारिनी होति, मुसावादिनी होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायिनी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता उपासिका यथाभतं निक्खित्ता एवं निरये।

‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागता उपासिका यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाता पटिविरता होति, अदिन्नादाना पटिविरता होति, कामेसुमिच्छाचारा पटिविरता होति, मुसावादा पटिविरता होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना पटिविरता होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागता उपासिका यथाभतं निक्खित्ता एवं सग्गे’’ति। सत्तमं।

८. आजीवकसुत्तं

२९३. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो आजीवको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति, अदिन्नादायी होति, अब्रह्मचारी होति, मुसावादी होति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आजीवको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये’’ति। अट्ठमं।

९-१७. निगण्ठसुत्तादिनवकं

२९४-३०२. ‘‘पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो निगण्ठो…पे०… मुण्डसावको… जटिलको… परिब्बाजको… मागण्डिको… तेदण्डिको… आरुद्धको… गोतमको… देवधम्मिको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये। कतमेहि पञ्चहि? पाणातिपाती होति, अदिन्नादायी होति…पे०… सुरामेरयमज्जपमादट्ठायी होति। इमेहि खो, भिक्खवे, पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो देवधम्मिको यथाभतं निक्खित्तो एवं निरये’’ति। सत्तरसमं।

सिक्खापदपेय्यालं निट्ठितं।

३. रागपेय्यालं

३०३. ''रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। कतमे पञ्च? असुभसञ्ञा, मरणसञ्ञा, आदीनवसञ्ञा, आहारे पटिकूलसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा [सब्बत्थपि एवमेव दिस्सति] – रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

३०४. ''रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। कतमे पञ्च? अनिच्चसञ्ञा, अनत्तसञ्ञा, मरणसञ्ञा, आहारे पटिकूलसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा – रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

३०५. ''रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। कतमे पञ्च? अनिच्चसञ्ञा, अनिच्चे दुक्खसञ्ञा, दुक्खे अनत्तसञ्ञा, पहानसञ्ञा, विरागसञ्ञा – रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

३०६. ''रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। कतमे पञ्च? सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं – रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

३०७. ''रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। कतमे पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं – रागस्स, भिक्खवे, अभिञ्ञाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

३०८-११५१. ''रागस्स, भिक्खवे, परिञ्ञाय... परिक्खयाय... पहानाय... खयाय... वयाय... विरागाय... निरोधाय... चागाय... पटिनिस्सग्गाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा। दोसस्स... मोहस्स... कोधस्स... उपनाहस्स... मक्खस्स... पळासस्स... इस्साय... मच्छरियस्स... मायाय... साठेय्यस्स... थम्भस्स... सारम्भस्स... मानस्स... अतिमानस्स ... मदस्स... पमादस्स अभिञ्ञाय... परिञ्ञाय... परिक्खयाय... पहानाय... खयाय... वयाय... विरागाय... निरोधाय... चागाय... पटिनिस्सग्गाय पञ्च धम्मा भावेतब्बा।

''कतमे पञ्च? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं – पमादस्स, भिक्खवे, पटिनिस्सग्गाय इमे पञ्च धम्मा भावेतब्बा''ति।

रागपेय्यालं निट्ठितं।

तस्सुद्दानं –

अभिञ्ञाय परिञ्ञाय परिक्खयाय,
पहानाय खयाय वयेन च।
विरागनिरोधा चागञ्च,
पटिनिस्सग्गो इमे दसाति॥

पञ्चकनिपातो निट्ठितो।

तत्रिदं वग्गुद्दानं –

सेखबलं बलञ्चेव, पञ्चङ्गिकञ्च सुमनं।
मुण्डनीवरणञ्च सञ्ञञ्च, योधाजीवञ्च अट्ठमं।
थेरं ककुधफासुञ्च, अन्धकविन्दद्वादसं।
गिलानराजतिकण्डं, सद्धम्माघातुपासकं।
अरञ्ञब्राह्मणञ्चेव, किमिलक्कोसकं तथा।
दीघाचारावासिकञ्च, दुच्चरितूपसम्पदन्ति॥

पञ्चकनिपातपाळि निट्ठिता।